धर्मतंत्र को विकृतियों से बचाएँ

धर्मतंत्र को विकृतियों से बचाएँ

लेखक :
पं० लीलापत शर्मा

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–३

जनवरी २००१ मूल्य–१०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ प्राक्कथन ॥

परमपूज्य गुरुदेव ने विश्व के सभी प्रमुख धर्म संप्रदायों का गहन अध्ययन, अवलोकन किया। उन्होंने धर्म के प्रगतिशील स्वरूप के अंतर्गत प्रज्ञापुराण भाग–२ में धर्म के पाँच युग्म स्वीकार किए हैं । प्रथम युग्म में आते हैं सत्य और विवेक, द्वितीय में संयम और कर्त्तव्य, तृतीय में अनुशासन और व्रत धारण, चतुर्थ में स्नेह–सौजन्य एवं पराक्रम तथा पंचम में सहकार और परमार्थ को गिना जा सकता है । इन दसों को मानवीय गरिमा के प्रहरी दस दिग्पाल कहा जा सकता है । इन पंच युग्मों की महत्ता बताते हुए गुरुदेव ने कहा है कि इन पाँच धर्म युग्मों को जीवन में उतारना मनीषियों द्वारा परम पुरुषार्थ माना गया है । जो इन्हें पालते हैं, पालने की प्रेरणा देते हैं, साधन जुटाते हैं और वातावरण बनाते हैं वे लोक और परलोक में श्रेय पाते तथा हर दृष्टि से कृतकृत्य होते हैं ।

युगऋषि द्वारा प्रतिपादित धर्म के पाँच युग्म इसी तथ्य को उजागर करते हैं कि दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करना एवं सहयोगी सत्प्रवृत्तियों को विकसित करना ही धर्म है। अंध विश्वासों, कुरीतियों, मूढ़ मान्यताओं, कुपरंपराओं से बचते हुए धर्म के सही स्वरूप को जन समुदाय अपना सकें, ऐसे ही धर्म विवेचन को प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास इस पुस्तक में किया जा रहा है । जिससे जन चेतना को धर्म की महत्ता, आवश्यकता एवं उपयोगिता अनुभव हो सके तथा हर व्यक्ति धर्म का परिष्कृत रूप ''युग धर्म'' अपना सके । पूज्य गुरुदेव के निकट सान्निध्य में रहकर उनसे धर्म संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान समय–समय पर होता रहता था । हमारी जिज्ञासाओं का जो समाधान पूज्यवर ने किया उसे लिपिबद्ध करने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है । इस पुस्तक को अधिकाधिक लोगों को पढ़ा कर आप धर्म के वास्तविक प्रचारक बन सकते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो धारण करने योग्य है—वही धर्म है

गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु ही महेश्वर हैं । वे ही परब्रह्म हैं । सद्गुरु की प्राप्ति से जीवन धन्य हो जाता है । एक तो दुर्लभ मानव योनि में जन्म, दूसरे सद्गुरु का मार्गदर्शन दोनों ही वस्तुएँ जिसे एक साथ मिलें, उसके समान भाग्यशाली कौन होगा ? पूर्व जन्मों के संचित पुण्य तथा पूर्वजों के आशीर्वाद से हमें मानव जीवन तो प्राप्त हुआ ही, साथ ही ऐसे सच्चे मार्गदर्शक मिले जो साक्षात् भगवान के ही अवतार थे । हम भी उनके उस महान स्वरूप को कहाँ समझ पाए । हमारे साथ तो वे मित्र भाव से रहते थे । जो भी मन में आया, उनसे कह दिया । जब कुछ जिज्ञासा हुई, उनसे पूछ बैठे और वे भी समस्या का इस प्रकार समाधान करते थे कि फिर पूछने को कुछ शेष रह ही नहीं जाता था ।

गुरुदेव के पास सभी प्रकार के व्यक्ति आते थे, गरीब, अमीर, मूर्ख, बुद्धिमान, विद्वान, गंवार, पर गुरुदेव सभी के साथ ऐसा प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे कि सभी लोग आँसू पोंछते हुए बाहर निकलते थे । हमारे मन में भी बहुत दिनों से आजकल के धार्मिक क्रियाकलापों को देखकर परमपूज्य गुरुदेव से कुछ जानने की बड़ी उत्सुकता थी । एक दिन अवसर पाकर उनसे यह पूछ ही लिया कि गुरुदेव धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है ? क्या तीर्थयात्रा करने वाले, भागवत सुनने वाले, भगवन्नाम स्मरण करने वाले ही धार्मिक हैं ? गुरुदेव ने कहा—"बेटा ! तुमने हमसे आज बहुत अच्छा प्रश्न किया है। मुझे अपने तीन जन्मों की याद आज तक है । यह मेरा चौथा जन्म है । देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप विवेक सम्मत तथ्यों का पालन करने और समाज में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समायी हुई विकृतियों को दूर करना हमारा प्रत्येक जन्म का उद्देश्य रहा है । इस जन्म में भी हम धर्म के सच्चे स्वरूप को जनमानस में उतारने का प्रयास करेंगे ।

धर्म तो सबका एक ही होता है, चाहे वह हिंदू , मुसलमान, बौद्ध, जैन, ईसाई, पारसी कोई हो । आज जिसे लोग धर्म कहते हैं, वह धर्म नहीं संप्रदाय है । धर्म तो सच्चे अर्थों में एक जीवन जीने की शैली है, जो मानव को मानवता से ओत–प्रोत कर परमसत्ता तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त ही नहीं करती अपितु परमसत्ता तक पहुँचाती भी है ।''

हमने पूज्यवर से कहा–''गुरुदेव ! हमें धर्म के व्यावहारिक स्वरूप के बारे में बताइए, जिससे हम उसे जीवन में उतारकर सच्चे धार्मिक बन सकें ।'' गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! धर्म का अर्थ ही धारण करना है, जो धारण करने योग्य है, वही **धर्म** है । हम कर्त्तव्यपरायण जीवन जीकर गायत्री मंत्र के **वरेण्यं** शब्द को जीवन में उतारकर धार्मिक बन सकते हैं, धर्मशील हो सकते हैं ।

अब प्रश्न यह उठता है कि धारण करने योग्य क्या है ? आज प्रत्येक व्यक्ति को कर्त्तव्यपरायण होना चाहिए । परिवार के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, अपने शरीर के प्रति कर्त्तव्यपरायण जीवन जीना ही श्रेयस्कर है । जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संयमशीलता अपनाएँ और इंद्रियों का सदुपयोग करें, इंद्रियों का दास नहीं अपितु स्वामी बनकर रहें, वे धार्मिक हैं, परंतु जो तिलक धारण करता है, कथा भागवत् का भी श्रवण करता है, परंतु जीवन असंयमित है, उसे धार्मिक नहीं कहा जा सकता है । धर्म जीवन जीने की स्वस्थ कला है । सुव्यवस्थित जीवन के रूप में धर्म पलता है । जप–तप, पूजा–पाठ, कर्मकांड, तीर्थयात्रा, कथा श्रवण करने वालों को ही धर्मात्मा अथवा धर्म परायण मान लेना भारी भूल है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना तो हमने भी की है, परंतु एकांगी नहीं । हमने जिस जीभ से मंत्र जप किया है, उसे पहले ठीक किया है । गाय को जौ खिलाते थे और गोबर से जो जौ निकलते थे, उन्हें साफ करके पीसकर रोटी बनाकर खाते थे । गाय के दूध से बनी छाछ के साथ रोटी खाते थे । २४ वर्ष तक जौ की रोटी और छाछ ही हमारा भोजन रहा है । तब हमारी साधना फली–फूली । मात्र जप से कुछ होने वाला नहीं है । यह एक विज्ञान है । इसमें आत्म परिष्कार और आत्मशोधन की साधना जुड़ी होनी चाहिए । यदि कोई जप भी करता है और बीड़ी, सिगरेट, तंबाखू, गुटखा, गोश्त खाता है, नशेबाजी करता है, शराब पीता है, वह जप कितना भी करे, उससे कुछ भी फल मिलने वाला नहीं है ।

असुरों ने भी तो जप–तप किया था । रावण और भस्मासुर ने कितना तप किया था । परिणाम आप हम सब जानते ही हैं । भस्मासुर का कोई कार्य धर्मानुकूल नहीं था । उसकी नीयत बुरी थी, पार्वती माता को बुरी दृष्टि से देखा और अपनी नीचता और भ्रष्टता के कारण भगवान् शंकर के सिर पर हाथ रख कर भस्म करने को तैयार हो गया । आखिरकार स्वयं के दोष–दुर्गुण ही उसे अपने विनाश की ओर ले गए और स्वयं ही भस्म हो गया ।

तप तो भागीरथ ने भी किया था । उसके दृष्टिकोण और उद्देश्य ऊँचे थे । लोक कल्याण की परम पावन भावनाएँ और उसके लिए कठोर तप का ही यह सत्परिणाम है कि धरित्री पर सुरसरि गंगा माता का आगमन हुआ । यह धरती जिस गंगा के कारण महान् बनी, उस गंगा को भू पर लाने वाले उस महान तपस्वी राजा भागीरथ ने जो कुछ अपनाया, वह धर्माचरण ही था ।

ऋषि वाल्मीकि की तप–साधना के साथ उनकी आंतरिक पवित्रता भी थी । पूर्व के कलुषित जीवन का परित्याग कर उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब श्रेष्ठ जीवन क्रम अपनाया, तब वे महर्षि कहलाए और रामायण जैसे महाकाव्य की रचना पहले ही अपने दिव्य ज्ञान से कर दी । भगवान् राम को जब सीता जी को वनवास भेजना पड़ा तो उन्हीं वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में ही सीता जी को भेजने का निश्चय किया, जहाँ पर सीता माता के गर्भ में पल रहे लव–कुश को सभी देवोपम संस्कार मिले और उन्हीं लव–कुश ने अश्वमेध यज्ञ का दिग्विजयी घोड़ा पकड़ लिया था और भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, हनुमान जैसे परम योद्धाओं को भी युद्ध में परास्त कर दिया था । इतना ही नहीं उन्होंने हनुमान जी को, जो परम शक्तिशाली थे, पेड़ से बाँध दिया था । सीता माता को जब इन बातों का पता लगा, तुरंत दुखी होकर लव–कुश के पास आईं और उन्हें समझाया कि भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण ये सब तुम्हारे चाचा हैं और हनुमान जी तो मेरे मानस पुत्र हैं । इनके ऊपर अस्त्र उठाकर तुमने बड़ी भूल की है, इनसे क्षमा माँगो । लव–कुश अपनी माता को अत्यंत दुखी देखकर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगने लगे । हमारा इस दृष्टांत को बतलाने का तात्पर्य यही है कि जिस वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में लव–कुश का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा पूर्ण हुई, वहाँ उन्हें भगवान् राम के समान ही गुणवान बना दिया गया । यह उस ऋषि की साधना और धार्मिकता को जीवन में उतारने का प्रतिफल था।

जो मुख से अभक्ष्य भोजन नहीं करते, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गाँजा, भाँग का सेवन नहीं करते हैं, मिर्च–मसाले, तले खाद्य नहीं खाते हैं, झूठ नहीं बोलते हैं, सबको ऊँचा उठाने वाले शब्द बोलते हैं, वे धार्मिक हैं, परंतु आज इतना अज्ञान छाया हुआ है कि माला जपने वाले, तीर्थयात्रा करने वाले, कथा भागवत सुनने वाले आचरण से भले ही अच्छे न हों, उनको भी हम धार्मिक कहते है । वाल्मीकि ऋषि के बारे में मानस में कहा गया है–

उलटा नाम जपत जग जाना । वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना ॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परंतु वास्तविकता यह है कि उलटा नाम नहीं जपा था, उसने अपने जीवन क्रम को उलटा कर दिया था । पहले के जीवन की निकृष्टता को हटाकर उत्कृष्ट जीवन क्रम अपना लिया था । आज ऐसे ही धर्माचरण की आवश्यकता है ।

धर्म के लक्षण हमारे जीवन में दिखाई देने चाहिए । मात्र बाह्य स्वरूप बना लेना आडंबर भी हो सकता है, परंतु यदि अंतःकरण धार्मिक प्रवृत्तियों से शरीर, मन और आत्मा ओतप्रोत हो जाएँ, तो धर्म का लाभ और चमत्कार जीवंत दिखाई देगा। धर्मशील बनने की ललक वालों को सबसे पहले बाहर और भीतर की स्वच्छता–पवित्रता के गुण विकसित करने चाहिए।''

धर्म के नाम पर प्रचलित सब चीजें धर्म ही हों यह आवश्यक नहीं है । हो सकता है कि धर्म के नाम पर जो कुछ प्रथा परंपराएँ, पूजा उपासना की पद्धतियाँ, साधनाएँ व सिद्धांत प्रचलित हैं वे धर्म से दूर का भी रिश्ता न रखती हों, पर वे प्रचलन में आ गई हैं, इसलिए धर्म बन गई हैं ।

धर्म में किसी भी चीज को उसकी विशेषता के आधार पर, गुण के आधार पर, उपयोगिता के आधार पर ही स्वीकार किया जाना चाहिए । स्वयं उसकी परीक्षा करके देखनी चाहिए । ठोक बजाकर देखा जाना चाहिए, तब कहीं उसे स्वीकार किया जाना चाहिए । स्व-विवेक की कसौटी पर कसे बिना यह मानकर कि इसे मानव समाज का बहुत बड़ा हिस्सा मानता है, इसे किसी त्यागी तपस्वी ने चलाया है, यह बहुत लंबे काल से प्रचलित है अथवा किसी प्रसिद्ध आदमी ने चलाया है, धर्म की किसी बात को मान लेना अँधेरे में लाठी चलाने जैसा काम है । इसमें न व्यक्ति का हित है और न समाज का ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म बनाम स्वच्छता

हम जहाँ रहते हैं, आस–पास का वातावरण भी साफ सुथरा रखें, यह हमारा कर्त्तव्य है । परम पूज्य गुरुदेव के जीवन से हम इस वृत्ति को सीखें । पूज्यवर ने सावरमती आश्रम जाकर गांधी जी से जो सीखा, अपनाया, उसे आश्रम के व्यावहारिक जीवन में उतारने के लिए नियमित सफाई हेतु श्रमदान का क्रम जोड़ा । जब हम मथुरा आए ही थे, तब युग निर्माण विद्यालय गायत्री तपोभूमि में प्रारंभ ही हुआ था । प्रथम सत्र में कुल १५ विद्यार्थी ही थे । छात्रावास में एक दिन किसी आवारा घूमने वाले कुत्ते ने टट्टी कर दी, बच्चों ने हमें बुलाया और बताया कि यहाँ पर कुत्ता टट्टी कर गया है । सब एक दूसरे के मुँह ताक रहे थे । सब लोग इकट्ठे हो गए थे और हममें से किसी एक ने भी साफ करने का उत्साह नहीं दिखाया । ऐसे समय में ही परम पूज्य गुरुदेव अखंड ज्योति संस्थान (घीयामंडी) से तपोभूमि आ गए । हम सबको एक जगह एकत्रित देखकर वे भी हमारे निकट आ गए । विद्यार्थियों ने गुरुदेव को बताया कि यहाँ पर किसी कुत्ते ने टट्टी कर दी है । गुरुदेव ने तत्क्षण ही वहाँ निकट चल रहे निर्माण कार्य के लिए रखा हुआ फावड़ा उठाया और फावड़े से कुत्ते की टट्टी उठाकर नाले में फेंक दी । सभी विद्यार्थी और हम खड़े देखते रहे । हम सबको बड़ी शर्मिंदगी हुई । गुरुदेव ने हमें आचरण से शिक्षा दी । सच ही तो है जो उपदेश मात्र वाणी से दिया जाता है, उससे अधिक प्रभावी उपदेश वही हो सकता है जो आचरण से दिया जाता है । धर्माचरण करने वालों का यह स्वभाव होना चाहिए कि हम जहाँ रहें, वहाँ स्वच्छता रखें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब हम गायत्री तपोभूमि स्थाई रूप से आ गए थे, साधना शिविर प्रारंभ कर दिए थे, उस समय की एक घटना याद आ रही है । एक साधना सत्र में भिंड के परिजन श्री हृदयस्थ जी आए थे । उनको एक दिन ऐसा तेज ज्वर आया कि उन्हें होश हवास नहीं रहा । कपड़ों में ही पाखाना कर दिया । परम वंदनीया माता जी शिविरार्थियों के हाल चाल, कष्ट, कठिनाइयाँ पूछने नित्य प्रति तपोभूमि आया करती थीं । वंदनीया माता जी ने हृदयस्थ जी के कपड़े स्वयं धोकर साफ किए । जब हम हृदयस्थ जी के कमरे में उन्हें देखने गए तब वे हमें देखकर फूट–फूट कर रोने लगे । हमने कहा–''आपको क्या कष्ट है ?'' हृदयस्थ जी ने कहा– ''पंडित जी, आज वंदनीया माता जी आई थीं, उन्होंने हमारे गंदे कपड़े साफ किए । हमको तो बड़ा पाप लग गया ।'' हमने माता जी से हृदयस्थ जी की बात बताई और कहा–''उन्हें बड़ा दुख भी हो रहा है ।'' माता जी स्वयं हृदयस्थ जी के पास आईं और कहा– ''बेटा ! दुखी क्यों होता है ? मैं तुम्हारी माँ हूँ, बेटे के कपड़े माँ ही तो साफ करती है । इसमें पाप का क्या प्रश्न है ?'' यही वे दिव्य भावनाएँ थीं जिनके कारण यह मिशन विराट् संगठन के रूप में एक संघबद्ध परिवार के रूप में दुनियाँ के लिए आदर्श है ।

धर्म अर्थात् कर्त्तव्य पालन । चाहे वह कर्त्तव्य अपने प्रति, परिवार के प्रति या समाज के प्रति हो। एक बार जब हम परम पूज्य गुरुदेव के साथ देशव्यापी दौरे पर थे, तो एक दिन एक बहिन के घर गए । वहाँ पर उस बहिन ने अपनी गोद के बच्चे को गुरुदेव की गोद में दे दिया । गुरुदेव ने दुलार पूर्वक उसे गोद में ले लिया, तब तक बहन जी चाय आदि की व्यवस्था करने रसोई में चली गईं । इतने में बच्चे ने गुरुदेव के कपड़ों पर पाखाना कर दिया । हमने तुरंत उस बहन जी को बुलाना चाहा, परंतु गुरुदेव ने हमें रोक दिया । गुरुदेव ने उस बच्चे को हमारे पास दे दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और गुरुदेव पास के नल पर अपने कपड़े साफ करने लगे । फिर उन्होंने कहा–''लाओ इस बच्चे की गंदगी को हम साफ कर देते हैं ।'' हमने कहा–''गुरुदेव हम ही इसे साफ कर देंगे ।'' हमने लड़के की टट्टी को साफ किया और अपने हाथों को साबुन से कई बार रगड़–रगड़ कर धोया । इतने में वह बहन जी चाय लेकर आई तो उन्हें मालूम भी नहीं पड़ने दिया कि उस लड़के ने गुरुदेव के कपड़े गंदे कर दिए थे । जब दोपहर में एक भाई के यहाँ भोजन करने पहुँचे तब हम बार–बार अपने हाथों को सूँघ रहे थे । गुरुदेव हमें बार–बार देख रहे थे । खाना खाने के बाद दिन भर का कार्यक्रम पूरा किया और शाम को जब गुरुदेव और हम एक साथ बैठे थे, गुरुदेव ने कहा–तुम हाथों को बार–बार क्यों सूँघ रहे थे ? क्या तुम अपना शौच प्रति दिन साफ नहीं करते हो ? जो व्यक्ति गंदगी को साफ नहीं कर सकता, वह धार्मिक नहीं हो सकता । धर्म शुचिता, पवित्रता का ही नाम है ।

*आज के संसार की अशांति का मूल कारण धर्मिक अनास्था है । एक नई बर्बरता जिसने प्राचीन धर्म और संस्कृति को पदच्युत कर दिया है, के कारण मंगलमय विश्व अमंगल कारी परिस्थितियों से पूरित हो रहा है । लोगों ने **शक्ति के अधिकार में सब कुछ** की पाशविक धारण बना ली है । इसी कारण छल, शोषण, अत्याचार, वर्ग भेद और न जाने कितने दुराचार बढ़ गए हैं । आज की परिस्थितियों में उद्धार का एक ही उपाय है और वह यह है कि धर्म की सच्ची भावना का प्रवर्तन हो । जहाँ शाश्वत की खोज, जहाँ निष्कलुष आनंद की सृष्टि, जहाँ उदात्त जीवन निष्ठा है, वहाँ धर्म मूर्तिमान है । यह धर्म ही मनुष्य को ऊँचा उठाता है और समाज में शांति का सृजन करता है ।*

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म अर्थात् ऊँचा दृष्टिकोण

गुरुदेव कहा करते थे कि दूसरों की अच्छाइयाँ देखा करो, अच्छे कार्यों की प्रशंसा किया करो । बुराइयाँ सुनने और देखने से बुराइयाँ बढ़ती हैं । आज प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के गुणों को देखें तो राग–द्वेष मिट सकता है । जो दूसरों की बहन बेटी को कुदृष्टि से देखता है, वह धार्मिक नहीं हो सकता है । अर्जुन के पास उर्वशी आई और अर्जुन से कहने लगी–मुझे तुम्हारे जैसा पुत्र चाहिए । अर्जुन ने उससे कहा–तुम मेरी माँ हो, मैं तुम्हारा पुत्र । उर्वशी में माँ के दर्शन करने वाला वह अर्जुन महाभारत का विजेता बना । भगवान कृष्ण को सारथी बनकर सहयोग करना पड़ा था । नारी मात्र के प्रति पवित्र दृष्टि रखनी चाहिए । आँखों का संयम अपना कर हम अपनी अंतःशक्ति बढ़ा सकते हैं । ईश्वर ने सृष्टि इतनी खूबसुरत बनाई है । नदी, सरोवर, पर्वत, पेड़–पौधे, फूल, रंगबिरंगे पशु–पक्षी, तितलियाँ, चंद्रमा, सूर्य, आकाश के रूप में प्राकृतिक सौंदर्य ईश्वर ने दिया है । हमें अपने देखने का तरीका बदलना चाहिए । किसी शायर ने लिखा है–**नजरें बदली तो नजारे बदल गए, किश्ती ने रुख बदला तो किनारे बदल गए ।** आज परिष्कृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है । हम ईश्वर के पुत्र बनकर उसके विश्व उद्यान की सेवा करें, अच्छाइयाँ खोंजें और अच्छाइयाँ ही अपनाएँ ।

एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने दुर्योधन और युधिष्ठिर को एक–एक काम सौंपा । दुर्योधन से कहा–तुम इस संसार से एक अच्छा आदमी खोज कर लाओ और युधिष्ठिर से कहा–तुम इस संसार से एक बुरा व्यक्ति खोज कर लाओ । दोनों को एक समय सीमा दे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दी गई । दोनों ही अपने–अपने कार्य से निकल पड़े । समय पर दोनों गुरु द्रोणाचार्य के पास लौट आए । गुरु द्रोण ने दुर्योधन से पूछा–''बेटा ! तुमने हमारा कार्य पूरा किया ?'' दुर्योधन बोला–''गुरुदेव मैंने सारी जगह खोज डाली, संसार में मुझे एक भी अच्छा व्यक्ति नहीं मिला ।'' फिर गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से भी यही पूछा । युधिष्ठिर ने कहा–गुरुदेव ! मुझे इस संसार में एक भी बुरा व्यक्ति दिखाई नहीं दिया । यहाँ यह कहावत चरितार्थ हो रही है ''जैसी दृष्टि–वैसी सृष्टि'' । जैसा हमारा सोचने का, देखने का तरीका होगा, वैसा ही संसार दिखाई देगा ।

एक जंगल में सुनसान एक खाली मकान पड़ा था । वर्षा के समय उसमें तीन व्यक्ति कुछ समय के लिए रुके । तीनों के मन में अलग–अलग विचार आए और तीनों ने अपने कार्य के अनुरूप वह स्थान चुना । उन तीनों में एक चोर था, दूसरा साधक और तीसरा जुआरी । चोर ने सोचा–यहाँ एकांत में चोरी का धन इकट्ठा करता रहूँगा और छुपने के लिए भी यह उपयुक्त स्थान है । साधक ने सोचा कि सांसारिकता से दूर एकांत में साधना के लिए यह बड़ा उपयुक्त स्थान है । जुआरी ने सोचा कि जुआ खेलने के लिए यह अड्डा अच्छा रहेगा । ईश्वर ने सबको मानव जीवन दिया है । कोई इसे सुख–सुविधाओं के अंबार इकट्ठे करने में, तो कोई दूसरों को सता कर धन हड़पने में तो कोई निष्काम भाव से मानव सेवा में व्यतीत करता है । ईश्वर ने बुद्धि सबको दी है । प्रश्न यह उठता है कि कौन किस प्रकार उपयोग करता है ? परम पूज्य गुरुदेव ने इस दुनियाँ को ईश्वर का बगीचा और हम सबको माली बताया है । इस बगीचे को सुंदर, सुरम्य बनाना, हम सबका कर्त्तव्य है । धर्म परायण होने का अर्थ दुनियाँ की अच्छाइयों को अपना लेना और दूसरों को भी अच्छे मार्ग पर चलते रहने के लिए प्रेरित करना है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! धर्म के रास्ते पर सारे लोग चलने लगें तो घरों में स्वर्ग आ सकता है ।'' एक दिन एक लड़की गुरुदेव के पास गायत्री तपोभूमि आई । हम भी उस समय गुरुदेव के पास ही बैठे थे । उस लड़की ने कहा–''गुरुदेव, मैं बहुत परेशान हूँ और मैंने सोचा है कि इस नारकीय जीवन से मर जाना अच्छा है ।'' गुरुदेव ने कहा–''बेटी, तुझको ऐसा क्या कष्ट है, जिससे तू मरने की सोच रही है ?'' लड़की ने कहा–''मेरी सास, ननद, जेठानी, सब सुबह से शाम तक बात–बात में लड़ती रहती हैं । मैं लड़ना नहीं जानती । हमारे पिताजी गायत्री उपासना करते थे । अपने पिता के यहाँ जब तक रही, मैं भी नियमित रूप से गायत्री जप करती थी, अब ससुराल में दैनिक उपासना भी नहीं कर पाती हूँ । शाम को जब पतिदेव आते हैं तो उनसे सास, ननद, जेठानी तीनों मिलकर मेरी शिकायत करती हैं, जिससे पतिदेव भी नाराज होते हैं और कभी–कभी तो मारने को तैयार हो जाते हैं ।'' गुरुदेव ने कहा–''बेटी ! तेरी लड़ाई तो बंद नहीं करा सकता, परंतु तुझे एक जादू बता सकता हूँ । तू सुबह उठकर सास, जेठानी व ननद के चरण स्पर्श कर लिया कर और ससुर, जेठ व पति के भी चरण स्पर्श कर सबके साथ विनम्रता का व्यवहार कर ।'' हमने गुरुदेव से कहा–''गुरुदेव ! चरण स्पर्श से लड़ाई बंद हो जाएगी ।'' गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! धर्म पर चलने से सारी समस्याओं का हल हो सकता है । हमने उस लड़की को धर्म का रास्ता बतला दिया है ।'' वह लड़की घर गई । उसने सुबह उठकर सास के चरण स्पर्श किए । सास मन ही मन उसको आशीर्वाद देने लगी–फलना फूलना सुखी रहना । जेठानी के चरण स्पर्श किए तो वह प्रसन्न हो गई । ननद के चरण स्पर्श किए तो वह भी अच्छा व्यवहार करने लगी । करीब आठ–दस दिन में ही सास उससे प्रेम से बोलने लगी, जेठानी कहती–मैं काम कर लूँगी तुम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चे को देखो । ननद कहती–''भाभी ! तुम्हारे लिए बाजार से क्या–क्या लाऊँ ? साड़ी, चप्पल, बिंदिया इत्यादि । सास, ननद और जेठानी तीनों का व्यवहार बदल गया । तीनों प्रशंसा करने लगी । वह लड़की पंद्रह दिन बाद गुरुदेव के पास आई और कहने लगी–''गुरुदेव ! आपने तो हमको ऐसा जादू बतला दिया कि हमारे घर में स्वर्ग आ गया ।'' गुरुदेव ने कहा–''बेटी ! तेरे घर जो भी बड़ी–बूढ़ी आए, सबके चरण स्पर्श कर लिया कर । लड़की ने घर जाकर ऐसा ही किया । जो भी उसके घर आती, उसे वह लड़की सम्मान देती । सारे गांव में जहाँ भी दो चार बूढ़ी माताएँ बैठी होतीं तो एक ही बात करतीं कि यह बहू क्या है साक्षात देवी है । गुरुदेव ने बताया कि लड़का एक घर में ही प्रशंसनीय हो सकता है और एक घर को ही प्रशंसनीय बनाता है, परंतु लड़की दो घरों को प्रशंसनीय बना सकती है । किसकी लड़की है और किसके लड़के की बहू है ? पिता व ससुर दोनों घरों की प्रशंसा का कारण बन सकती है ।

यमाचार्य ने ऋषि पुत्र नचिकेता ने कहा-ईश्वर को प्राप्त करना सहज नहीं । धन, यौवन, दीर्घ जीवन, राज सिंहासन तथा अनंत काल तक सुखोपभोग करने वाली सामर्थ्य मैं तुम्हें प्रदान कर सकता हूँ । तू ब्रह्म को जानने का हठ न कर ।

नचिकेता ने जबाब दिया-''देव ! बहुत सुखोपभोग करने पर क्या मेरा यह जीवन बना रहेगा ? फिर भोगों से तृप्ति भी तो नहीं होती । इसलिए अपना धन, अपना एश्वर्य, राज सिंहासन और नाच-गान आप अपने पास ही रखें । मुझ पर यदि प्रसन्न हों तो वही उपदेश दें जिससे मेरा कल्याण हो ।''

नचिकेता की दृढ़ता पर यमराज प्रसन्न हुए और उसे ब्रह्म विद्या का ज्ञान कराया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म अर्थात् कर्त्तव्यपरायणता

गुरुदेव ने कहा–''अगर प्रत्येक व्यक्ति हाथों का धर्म (नेकी का कार्य) निभाने लगे तो घरों में सुख–शांति का वातावरण बन सकता है । धर्म कहता है, इंद्रियों को संयमित रखना चाहिए । जो संयमी जीवन नहीं जीता है, इंद्रियों का दुरुपयोग करता है, उसको धार्मिक नहीं कह सकते हैं । धर्म शास्त्रों का शिक्षण है जो व्यक्ति इंद्रियों पर काबू रखता है, वह स्वस्थ रहता है । आज विश्व भर में मानव मात्र को संयमी जीवन जीना सिखाना चाहिए ।''

गुरुदेव ने पैरों का धर्म बताया–''जिस रास्ते पर अवतार चले हैं, महापुरुष चले हैं, उसी रास्ते पर चलना चाहिए । जो भी उनके साथ चले हैं, वे सब सम्माननीय हुए हैं । धर्म शास्त्र उन्हीं के गुणगान से भरे पड़े हैं । सज्जनता की राह चलने वालों की यश गाथाएँ गाई जाती हैं । समय के अनुसार अवतार इस धरती पर आए और समस्याओं को हल करते रहे हैं । आज की समस्या विचारों की है । विचार करने का तरीका निकृष्ट हो गया है । प्रत्येक व्यक्ति इसी कारण से बेहद दुःखी है । आज का युग धर्म विचार क्रांति के लिए कार्य करना है ।'' गुरुदेव ने कहा कि हमारे विचार बहुत पैने हैं । आज की सभी समस्याओं का हल करना है तो हमारे विचारों को घर–घर पहुँचाना होगा । एक घंटा समय और पचास पैसा अंशदान नित्य निकालकर विद्या विस्तार में सहयोग करना चाहिए । आज की समस्याएँ इससे कम में हल नहीं हो सकती हैं ।

जनसंख्या की वृद्धि देश के लिए बहुत बड़ी समस्या बन गई है । आज का धर्म है–कम से कम संतान हो । प्रत्येक धर्माचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को मानव मात्र के अंतःकरण को बदलने के लिए कार्य करना चाहिए । हम धर्माचार्य इस कार्य में लग जाएँ, तब देश के सामने जो जनसंख्या वृद्धि की समस्या है, दूर हो सकती है । जो संयमी जीवन जीता है, वही धार्मिक है । जो पूजा पाठ करता है तीर्थयात्रा, भजन–पूजन, इत्यादि तो करता है, परंतु इंद्रिय संयम नहीं अपनाता और अधिक बच्चे पैदा करता है, वह धार्मिक नहीं हो सकता । गायत्री मंत्र विवेक को जगाता है । सद्बुद्धि देने वाला है । आज आदमी की बुद्धि ठीक हो जाए और संयमी जीवन जिए तो कोई बीमार नहीं पड़ सकता है । हकीम लुकमान ने कहा है कि व्यक्ति अपनी जीभ से अपनी ही कब्र खोदता है । हकीम लुकमान ने तीन सिद्धाँत बताए । पहला हितभुख, दूसरा ऋत्भुख, तीसरा मितभुख । अर्थात् जो शरीर और मन के लिए उपयुक्त हो, वही आहार ग्रहण करना । जिस ऋतु में जो अनुकूल हो वही ग्रहण करना, वही आहार–विहार अपनाना । अल्पाहारी होना । जो ठूँस–ठूँस कर मिर्च मसाले अचार इत्यादि के स्वाद के सहारे अधिक भोजन करते हैं । वह ठीक से न तो पच पाता है न ही शरीर का अंग बन पाता है, अतः अल्पाहार स्वास्थ्य के लिए उत्तम है । महात्मा गांधी जब तिबिया कालेज दिल्ली के उद्घाटन के समय पहुँचे, तब यही बातें अपने उद्बोधन में रखीं । गाँधी जी ने कहा था–पशु पक्षी बीमार नहीं होते, उनके लिए कहीं दवाखाना नहीं है । जो पशु पक्षी मानव के संपर्क में रहता है और अप्राकृतिक भोजन करता है, वही बीमार पड़ता है । गाँधी जी ने कहा–जब तक मानव मात्र संयमी जीवन नहीं जिएगा तब तक बीमारियों का इलाज नहीं हो सकता है । चाहे करोड़ों दवाखाने खोले जाएँ । गुरुदेव ने कहा–धर्म कहता है कि अगर आदमी को स्वस्थ रहना है तो संयमी जीवन जीना पड़ेगा । जब तब मानव मात्र की बुद्धि ठीक नहीं होती तब तक संयमी जीवन नहीं जिएगा । गायत्री मंत्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव मात्र के लिए है, इंद्रियों का स्वामी बनना चाहिए और उन पर नियंत्रण रखना चाहिए । आज का आदमी इंद्रियों का दास बना हुआ है । हमने गुरुदेव से कहा–''गुरुदेव आपने जो शरीर के प्रति धर्म की व्याख्या बताई, वह समझ में आ गई ।'' आज हम ९० वर्ष में चल रहे हैं और स्वस्थ हैं । १८ घंटे काम करते हैं । आज प्रत्येक व्यक्ति शरीर के धर्म को समझ ले तो कभी अस्वस्थ नहीं हो सकता है और शतायु जीवन जी सकता है ।

गुरुदेव ने कहा–''परिवार के प्रति भी हमारे कर्त्तव्य हैं, उनका पालन करना भी हमारा धर्म है । संतान को संस्कारवान बनाना हमारा कर्त्तव्य है । राजा दशरथ ने चार बच्चे पैदा किए थे । चारों बच्चों को संस्कारवान बनाया । आज घर–घर में संस्कार परंपरा को जागृत करने की आवश्यकता है । एक कुंड का यज्ञ तथा संस्कार की सामग्री साथ में तैयार रख कर टोलियाँ बनाकर मोहल्ले–मोहल्ले में जाना चाहिए, बच्चों के नाम नोट करना चाहिए और उनके संस्कार यज्ञीय वातावरण में प्रेरणाप्रद बनाकर संपन्न कराना चाहिए । पुंसवन संस्कार में गर्भवती के क्या कर्त्तव्य हैं ? कैसे रहना चाहिए, क्या खाना चाहिए ? यह बताएँ तथा पति के सास के और पड़ौसियों के गर्भवती के प्रति क्या कर्त्तव्य हैं, यह बताएँ । सभी संस्कारों को संपन्न कराते समय कर्मकांड की व्याख्या करना चाहिए । एक–एक बुराई छोड़ने और एक–एक अच्छाई ग्रहण करने का व्रत दिलाएँ । आरती में जो पैसे आएँ उनसे छोटी–छोटी पुस्तकें खरीद कर ज्ञान मंदिर खुलवाएँ । उस परिवार वालों को पत्रिका के सदस्य बना दें । संस्कारों द्वारा जन–जन का हृदय परिवर्तन करें । धर्म ही अंतःकरण को बदल सकता है । रामायण हमारा धार्मिक ग्रंथ है । सभी घरों में रामायण का पाठ होता है । रामायण का आदर्श परिवार में आ जाए तो भाई–भाई में प्रेम, माता–पिता के प्रति श्रद्धा की भावना प्रबल हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती है । राम को वनवास कैकेई माता ने दिलवाया और भरत को राजगद्दी । तब भगवान राम कौशल्या माता के पास गए और कहा कि कर्त्तव्य पालन करना ही धर्म है, छोटा भाई राज गद्दी पर बैठेगा, हम राक्षसों से लड़ेंगे । सुबह राज तिलक होने वाला था । राम ने कहा–माता पिता की आज्ञा पालन करना हमारा धर्म है । जब भगवान राम वनवास को जाने लगे तब लक्ष्मण ने कहा–जब बड़ा भाई वनवास को जा रहा है तब छोटे भाई का कर्त्तव्य है, उनका साथ देना चाहिए । लक्ष्मण को वनवास नहीं हुआ था, परंतु अपना कर्त्तव्य समझ कर वनवास जाने लगे । रामायण यह शिक्षा देती है कि पत्नी का पति के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? जब राम लक्ष्मण वनवास को जा रहे थे तब सीता ने कहा–जब पति पर मुसीबत आती है तो पत्नी को साथ देना चाहिए । भगवान राम ने सीता से कहा कि पहले माता जी से आज्ञा माँग कर आओ । वे आज्ञा दें तब मेरे साथ चलना । कौशल्या माता के पास सीता जी जातीं हैं और कहती हैं कि माँ हमारे पति को वनवास हुआ है । मेरा कर्त्तव्य है कि मुझे पति का साथ देना चाहिए । मुझे आज्ञा दो कि पति के साथ वनवास को जाऊँ । जब कौशल्या माता ने सुना तब उसने कहा कि बेटी ! तुझको वनवास नहीं हुआ है । तू राजा की बेटी है, राजा के घर शादी होकर आई है । वनवास में तुझे भारी कष्ट उठाना पड़ेगा । सीता माता ने कहा–मुझे कष्ट की परवाह नहीं । भगवान राम जैसा पति और लक्ष्मण जैसा देवर है तब मुझे जंगली जानवरों और राक्षसों का डर नहीं । जब सीता कौशल्या माता से जाने के लिए जिद करने लगीं, तब कौशल्या माता ने कहा कि बेटी ! तेरा जाने का ही मन है तो तू चली जा । ऐसा कह कर रोने लगीं । सीता माता ने कौशल्या माता से कहा–माँ ! तुम रोती क्यों हो ? माता बोली–मैंने तुझे आखों की पलकों पर रखा है । पहले सास बहुओं को बेटी से भी अधिक प्यार देती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थीं । उसके भोजन आदि का पूरा ध्यान रखती थी । बेटी ! मैंने तुझे बड़े प्यार से रखा है । तू जंगल में जाकर कितने कष्टों का सामना करेगी । ऐसा कहकर रोने लगी । कौशल्या माता ने आज्ञा दे दी तब सीता माता रोने लगी । कौशल्या माता ने कहा कि बेटी ! अगर तुझे डर लगता है तो मत जा । सीता माता ने कहा–मुझे राक्षसों का डर नहीं है । कौशल्या माता ने कहा–तू रोती क्यों है ? सीता माता ने कहा–जब शादी होकर आई थी, मेरी इच्छा थी कि मैं सास की सेवा करूँगी क्योंकि राम जैसा पति जिस सास के कारण मिला है, जिसने उसे संस्कारवान बनाया, उसे भोजन बनाकर खिलाया करूँगी, सुबह उठकर उसके चरण छुआ करूँगी, सोते समय चरण दबाया करूँगी, परंतु माँ ! जब सास की सेवा करने का समय आया तो मैं पति के साथ वनवास को जा रही हूँ । इसका मुझे बड़ा दुःख है । ऐसा कहकर फूट–फूट कर रोने लगी । कैसा प्रेम था सास बहू का । सास कहती तू मेरी बेटी और बहू कहती तू मेरी माँ । रामायण शिक्षण देती है सास बहू का माँ बेटी जैसा प्रेम होना चाहिए । धर्म बतलाता है कि सास बहू का प्रेम होना चाहिए ।

उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी थी । लक्ष्मण ने उससे कहा–सीता माता चल रही हैं, तेरा मन भी चलने का है क्या ? उर्मिला ने कहा–नहीं, आपका धर्म था कि भाई पर मुसीबत पड़े तो भाई का साथ देना चाहिए और सीता माता का कर्त्तव्य था कि पति पर मुसीबत पड़े तो पत्नी को साथ देना चाहिए । मेरा कर्त्तव्य है–मेरे बूढ़े सास–ससुर हैं, उनकी सेवा करूँ । भोजन बनाकर खिलाऊँ । मुझे उनकी आज्ञा का पालन करना है । गुरुदेव ने कहा–''धर्म कर्त्तव्यपरायणता को कहते हैं ।'' आज समाज का दुर्भाग्य है कि जो भजन कीर्तन करता है, कथा–भागवत सुनता है, तीर्थयात्रा करता है, उसको धार्मिक कहते हैं । भरत जब वापस अयोध्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आए तब कैकेयी माता ने उससे कहा–बेटा ! मैंने राम को १४ वर्ष का वनवास और तुझे राजगद्दी का वचन ले लिया है । राम वनवास चले गए, तू राजगद्दी पर बैठकर राज्य कर । माता की बातें सुनकर भरत ने माँ से कहा–तूने किस जबान से ये वरदान माँगे थे ? तब तेरी जीभ क्यों नहीं जल गई ? भरत जहाँ भगवान राम थे वन में गए और उनसे वापस चलने को कहा । राम ने भरत से कहा–तू हमारी खड़ाऊँ ले जा । भरत खड़ाऊँ लेकर आए और राजगद्दी पर खड़ाऊँ को रखकर १४ वर्ष तक बनवासी की वेशभूषा में रहे । तपस्वी जीवन जिया । भरत ने अपने धर्म का पालन किया । भाई–भाई का कितना प्रेम था । रामायण में जो शिक्षण मिलता है, उसको जीवन में धारण करना ही धर्म है । गायत्री मंत्र शिक्षण देता है कि धर्म शास्त्रों में जो सुना है उसको जीवन में धारण करने से ही धर्म का लाभ मिलता है । आज रामायण पाठ करने की वस्तु रह गई है । रामायण के शिक्षण को जीवन में धारण करने का नाम धर्म है ।

गुरुदेव ने हमें एक किस्सा सुनाया –एक व्यक्ति परिवार की जिम्मेदारियों कर्त्तव्यों को छोड़कर साधू हो गया और हिमालय में जाकर तपस्या करने लगा । काफी समय बाद वह लौट कर आया तो एक दिन पेड़ के नीचे बैठा था, उसके ऊपर एक पक्षी ने बीट कर दी । साधु ने क्रोध से जब चिड़िया को देखा तो चिड़िया जलकर भस्म हो गई । साधु ने समझा हमारी तपस्या सफल हो गई है । उसे अहंकार आ गया । वह साधु एक गाँव में गया । उसको भूख लगी थी । उसने सोचा किसी गृहस्थ से भोजन माँग कर भूख मिटाएँ । वह एक गृहस्थ के दरवाजे पर गया । दरवाजा बंद था, दरवाजे में एक बड़ा छेद था, उसमें से साधु ने आवाज लगाई, माँ हमको भूख लगी है, भिक्षा दो । भीतर से एक स्त्री की आवाज आई–महात्मा जी, थोड़ी देर ठहरो, मेरा राम भजन अभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाकी है, उसको करने के बाद आपको भिक्षा दूँगी । यह कहकर अपने काम में लग गई । बच्चे पढ़ने को जाने वाले थे उनको नास्ता बनाकर खिलाया, दोपहर का भोजन बनाकर दिया । महात्मा ने फिर आवाज लगाई–माता हमको काफी देर हो गई है भिक्षा दो। स्त्री ने भीतर से आवाज लगाई अभी मेरा भजन बाकी है, उसको पूरा करने के बाद आपको भिक्षा दूँगी । फिर पति को भोजन बनाकर खिलाया उसको आफिस जाना था । साधु दरवाजे से देख रहा था कि कैसी स्त्री है ? घर का काम कर रही है और हमसे कह रही है, भजन कर रही हूँ । फिर आवाज लगाई–माँ हमको काफी देर हो गई है । स्त्री बोली–बाबा थोड़ी देर और ठहरो मेरा भजन और बाकी है उसको पूरा कर लूँ । फिर बूढ़ी सास थी उसको गरम पानी करके स्नान कराया, भोजन कराया। साधु देख रहा था और उसको उस स्त्री पर बड़ा गुस्सा आ रहा था । परिवार के सब कर्त्तव्यों को पूरा करके वह स्त्री साधु को भिक्षा लेकर आई और कहा–बाबा भिक्षा लो । साधु ने आँखें लाल कर लीं, बड़ा क्रोध था । स्त्री ने उसकी लाल आखें और उसका गुस्सा देखकर कहा–महात्मा जी, मैं वह चिड़िया नहीं हूँ जो देखने से जल जाऊँ । महात्मा उसकी बात सुनकर बड़े आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि जब चिड़िया जली थी तब मैं अकेला था । उस समय कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं था । हमारा क्रोध और चिड़िया का जलना, यह सब इस स्त्री को कैसे पता लगा ? साधु ने पूछा–बहन, आपको यह बात कैसे पता चली ? स्त्री बोली–मैं भजन करती हूँ, तपस्या करती हूँ, मुझे सब मालूम पड़ जाता है । महात्मा बोला–तुमको यह किसने बताया कि घर के कार्य करना भजन है । हम तो १४ वर्ष तक हिमालय पर परिवार छोड़कर गए, तपस्या की, तब हमारी तपस्या सफल हुई । उस स्त्री ने गुरु के गाँव का नाम लेकर कहा–मेरे गुरु हैं, तुलाधार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेठ । उन्होंने हमको कर्त्तव्य करना ही धर्म बतलाया है ।

उस स्त्री की बातें सुनकर महात्मा तुलाधार नामक सेठ के पास गया । वह दुकान पर काम कर रहा था । जैसे ही तुलाधार के पास पहुँचा, साधु को देखकर कहा–आपको उस स्त्री ने भेजा है जिसने आपसे कहा था कि मैं वह चिड़िया नहीं हूँ जो देखने से ही भस्म हो जाऊँ । मैं अपना भजन कर लूँ तब आप से बात करूँगा । इतना कहकर अपनी दुकानदारी में लग गया । छोटा बच्चा भी आता दुकान पर तो ईमानदारी से माल देता । किसी प्रकार भी किसी भी चीज में मिलावट नहीं करता था । साधु ने कहा--हमारी बात सुनो तो तुलाधार ने कहा–अभी मेरा थोड़ा भजन बाकी है । साधु आश्चर्य में पड़ गया । उस स्त्री की बताई बात इस तुलाधार को कैसे मालूम पड़ गई ? महात्मा खड़ा रहा और देखता रहा । वह दुकानदारी कर रहा है और मुझसे कहता है कि भजन कर रहा हूँ । मैंने परिवार छोड़ा, कर्त्तव्य छोड़ा, हिमालय पर तपस्या की तब मुझे सिद्धि मिली । यह दुकानदारी करता है और दुहाई दे रहा है कि भजन कर रहा हूँ । जब दुकान के सब ग्राहकों को सामान दे दिया तो तुलाधार वैश्य ने साधु से कहा–बताओ आपकी क्या समस्या है ? साधु ने कहा–हमको उस स्त्री ने बताया था कि हमारा गुरु तुलाधार है । उसने हमको बतलाया है कि अपने कर्त्तव्य को ईमानदारी से पूरा करना ही असली भजन और तप है और उससे हमको तीनों कालों का ज्ञान रहता है । आप बतलाएँ यह कौन सा भजन है ।

तुलाधार ने कहा–हमारा गुरु कालूराम है । उसने हमको बतलाया है कि तुम ईमानदारी से दुकानदारी करो, मिलावट किसी चीज में मत करो और छोटा सा बच्चा आए, उसको भी सही तोलकर सही माल दो । मैं इसी भजन को करता हूँ । इससे मुझे सिद्धि मिल गई है । आप कालूराम के पास जाएँ वह हमारा गुरु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है । साधु ने सोचा–हमको कालूराम के पास चलकर पूछना है कि वह कौन सा भजन है । सारे धर्माचार्य कहते हैं कि एकांत में घर–परिवार छोड़कर भजन होता है । इनका कहना है कि घर परिवार में अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने से ही उपासना, साधना पूरी होती है । साधु कालूराम के पास चल दिया । कालूराम हरिजन था । सफाई का कार्य करता था । कालूराम ने साधु से कहा–आपको तुलाधार वैश्य ने हमारे पास भेजा है ! साधु ने कहा–हाँ हमको तुलाधार ने ही भेजा है । उन्हीं ने हमें बताया कि कर्त्तव्य ही धर्म है जो कर्त्तव्यों का पालन करता है उसको ही तीनों कालों का ज्ञान होता है, ऋद्धि–सिद्धि मिलती है । साधु को आश्चर्य हुआ कि कालू राम को कैसे पता चल गया कि मुझको तुलाधार वैश्य ने भेजा है । कालूराम ने साधु से कहा–अभी मेरा थोड़ा भजन बाकी है । चलो हमारे साथ चलो, भजन को पूरा करने के बाद आपसे बातें करूँगा । साधु कालूराम के साथ गया । घर पर बूढ़ी माँ थी, उसको स्नान कराया । कपड़े बदले, भोजन कराया, उसके बाद साधु से कहा–बताओ क्या बात है ?

साधु ने कालूराम से कहा–सभी धर्म वाले कहते हैं–घर परिवार छोड़कर एकांत में भजन करना चाहिए । हमने १४ वर्ष तक हिमालय पर तपस्या की तब सिद्धि मिली, आप घर का कार्य करते हैं, त्रिकालज्ञ हैं, इसका क्या रहस्य है ? कालूराम ने कहा–परिवार के कर्त्तव्य को छोड़कर एकांत में भजन करना चाहिए जो ऐसा सोचता है, वह अज्ञानी हैं । हमारे अवतार चौबीस हुए हैं, परंतु दो अवतार हमारे मुख्य हैं–एक राम दूसरे कृष्ण । दोनों ने ही गृहस्थ आश्रम का पालन करने और कर्त्तव्य पालन करने का संदेश दिया । सबने गृहस्थ में रहकर अपने–अपने कर्त्तव्यों का पालन किया है और भजन का पूरा लाभ लिया है । आज हमारे ८० लाख बाबा हैं । जो घर बार छोड़कर अपने कर्त्तव्यों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोड़कर रात दिन भजन करते हैं और सब खाली हाथ हैं । महात्मा जी अपने कर्त्तव्य को छोड़कर रात दिन भजन करते हैं । परिवार के प्रति कर्त्तव्यों को पूरा नहीं करते, ऐसा महात्मा बनना व्यर्थ है । पहले गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए, वे ही धर्मात्मा हैं, महात्मा हैं । महात्मा की आँखें खुल गईं और वह वापस घर गया, अपने परिवार की जिम्मेदारी थी, उसको पूरा करने में लग गया । बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था की । महात्मा को कर्त्तव्यों को छोड़कर हिमालय जाने से हमेशा अशांति रहती थी, कर्त्तव्य को पूरा करने लगा तो उसकी आत्मा को शांति मिली और शरीर को सुख मिला । फिर गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! हमने भी इसी कारण गृहस्थ को अपनाया है । हम सूर्योदय के पहले उपासना, साधना को पूरा करते हैं और फिर दिनभर परिवार और समाज की सेवा करते हैं । सेवा करना ही धर्म है । धर्म के नाम पर जो भ्रांति फैली है उसको दूर कराने के लिए ही हमारा चौथा जन्म हुआ । परिवार को संस्कारवान बनाना ही धर्म है ।'' अपने आपको सही करना ही धर्म है । गुरुदेव ने हमको किस्सा सुनाया । उससे हमारी आँखें खुलीं, अज्ञान दूर हो गया ।

गुरुदेव ने हमको दूसरा किस्सा सुनाया । दो माली थे । राजा ने दोनों को अलग–अलग बगीचे दिए और कहा–बगीचे को हरा भरा रखना । एक माली सुबह से शाम बगीचा में गुड़ाई लगाता, खाद पानी देता, बगीचे के प्रत्येक पेड़ की देख भाल करता । सूर्योदय के पहले राम नाम भी ले लेता, पर दिनभर कर्त्तव्य पूरा करता । वह अपने कर्त्तव्य को जो राजा ने दिया था, पूरा करता था ।

दूसरा माली दिन भर राजा का फोटो लगाकर पूजा करता, तिलक लगाता, भोग लगाता । माला लेकर राजा साहब का जप करता । दिन भर फोटो की पूजा और जप में समय व्यतीत करता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था । जो राजा साहब ने दायित्व सौंपे थे, उनकी तरफ उसका ध्यान ही नहीं था । बगीचा सूख गया । पहले माली का बगीचा हरा–भरा था । काफी समय के बाद राजा आए, बगीचा देखा । जिस माली ने बगीचा को हरा–भरा रखा उसे पारितोषिक दिया और जिसने बगीचे को सुखा दिया उस माली से पूछा गया तो उसने कहा–महाराज हम तो आपकी फोटो की पूजा करते हैं, आपके नाम का जप करते हैं । राजा ने कहा–आपने अपने कर्त्तव्य को पूरा नहीं किया है । आपको जेल भेजा जा रहा है । आप नहीं जानते कर्त्तव्य ही धर्म है । आपको सख्त कैद की सजा दी जाती है ।

राजा साहब उस माली को जिस पर प्रसन्न हुए थे और बड़ी जिम्मेदारियाँ देकर पदोन्नत किया । गुरुदेव ने कहा–''आज व्यक्ति रात दिन भजन करता है । भगवान का फोटो लगाकर रखा है । उस पर तिलक लगाता है और भगवान के नाम का जप करता है और भगवान ने जो कर्त्तव्य दिए हैं, उसका पालन नहीं करता है इसलिए उसकी धार्मिकता अधूरी है । धर्म के नाम पर ढोंग फैला हुआ है कि जो पूजा करता, तिलक लगाता, कथा सुनता है और श्रेष्ठ आचरण नहीं करता है तो भी उसको धार्मिक कहते हैं और जो कर्त्तव्यों को पूरा करता है उसको धार्मिक कहते ही नहीं है । बेटा ! इस अज्ञान को दूर करना है । बच्चों को संस्कारवान बनाना और बुराई छुड़वाना धर्म है । ज्ञान यज्ञ का प्रचार करना ही धर्म है । हमको सच्चे धर्म को लाना है, इसीलिए हमारा जन्म हुआ है । हमारे शिष्य हमारे नाम का जप करते हैं, हमारी फोटो पर तिलक करते हैं, माला पहनाते हैं । हम भी उनके फोटो पर माला पहना देंगे, उनके नाम का जप कर देंगे । जो कर्त्तव्यों को पूरा करते हैं, उसका भगवान एवं हम भी काम करेंगे । आज प्रत्येक व्यक्ति में अज्ञान फैला है, कि बिना शुद्ध जीवन जिए मात्र जप करने से,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भजन–पूजन गंगा स्नान करने से आदमी स्वर्ग को जाता है । यह भ्रम फैला है, इसको दूर करना है । जो शुद्ध पवित्र जीवन जीता है, दोष दुर्गुण छोड़ता है, ज्ञान मंदिर घर–घर स्थापित करता है, वही व्यक्ति धार्मिक है । जो केवल भजन करता है, उसी को धर्म समझता है, वह धर्म को जानता ही नहीं है । आज संस्कारवान बच्चे हो जाएँ तो देश की बहुत बड़ी समस्या का हल हो सकता है । हमने संस्कारों का आंदोलन इसीलिए छेड़ा है । जब तक घर–घर संस्कार नहीं होंगे, तब तक देश के सामने बच्चों की समस्या रहेगी । दोष बच्चों का नहीं, परिवार वालों का है । हम बच्चा पैदा करते हैं, बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए ध्यान नहीं देते हैं । दिन निकलने से पहले भजन करें और दिन में बच्चों को संस्कारवान बनाने में समय लगाएँ । यही आज का धर्म है ।'' हमने कहा–गुरुदेव, आपने हमारी आँखें खोल दी । हमको धर्म के विषय में ज्ञान हो गया है । हमको आप जैसा गुरु मिला, हम धन्य हैं ।

गुरुदेव ने हमको फिर हिमालय के साधु का किस्सा सुनाया । गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! हम हिमालय पर गए, वहाँ पर दो साधु घरवार छोड़कर हिमालय पर नग्न मौन रहकर तपस्या कर रहे थे । गर्मी के दिनों में कंद मूल जमीन पर बो देते थे । सालभर उसी को खाते थे । उसी स्थान पर हम ठहरे थे जहाँ पर साधु रहते थे । गर्मी में जमीन साफ हो जाती है, बर्फ पिघल जाती है । साधु आमने–सामने की गुफा में रहते थे । एक साधु ने दूसरे साधु की थोड़ी सी जमीन साफ कर दी और आलू बोने लगा। दूसरे साधु ने जिसकी जमीन पर थोड़ा सा कब्जा किया था पहले साधु की तरफ इशारा किया और इशारे से ही कहा–हमारी जमीन पर तुम कब्जा मत करो । एक दिन दोनों इशारे करते–करते आपस में धक्का मुक्की कर झगड़ने लगे । दोनों की आँखें लाल हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गईं, मार पीट हुई । एक साधु ने दूसरे की दाढ़ी उखाड़ ली । हमने जब दोनों साधुओं का यह झगड़ा देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि दोनों घरवार छोड़कर हिमालय पर २४ घंटे भजन करते हैं, मौन हैं, फिर भी क्रोध कितना है । थोड़ी सी जमीन पर झगड़ा कर लिया है । इनको भजन का लाभ नहीं हुआ । कर्त्तव्य छोड़ दिया है, परंतु वासना, तृष्णा, क्रोध, स्वार्थपरता इनके भीतर मौजूद है, इन्होंने अपने आपको ठीक नहीं किया है । जिम्मेदारी छोड़कर कायरता धारण कर ली है । इन्होंने कर्त्तव्य को नहीं समझा है । जो कर्त्तव्य को छोड़कर भजन करता है, उसका भजन निष्फल हो जाता है ।

एक ब्राह्मण सिद्धि प्राप्त करने के लिए गंगा तट पर चला गया । घर का काम छोड़कर भिक्षा माँग कर दिन काटने लगा । उधर से एक दूरदर्शी ऋषि गुजरे और ब्राह्मण के क्रिया कलाप को देखकर दुःखी हो कर उसे समझाने का उपाय सोचने लगे । उन्होंने एक–एक मुट्ठी बालू नदी में डालना आरंभ कर दिया । ब्राह्मण यह तमाशा देख रहा था और फिर पास आकर बोला–आप यह क्या कर रहे हैं । ऋषि ने कहा–नदी पार करने के लिए पुल बना रहा हूँ । ब्राह्मण ने हँस कर कहा–पुल ऐसे ही कैसे बन सकता है ? इसके लिए साधन, धन, परिश्रम और बुद्धि चाहिए । संत ने कहा– हे ब्राह्मण देवता, आप भी तो केवल भजन के सहारे सिद्धि पाना चाहते हैं । इसके लिए आपको आत्मशोधन और लोक सेवा का व्रत अपनाना पड़ेगा । ब्राह्मण की समझ में बात आ गई और उसने उपासना के साथ–साथ साधना और आराधना को भी अपनाया । बेटा ! ये छोटी–छोटी कथाएँ धर्म के वास्तविक रूप को समझाती हैं ।

केवल भजन से लाभ नहीं निकलता । इससे अच्छा था कि परिवार को संस्कारवान् बनाते और समाज की सेवा करते ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म के नाम पर जो झगड़े ढोंग फैले हैं, उन्हें मिटाते । आज प्रत्येक आदमी के मस्तिष्क में बात बैठी हुई है कि जो भजन करता है, तीर्थ यात्रा करता है, वही धार्मिक है, पर सच तो यह है जो भजन, तीर्थयात्रा आदि से प्रेरणा लेकर आत्मकल्याण एवं लोक कल्याण की जिम्मेदारियों को पूरा करता है, वह धार्मिक है । हमने इसीलिए जन्म लिया है कि धर्म में जो विकृति आई है, उसे ठीक करना है । बेटा ! हमने तुझे शरीर के प्रति धर्म बताया, परिवार के प्रति बताया, इसी धर्म का प्रचार करना ।''

हमने कहा–''गुरुदेव आपने हमारी आँखें खोल दीं, अज्ञान दूर कर दिया । आज हम ९० वर्ष में भी स्वस्थ हैं । परिवार के प्रति हमारे ऊपर बज्रपात पड़ा है, उसको सहन करके अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं । जो भाई हमारे साथ हैं, उनके परिवारों को भी अपना ही परिवार समझकर कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं ।'' अब हमने गुरुदेव से पूछा–''गुरुदेव, कृपया बताइए, समाज के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं ?''

परमपूज्य गुरुदेव ने कहा–''बेटा ! समाज के प्रति कर्त्तव्य को निभाना धर्म है । समाज का प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर बड़ा ऋण है । समाज का सहयोग नहीं होता तो पढ़ना, लिखना, बोलना कैसे सीखते ? कपड़ा, मकान आदि वस्तुएँ समाज के सहयोग से ही मिलती हैं । मनुष्य की आवश्यकताएँ समाज से पूरी होती हैं । अगर समाज का सहयोग नहीं हो तो मनुष्य कैसे उन्नति कर सकता है ? रामू नाम का एक लड़का था । उसकी माँ उसे गोद में लेकर खेत पर गई । पेड़ के नीचे सुलाकर खेत में काम करने लगी । इतने में एक भेड़िया बच्चे को उठा कर ले गया । ईश्वर की कृपा से भेड़िये ने रामू को मारा नहीं, उसके छोटे–छोटे बच्चे थे, उनके पास जाकर उसे छोड़ दिया और बच्चे को अपने बच्चों की तरह दूध पिलाती रही । भेड़िए के बच्चे की तरह ही उसने चलना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिरना सीखा । उसी तरह चिल्लाना भी सीखा । भेड़िये के बच्चे बड़े हो गये, जंगल में घूमने लगे । एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार करने गया । उसने देखा कि यह बालक भेड़ियों के बीच कैसे घूम रहा है । उसने भेडियों का शिकार कर डाला और रामू को बचा लिया । अन्य लोगों की सहायता से रामू को पकड़ा । रामू भेड़िये के बच्चों जैसा बोलता था । बड़ी मुश्किल से उसे लखनऊ के अस्पताल में दाखिल किया । उपचार किया, परंतु वह मनुष्य की बोली नहीं बोल सका फिर उसने शरीर छोड़ दिया । मनुष्य को समाज की कितनी देनें हैं , समाज का इतना अनुदान है, सभी चीजें समाज से मिलीं हैं। समाज की सेवा करना ही धर्म है ।

भगवान कृष्ण से अर्जुन ने कहा–अपना असली स्वरूप हमको दिखाएँ । भगवान कृष्ण ने कहा कि तुम चमड़े की आँख से मेरा स्वरूप नहीं देख सकते । भगवान कृष्ण ने दिव्य दृष्टि प्रदान की और अपना स्वरूप दिखाया । इस विश्व ब्रह्मांड में चींटी से लेकर हाथी तक और कण से लेकर पहाड़ तक मेरा ही स्वरूप है । समाज जो तुम देख रहे हो, मेरा ही स्वरूप है । उसकी सेवा करना, मेरी सेवा करना है । कौशल्या माता, यशोदा माता, काकभुसुंडि को भगवान ने अपना स्वरूप इसी रूप में दिखाया था । प्रत्येक व्यक्ति में मेरी ही आत्मा समाई हुई है । समाज की सेवा करना ही मेरी सेवा है । समाज की सेवा करना ही धर्म है । कर्त्तव्य पालन करना धर्म है । आज कर्मकांड को धर्म समझ लिया है । बेटा ! कर्मकांड सिगनल है, वह दिशा देता है कि रास्ता साफ है । कर्मकांड बीज है, खेत नहीं हो सकता । बीज के साथ खेत का रहना आवश्यक है । मोटर अच्छी है, परंतु उसको चलाने का ज्ञान नहीं । ड्राइवर खुद मरेगा सवारियों को भी मार डालेगा । सच्चे धर्म को समझ लिया जाए तो सारी समस्या का हल हो सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्माचार्य धर्म का सच्चा स्वरूप समझाएँ

आज एक देश दूसरे देश को बर्बाद करने में लगा है । देशवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, जातिवाद फैला है और सारे विश्व में हाहाकार मच रहा है । अगर सारे विश्व के राजनेताओं को यह भावना आ जाए कि पृथ्वी हमारी माता है और हमने पृथ्वी माता के पेट से जन्म लिया है । हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, जैन सारे विश्व के लोग भाई–भाई हैं । एक ईश्वर के पुत्र हैं । तब लड़ाई क्यों हो ? मुस्लिम में भाई चारा, ईसाई धर्म में सेवा यही धर्म है । हिंदु धर्म कहता है 'वसुधैव कुटुंबकम्' सारा विश्व हमारा एक कुटुंब है । समस्याओं का हल हो सकता है यदि आज ऐसी भावना आ जाए तब ।'' हमने पूछा–गुरुदेव यह भावना कैसे आ सकती है ? कृपया बताने का कष्ट करें ।

गुरुदेव ने कहा–''सारी समस्याओं का हल अध्यात्म के पास है । धर्म की विकृति दूर करने से ही समस्याएँ हल हो सकती हैं । बेटा ! हम ८० लाख बाबा हैं । जो रात दिन भजन करते हैं। उनका खर्चा इतना है जितना गवर्नमेंट का नहीं है । उनके खर्चों को जनता वहन करती है । एक गाँव पर ११–१२ बाबा आते हैं। अगर धर्म के रास्ते पर चलते तो गाँव की समस्या हल हो जाती । बीड़ी सिगरेट तंबाखू का सेवन कोई नहीं कर सकता था । तंबाकू का सेवन करके टी.बी. हम बुलाते हैं, अपने फेफड़ों को खराब कर हम बीमारियों को निमंत्रण देते हैं । अगर हम गाँव में अपने यजमानों को बतलाते कि यजमान तूने तंबाकू खाई तो तेरा स्वास्थ्य बिगड़ेगा और हम अपना और आपका सिर फोड़ लेंगे तो कोई भी व्यक्ति तंबाकू नहीं खाता ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूमधाम की शादी, दहेज लेना, उसका विरोध करते तो देश में कितना धन बर्बादी से बच जाता । व्यक्तियों में जो दोष दुर्गुण हैं, सामाजिक कुरीतियाँ हैं, दूर हो सकती थीं । नशेबाजी घर–घर में फैली है । आज सरकार आंदोलन चला रही है । तंबाकू के विरोध में मशाल के जुलूस निकल रहे हैं । दहेज के प्रति कानून बना रही है । यह कार्य बाबाओं का है कि देश के इन दुश्मनों से रक्षा करें । बंदा वैरागी बहुत दिनों तक सत्संग करते रहे और आक्रमणकारियों के अत्याचार भी देखते रहे । उनके मन में विचार आया कि इस समय केवल पूजा पाठ की नहीं अपितु जनता में शौर्य, साहस, पराक्रम और प्रतिशोध की भावना भरी जाने की आवश्यकता है । पूजा करने से देवता दुःख दूर करेंगे, यह भ्रांति पूर्ण भावना मिटा देनी चाहिए, नहीं तो देश से धर्म संस्कृति नष्ट हो जाएगी ।

उन्होंने अपनी विचार पद्धति और कार्यशैली बदल डाली । उन्होंने शिष्यों में भी यही भावना उत्पन्न की और शत्रुओं के साथ संघर्ष की तैयारी करने लगे । यद्यपि वे आक्रांताओं द्वारा पकड़े गए और मृत्युदंड के भागी बने, किंतु आज भी उन्हें संत सैनिक कह कर सराहा जाता है और उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है । इस समय में केवल राम नाम के जप करने वालों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए ।

अंतःकरणों को बदलने का काम हम धर्माचार्यों का है । हम एक ही भ्रम फैलाते हैं, भजन करो, गंगा स्नान करो, कथा सुनो, भागवत सुनो इससे पाप दूर हो जाते हैं । जबकि हमको कहना यह भी चाहिए कि दोष दुर्गुण छोड़ो और कुरीतियों से संघर्ष करो, तभी धर्म का सही पालन होगा ।

सात ऋषि धर्म का प्रचार करते थे, पेड़ों के नीचे रहते थे । पिप्पलाद ऋषि पीपल के पत्ते खाकर भूख मिटा लेते थे । ऋषियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की पत्नियाँ जो अनाज खेतों में रह जाता था, उसको बीन कर लाती थीं, सब उसको खाते थे । घर–घर धर्म का प्रचार करते थे । व्यक्तियों को बतलाते थे कि कर्त्तव्यों का पालन करना ही धर्म है । आज आवश्यकता है व्यक्तियों को धर्माचरण सिखाने के लिए धर्म परायण आगे आएँ और अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए जिएँ । हम धर्माचार्यों को चाहिए कि हम स्वयं कर्त्तव्यों का पालन करें ।

एक बार एक धनी व्यक्ति ने एक ऊँची बल्ली पर रत्नजड़ित कीमती कमंडल टांग दिया और घोषण की कि जो साधु इस बल्ली पर सीधा चढ़कर कमंडल उतार लेगा उसे ये कीमती पात्र ही नहीं, बहुत दक्षिणा भी दी जाएगी । बहुत से त्यागी और विद्वान साधुओं ने बड़ा परिश्रम किया परंतु किसी को सफलता न मिली । अंत में एक कश्यप नामक साधु नट विद्या में बहुत सा जीवन बिताकर साधु बना था, उस बौद्ध भिक्षु ने बल्ली पर चढ़कर कमंडल उतार लिया, उसकी बहुत प्रशंसा हुई और धन भी मिला ।

जब यह समाचार भगवान बुद्ध के पास पहुँचा तो वे बहुत दु:खी हुए । उन्होंने सब शिष्यों को बुलाकर कहा– ''भविष्य में तुम में से कोई भिक्षु इस प्रकार का चमत्कार न दिखाए और न उन लोगों से भिक्षा ग्रहण कर जो साधु का आचरण नहीं चमत्कार देखकर उसे बड़ा मानते हैं ।''

चमत्कार नहीं चरित्र और ज्ञान ही साधु की कसौटी है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजनेताओं का धर्म

राजनेता धर्म के रास्ते पर चलते तब विश्व की सारी समस्या हल हो सकती थी । राजनेताओं का कर्त्तव्य है कि देश की सेवा करें । अपने लिए कम से कम खर्च करें और समाज के पैसे को समाज के लिए खर्च करें । अगर राजनेता अपने कर्त्तव्यों को समझते तब इतना खर्च नहीं करते । राजा जनक हल चलाकर अपना निर्वाह करते थे । एक–एक पैसे का हिसाब रखते थे । नसरुद्दीन बादशाह टोपी सींकर अपना खर्च चलाते थे । एक बार उनकी पत्नी का हाथ जल गया था तो बादशाह स्वयं रोटी बना रहे थे । उनकी पत्नी ने कहा–हम नौकर रख लें । नसरुद्दीन बादशाह ने कहा–हम इतने बड़े आदमी नहीं हैं जो नौकर रख सकें । हम टोपियों की सिलाई कर अपना गुजारा करते हैं। घर के भोजन का काम जब तक हाथ ठीक नहीं होता, हम कर दिया करेंगे । आज राजनेताओं के राजा महाराजाओं जैसे खर्चे हैं । चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधान मंत्री चाणक्य था। शहर से दूर एक कुटिया बनाकर उसमें रहता था । दीपक जलाता था । राजकोष से अपने लिए एक पैसा खर्च नहीं करता था । राज काज करके पैदल कुटिया में जाता था । उसने अपने कर्त्तव्यों का पालन करना, अपना धर्म समझ रखा था ।

अगर राजनेता धर्म के रास्ते पर चलें तो विश्व में जहाँ अशांति छाई हुई है वहाँ शांति का वातावरण हो सकता है । गुरुदेव ने कहा–हम प्रत्येक राजनेता को धर्म के रास्ते पर चलाना चाहते हैं । आज प्रत्येक राजनेता लोकहित की जिम्मेदारियों को पूरा करने का लंबा चौड़ा वादा तो करता है, परंतु जो कर्त्तव्य धर्म का रास्ता है, उस पर नहीं चलता ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिजीवी बुद्धि का उपयोग समाज हित में करें

वैज्ञानिक वर्ग कर्त्तव्य पालन कर रहा होता तो दुनियाँ का विनाश नहीं होता । आज सारे बुद्धिजीवी विनाश में लगे हैं । एटम बम, अणु बम, लेजर किरणों के अत्याधुनिक हथियार बनाए जा रहे हैं । सारे बुद्धिजीवी इस काम पर लगे हैं कि दुनियाँ का कैसे विनाश किया जाए । अगर वैज्ञानिक वर्ग अपने कर्त्तयों को समझता तो समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाकर जहाँ आवश्यकता हो वहाँ वर्षा कर सकता था। सूर्य की किरणों से ऊर्जा लेकर कारखाने चला सकते हैं । आज का वैज्ञानिक अपने धर्म को भूल गया है ।

आज बुद्धिजीवी लेखक गंदे उपन्यास लिख रहे हैं । उपन्यासकार धर्म की भ्रांतियों को दूर कर सकते हैं । धर्म के विषय में भ्रांतियाँ भारत में ही नहीं विदेशों में भी प्रचलित हैं । खलील जिब्रान ईसाई परिवार के थे । उन्होंने अमेरिका जाकर शिक्षा प्राप्त की तथा धर्म के नाम पर चल रहे व्यवसाय और छद्म पर करारे प्रहार किए । उनकी बोध कथाओं का संसार की कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है, जिनसे प्रेरणा लेकर बहुत से भूले भटकों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझा है । इसी प्रकार लेखक सामाजिक बुराइयाँ दूर कर सकते हैं । युवा युवतियाँ इन उपन्यासों को पढ़ कर सैक्स की दौड़ में लगे हुए हैं । बच्चे इन उपन्यासों को बड़े ध्यान से पढ़ते हैं और चरित्र खराब करते हैं । पत्रकार अखबारों में मारकाट, व्यभिचार के ही समाचार प्रकाशित करते हैं । अच्छे समाचारों को महत्व नहीं देते हैं । बुद्धिजीवी धर्म पर चलें तो बच्चों का चरित्र ऊँचा उठ सकता है । गुरुदेव ने हमको जापान का किस्सा सुनाया । दो बच्चे थे, उनके माता पिता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का स्वर्गवास हो गया था । बड़े भाई ने सोचा अब हमको कुछ करना चाहिए जिससे हम दोनों का गुजारा हो । उसने दियासलाई बाजार से खरीदी । एक झोले में रखकर दियासलाई बेचने जाता था । थोड़ी सी बचत से गुजारा हो जाता था । बड़े भाई ने कहा–दियासलाई बेचकर खर्चा चला लूँगा, तुम पढ़ाई प्रारंभ करो । छोटा भाई पढ़ने लगा । एक दिन दियासलाई बेचते–बेचते एक पत्रकार के पास पहुँच गया और कहा–आप एक दो दियासलाई हमसे अवश्य खरीद लें । पत्रकार ने दियासलाई खरीद लीं । पत्रकार ने उसको पैसे दे दिए । लड़का पैसा खुला कर आ रहा था, रास्ते में वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया । लड़का घायल हो गया, गहरी चोटें आईं । उसको अस्पताल पहुँचा दिया गया। जब उसका भाई पढ़ाई से घर पर आया तब पता चला कि भाई का एक्सीडेंट हो गया है । वह अस्पताल देखने गया । बड़े भाई की गंभीर हालत देखकर रोने लगा । बड़े भाई ने कहा कि अब रोने से क्या लाभ, तुम मेरा झोला देखो उसमें खुले पैसे हैं तुम अभी शीघ्र जाओ और पत्रकार को खुले पैसे देकर आओ और उनको बता देना कि भाई का एक्सीडेंट हो गया है । इस कारण वह आपको खुले पैसे नहीं दे सका । पत्रकार सोच ही रहा था कि आजकल के बच्चे कितने खराब हैं । धोखा देकर पैसा ले गया । उसी समय यह बालक उनके पास पहुँचा और सारा वृतांत बताया । पत्रकार ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ । पत्रकार अस्पताल आया तब तक उस बच्चे ने शरीर छोड़ दिया । पत्रकार ने अंतिम संस्कार इत्यादि संपन्न कराए । छोटे बच्चे को अपने साथ ले गया और उसकी पढ़ाई एवं भोजन आदि की व्यवस्था की । कुछ माह के बाद बच्चा बोला–आप मुझे कुछ पैसा उधार दे दो, मैं यहाँ आपके आश्रित नहीं रहना चाहता । पत्रकार ने कहा–बेटा ! तुझे यहाँ क्या तकलीफ है ? बच्चे ने कहा–जिस आदर्श और सिद्धांत के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरे माता पिता मर गए, जिस आदर्श को भाई ने नहीं छोड़ा, उसको हम भी नहीं छोड़ना चाहते हैं । हम भी माचिस बेचकर अपना खर्चा निकाल लिया करेंगे और बाकी समय में पढ़ाई कर लिया करेंगे । बचत होगी, उससे आपके पैसे लौटा देंगे । पत्रकार ने जापान के सारे पत्रकारों को बुलाया और सारा किस्सा सुनाया । कहा–हम चोरी, अपहरण, मार–काट, व्यभिचार आदि के समाचारों को प्रमुखता देते हैं, परंतु ऐसे आदर्श जीवन जीने वालों के समाचारों को या तो छापते ही नहीं या छापते भी हैं तो प्रमुखता नहीं देते हैं । सभी पत्रकारों ने निश्चय किया कि अब अखबारों के पहले पेज पर आदर्श चरित्र और सिद्धांतवादियों के समाचार दिया करेंगे । जापान की उन्नति का आज यही कारण है । जापान की सारी चीजें विश्व भर में बिकती हैं । अगर पत्रकार धर्म पर चलते तो देश कितना उठ सकता था । व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण की तरफ अपनी बुद्धि को लगाते तो सारी समस्याओं का हल हो सकता है । बुद्धिजीवी व्यक्तियों के विचार करने का ढंग निकृष्ट हो गया है, उसे ठीक करना है । तुलसी दास ने रामायण का ग्रंथ लिखा था और कितने व्यक्तियों को चरित्रवान बना दिया । रामायण में चरित्रवानों की ही कहानी है । लेखक, पत्रकार चाहें तो व्यक्तित्व निर्माण के लेख लिखें । इससे हमारा देश देवताओं का देश बन सकता है ।

बुद्धिजीवी को भी देवता की श्रेणी में रखा गया है । इनका सम्मान समाज में देवता जैसा होता है । गुरुदेव ने कहा–बेटा ! आज बुद्धिजीवी अपने धर्म के रास्ते से भटक गया है। बुद्धिजीवियों की दिशा विधेयात्मक होनी चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धनवान धन को देश के विकास में लगाएँ

गुरुदेव ने कहा कि धन वाले धर्म से भटक गए हैं । धन इकट्ठा करना, बैंक में जमा करना ही अपना धर्म समझते हैं । आज हर चीज में मिलावट कर रहे हैं । दूध में ब्लौटिंग पेपर, गरम मसाले में घोड़े की लीद, गुटखा में छिपकली पीसकर मिला रहे हैं । समाज को चाहे कितनी ही हानि उठानी पड़े । बीड़ी, सिगरेट, गोस्त, शराब आदि की दुकानें खुलती चली जा रही हैं । आज का नवयुवक गुटखा सेवन की बुरी लत में बुरी तरह से फँस रहा है । यह धीमी आत्महत्या है । व्यक्ति इस दुर्व्यसन में फँसकर धन और स्वास्थ्य दोनों को खो रहा है । नई पीढ़ी को इनसे बचाने के लिए जन--जागरण की आवश्यकता है ।

साथ ही जो व्यक्ति दिन भर भजन करता है, तिलक लगाता है, जनता को धोखा देता है, धन इकट्ठा करता है, वह धर्म को नहीं जानता । जमुना लाल बजाज ने धन कमाया था । महात्मा गांधी को जब आवश्यकता पड़ी तो स्वतंत्रता आंदोलन में सारा धन राष्ट्रहित में लगा दिया । इसी को युग धर्म कहते हैं । राजा अशोक ने सारा राजकोष भगवान बुद्ध के चरणों में अर्पित कर दिया था । भामाशाह ने सारा धन देश के हित में लगाया था । जिन्होंने अपना धन देश, धर्म, समाज के लिए, लोक मंगल के लिए खर्च किया, वे अजर अमर हैं । उनको देवता की श्रेणी में गिना जाता है। जो धन कमाया है देश के हित में लगाएँ तो देश की आर्थिक कठिनाई दूर हो सकती है । विदेशों से कर्ज लेना पड़ रहा है । आज धनपतियों को युग धर्म समझना चाहिए । आज धन संपदा का सुनियोजन रचनात्मक कार्यों में करना चाहिए । अगर धन वालों की बुद्धि ठीक हो जाए तो तमाम समस्याएँ हल हो सकती हैं । अगर धन वालों ने अपने कर्त्तव्यों को समझा और पैसे को शिक्षा में लगाया होता तो कोई भी निरक्षर नहीं रह सकता था ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलाकार सत्प्रवृत्तियाँ उभारें

कलाकार चाहते तो हमारे बच्चों को राम, कृष्ण, हनुमान, विवेकानंद, गांधी, बुद्ध भगवान बना सकते थे । मीरा कलाकार थीं, कितनों को दिशा दी । भक्ति भाव के संगीत गाती थी, जिससे भावनाओं का परिष्कार होता था । आज घर–घर में मीरा के गीत गाए जाते हैं । नारद कलाकार थे, उन्होंने कितने व्यक्तियों को दिशा दी । ऐसे कलाकार होते तब हमारा देश कितना ऊँचा उठ जाता । कलाकार चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखा सकते थे । नारद ने रत्नाकर को दिशा दी, वह वाल्मीकि बन गए थे ।

धर्म का तात्पर्य है–अच्छाइयों को धारण करना, बुराइयों को छोड़ना । कलाकार यदि चाहें तो फिल्मों के माध्यम से अच्छी दिशा दे सकते हैं, परंतु आज मात्र धन कमाने के लिए ऐसी फिल्मों का निर्माण कर दर्शकों को पतित कर रहे हैं, जिससे अपराध बढ़ रहे हैं । आज कलाकार धर्म को भूल गया । उसने हमारे बच्चों को फैशनपरस्ती, नशेबाजी, डकैती सिखाकर चरित्रहीन बनाया । जब पूछा जाता है कि डकैती कहाँ से सीखी, तब अपराधी कहते हैं, यह सिनेमा से सीखी । प्रत्येक कलाकार धर्म के रास्ते पर चलते, नशेबाजी की हानियाँ बता सकते तो डकैती, फैशनपरस्ती को देश से हटा सकते थे । कलाकार अपने चरित्र के द्वारा दिशा दे सकते थे । कलाकारों ने बेटियों को नग्न कर दिया, बच्चों को हिप्पी बना दिया । गुरुदेव ने कहा–बेटा ! हम इनको दिशा देंगे । पाँचों जो शक्तियाँ हमने बतलाईं यदि वे जाग जाएँ, धर्म को समझ जाएँ तो हमारा देश देवताओं का देश बन सकता है । धर्माचार्य, राजनेता, बुद्धिजीवी, धनवाले और कलाकार धर्म के रास्ते पर चलें तो हमारे देश की आजादी को खतरा नहीं हो सकता है । धर्म को आज जादूगरी बाजीगरी समझ लिया है । धर्म यह नहीं है । धर्म तो श्रेष्ठता का वरण करना है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म कोई जादूगरी नहीं है

धर्म के बारे में जो गलत मान्यता बन गई है, उसे दूर करना है । गुरुदेव ने हमको एक किस्सा सुनाया कि शिव पार्वती आकाश मार्ग से विमान में बैठकर जा रहे थे । ऊपर से पार्वती जी ने देखा कि लाखों आदमी ठंड में गंगा स्नान को चले जा रहे हैं । भगवान शंकर से पूछा कि ये कौन लोग हैं जो इतनी ठंड में नंगे पैर चले जा रहे हैं ? भगवान शंकर ने कहा–आज सोमवती अमावस्या है । ये लोग गंगा स्नान करने जा रहे हैं । सोमवती अमावस्या को गंगा स्नान का बड़ा महत्व है । शंकर भगवान ने कहा कि इनके अनुसार जो आज के दिन गंगा में स्नान करता है, वह स्वर्ग को जाता है । पार्वती जी बोलीं–महाराज अभी तो हम स्वर्ग से लौटे हैं, वहाँ पर तो दस–बीस कुटिया ही बनी हैं । इतने लोगों को वहाँ जगह कहाँ से मिलेगी । शंकर भगवान बोले–पार्वती जी ! जितने लोग गंगा स्नान को जा रहे हैं, उनकी भावनाएँ परिष्कृत नहीं हैं । पार्वती जी ने कहा–महाराज इतनी ठंड में नंगे पैर जा रहे हैं और आप कहते हैं कि इनको गंगा स्नान का लाभ नहीं मिलेगा । कृपाकर आप विस्तार से इसका रहस्य बताएँ । थोड़ी दूर चलकर भगवान शंकर ने कोढ़ी का रूप धारण किया और पार्वती जी को खूबसूरत युवती का रूप धारण कराया । शंकर भगवान और पार्वती इसी रूप में एक पेड़ के नीचे बैठ गए, जहाँ से स्नान करने वाले तीर्थ यात्री स्नान करने आ–जा रहे थे । एक सेठ वहाँ से गुजरा । मुँह से राम नाम का उच्चारण कर रहा था और गंगा माई के जयकारे बोल रहा था । उसकी नजर पेड़ के नीचे एक कोढ़ी के साथ बैठी हुई सुंदर युवती पर पड़ी तो वह वहीं ठहर गया और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युवती से कोढ़ी की ओर इशारा करके पूछने लगा कि यह कौन है ? युवती रूप में विराजमान पार्वती जी ने कहा कि यह मेरे पति हैं, हम दोनों भी गंगा स्नान करना चाहते हैं । यदि आप हमारी मदद कर दें तो बड़ी कृपा होगी । सेठ ने कहा–तू पागल हो गई है जो इस कोढ़ी के साथ रहती है । मेरे साथ चल आलीशान कोठी है, कार है, नौकर हैं, खाने पीने के पूरे साधन हैं, इस कोढ़ी के साथ क्यों रहती है ? इसे छोड़ मेरे साथ सेठानी बनकर रहना । दोनों मौज–मस्ती करेंगे । युवती ने कहा कि ये मेरे पतिदेव हैं । इनकी सेवा करना मेरा धर्म–कर्त्तव्य है । तुम ऐसी बात मुझसे मत करो, चले जाओ यहाँ से । सेठ चला गया । कोढ़ी वेशधारी शंकर भगवान ने पार्वती से कहा–कैसा गंगा स्नान करने जा रहा है, इसकी नियत कैसी खराब है ? दूसरा व्यक्ति आया । हाथ में माला थी, तिलक लगाया था, उसकी दृष्टि पेड़ के नीचे बैठे हुए दोनों पर पड़ी तो उसने युवती से पूछा–यह कोढ़ी कौन है ? युवती बनी हुई पार्वती जी ने उसे वही उत्तर दिया जो पहले सेठ को दिया था । उस पंडित वेशधारी आदमी ने कहा–इस कोढ़ी के साथ क्यों रहती है ? मेरे साथ चल मेरे पास १००० बीघा जमीन है, ट्रैक्टर है, भैंसें हैं, दूध होता है, बगीचा है । इसको छोड़ मेरे साथ चल, दूध भी पीना, फल भी खाना, कोढ़ी के साथ क्यों रहती है ? इसी तरह वे दोनों बहुत देर तक पेड़ के नीचे बैठे रहे और उनको देखकर लोग पार्वती जी से इसी प्रकार अनर्गल वार्तालाप करते और पार्वती के झिड़के जाने पर वे अपना रास्ता नापते आगे बढ़ जाते । बहुत देर बाद वहाँ एक भक्त आया । जब उसने इन दोनों को पेड़ के नीचे उदास मन से बैठा हुआ देखा तो उसने भी युवती के रूप में बैठी पार्वती जी से कोढ़ी वेशधारी शंकर भगवान की और इशारा करते हुए बड़ी शालीनता से पूछा कि हे देवि ! ये रोगी काया वाले आपके साथ कौन हैं और आप यहाँ क्या कर रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं ? पार्वती जी ने सभ्य दिखने वाले पुरुष से कहा कि हे भाई ! ये मेरे पतिदेव हैं । मैं इनको आज के पावन अवसर पर गंगा स्नान कराने लाई हूँ । क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं ? उस व्यक्ति ने कहा–देवि ! आप धन्य हैं, आप जैसी माताओं के कारण ही जमीन और आसमान कायम हैं । उस व्यक्ति ने मन ही मन उस देवि की पति के प्रति अगाध श्रद्धा और सेवा भावना को नमन किया और कोढ़ी वेशधारी शंकर भगवान को अपने कंधे पर बिठाया और गंगा जी की ओर चल दिया । वहाँ पहुँचकर उन तीनों ने गंगा स्नान किया । स्नान के बाद वह व्यक्ति बोला–देवि ! मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पास कोई पकवान नहीं हैं, थोड़ा सा सत्तू भर है, आप से प्रार्थना है कि आप दोनों भी हमारे साथ इस सत्तू को खाएँ । फिर उन तीनों ने सत्तू खाया । कुछ देर बाद वह व्यक्ति उन दोनों की इच्छानुसार उनको वहीं छोड़कर अपने घर चला गया । तब शंकर भगवान ने पार्वती जी से कहा–लाखों की भीड़ है, इसमें कोई भक्त नहीं, केवल एक भक्त है, इसको गंगा स्नान का लाभ मिलेगा । जिसका जीवन शुद्ध पवित्र है, जिसके हृदय में करुणा, दया, सेवा, परोपकार की भावना है, उसको गंगा स्नान का लाभ अवश्य मिलेगा । पार्वती माता की आँखें खुल गईं ।

गुरुदेव ने हमको एक दृष्टांत और सुनाया कि बेटा ! रैदास का नाम सुना है । रैदास से एक साधु ने कहा कि आज सोमवती अमावस्या है, स्नान करने चलो । रैदास ने कहा कि बहुत भाइयों के जूते ठीक करने के लिए ले रखे हैं । उनको समय पर तैयार करके देना हमारा धर्म कर्त्तव्य है । संत ने कहा–तू हरिजन है, सोमवती अमावस्या के गंगा स्नान के महत्व को नहीं समझ सकता है । रैदास ने कहा–दो पैसे लो गंगा माता से कहना यदि रैदास सच्चा भक्त है तो अपने हाथों से उसके दिए हुए पैसों को स्वीकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करो । संत पैसे लेकर रैदास की मूर्खता पर हँसता हुआ चल दिया और गंगातट पर पहुँचकर कौतूहल पूर्वक कहने लगा–हे गंगा मैया ! रैदास ने पैसे भेजे हैं और कहा है गंगा माता से कहना कि यदि रैदास सच्चा भक्त है तो आप अपने हाथ बाहर निकालें और उसके द्वारा दिए हुए पैसे स्वीकार करें । इतना सुनते ही गंगा माता ने हाथ निकाले और पैसे स्वीकार किए । संत को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसकी आँखें खुल गईं । रैदास के पास जाकर कहा– आपके पास कौन सी भक्ति है ? रैदास ने कहा कि जिसका मन शुद्ध पवित्र निर्मल है, उसको कहीं भी गंगा स्नान का लाभ मिलता है । जिसका मन गंदा है, दोष दुर्गुणों से भरा है, वह चाहे नित्य प्रति गंगा स्नान करे, कोई लाभ नहीं होता है ।

गुरुदेव ने कहा–बेटा ! बगुले को देखा है, एक पैर से ठंडे पानी में खड़ा रहता है और जब मछली आती है तो उसको खा जाता है । आज व्यक्ति बगुलाभक्ति करता है । आज का आदमी शैतान बन गया है । अपने कर्त्तव्य को जो भगवान ने सौंपा है, पूरा नहीं करता है । रैदास अपने कर्त्तव्य को पूरा करने में लगा था । इसी कारण इतिहास में रैदास को सच्चे भक्तों में गिना जाता है ।

संतों के लिए यही धर्म है कि समाज में जो सामाजिक कुरीतियाँ फैली हैं, उनको दूर करें और मनुष्यों को सद्ज्ञान दें । घर–घर चरित्र निर्माण की पुस्तक पढ़ाएँ, समाज की सेवा करें । यही समाज के प्रति धर्म है । समाज की समस्याएँ धर्म से हल होगीं । इसी कारण आज लोग दुःखी हैं कि धर्म को भूल गए हैं । अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते हैं । इसका कारण है कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म का रास्ता पकड़ लेते हैं अगर मनुष्य को सुखी रहना है तो धर्म के मार्ग पर चलना पड़ेगा ।

गुरुदेव ने हमको बताया कि बेटा ! एक मुसलमान बुढ़िया थी। उसने सालभर तक हज पर जाने के लिए मजदूरी करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैसे इकट्ठे किए । हज पर जाने की तैयारी कर ही रही थी कि उस इलाके में अकाल पड़ गया, लोग भूखे मरने लगे । उस बुढ़िया ने हज की यात्रा के लिए जो धन जमा किया था, उससे अकाल ग्रस्त लोगों की मदद की और उसने सोचा कि हज तो कभी भी कर लूँगी । आज मेरा कर्त्तव्य है कि पीड़ितों की सेवा करूँ । हजारों आदमी हज पर चले गए । उसने अपना कर्त्तव्य पूरा किया । अल्लाह के यहाँ कमेटी बैठी और सबसे पूछा गया कि हज किन–किन लोगों की मंजूर की गई । सबने एक स्वर से कहा–मात्र उस बुढ़िया की हज मंजूर की गई है जिसने गाँव में रहकर हज पर जाने के लिए जमा धन से वहाँ के लोगों की मदद की । कुछ लोगों ने कहा–वह बुढ़िया तो यहाँ आई ही नहीं थी । हज के नियमों का पालन नहीं किया । निर्णायक ने कहा–हज का अर्थ कर्त्तव्यों को पूरा करना, भूखों की मदद करना है । उस बुढ़िया ने हज के लिए एकत्रित धन को दीन–दुःखियों की सेवा अर्थात् अल्लाह की सेवा में लगाया । इसीलिए उसे हज यात्रा का पुण्य दिया जाए ।

गुरुदेव ने एक दृष्टांत सुनाया–एक राजा थे । जंगल में शिकार खेलने गए । वहाँ एक महात्मा मिला । वह बहुत प्रसन्न था । राजा ने देखा उसके पास कोई सामान नहीं, कपड़ा नहीं, लंगोटी लगा रखी थी, फिर भी हँसती हँसाती जिंदगी जी रहा है । इससे पूछना चाहिए । हम राजा होकर सारे सुख साधन होते हुए भी दुःखी है । राजा ने साधु से पूछा कि आपको कोई दुःख क्यों नहीं है ? महात्मा ने कहा–दुख कैसा होता है ? भगवान ने मनुष्य का शरीर दिया है । राजा ने कहा–आपके पास सुख साधन नहीं, धन नहीं, फिर भी आप प्रसन्न हैं । उसने कहा–सारे विश्व के लोगों का धन हमारा ही तो है । सारे मकान जो बने हैं, अपने ही तो हैं । सारा मनुष्य समाज अपना ही तो कुटुंब है । नजरें बदली तो नजारे बदल गए, किस्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए । राजा को ज्ञान हुआ कि महात्मा की बात सच है । अब तक दृष्टिकोण गलत था इसीलिए सुख नहीं मिल रहा था । दृष्टिकोण को बदलना चाहिए । राजा ने उस दिन से अपना दृष्टिकोण बदला और सुखी रहने लगा ।

गुरुदेव ने एक दृष्टांत सुनाया–कलकत्ता में एक जादूगर बाजीगर आया । वह वहाँ के कमिश्नर के पास गया और कमिश्नर से कहा कि मैं जादू दिखाना चाहता हूँ । कमिश्नर अंग्रेज था, उसने कहा–सब आफिसरों को बुलाओ । कमिश्नर ने सभी के लिए कुर्सियाँ लगवाईं । बाजीगर ने झोले में से एक रस्सा निकाला और आसमान में फेंका, वह रस्सा आसमान में लटक गया । लोगों ने देखा तालियाँ बजाईं । जादूगर ने कहा–बीच में कोई नहीं बोलेगा । शांति पूर्वक देखते रहना । जादूगर उस रस्से पर आसमान में चढ़ गया और किसी को अब दिखाई नहीं दे रहा था । सबने तालियाँ बजाईं । थोड़ी देर बाद बाजीगर का एक हाथ कटकर नीचे आ गया फिर दूसरा, फिर पैर, फिर धड़ सब अलग–अलग कट कर आ गए । उसकी पत्नी सहित सब घबरा गए । पत्नी ने कहा जो कुछ हुआ मेरे भाग्य की बात है और उसने सारे शरीर के अंगों को इकट्ठा कर लिया और उस पर बैठ गई और आग लगा ली । पत्नी जादूगर के अंगों सहित जलकर भस्म हो गई । सभी लोग देखने वाले बड़े अचंभे में थे कि इतने में जादूगर आसमान से नीचे उतर आया और आकर बोला–मैं अपनी पत्नी छोड़ गया था, कहाँ गई ? सब चुप बैठे थे । इतने में बाजीगर ने कहा–अभी बतलाता हूँ आप लोगों ने मेरी पत्नी को कहाँ छुपाकर रखा है और उसने अपनी पत्नी का नाम लेकर आवाज लगाई । पत्नी कमिश्नर की कुर्सी के पीछे बैठी हुई बोली–मुझे कमिश्नर साहब ने छुपा कर रखा है । बाजीगर ने कहा–मैं आप सबके भरोसे अपनी पत्नी को छोड़ गया था । आप लोगों को ऐसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवहार नहीं करना चाहिए था । गरीब आदमी हूँ । सबने आश्चर्य किया । बाजीगर कमिश्नर के पीछे से सबके सामने पत्नी को उठा कर लाया । सब लोगों ने इनाम दिया । इस दृश्य को देखने के लिए एक फोटो खींचने वाले ने फोटो खींचे थे जबकि बाजीगर ने दृश्यों के फोटो खींचने को मना की थी । उस पर भी कैमरा मैन ने जब फोटो खींचे और बाद में उनको देखा तो उसमें एक भी फोटो नहीं दिखा । उसने बाजीगर से पूछा कि जब आपने करतब दिखाए हैं और हम सबने एक साथ आपके करतब देखे हैं, वही दृश्य हमने कैमरे से लिए हैं फिर भी उनकी फोटो क्यों नहीं आई ? बाजीगर ने कहा– मैंने कुछ भी नहीं किया था, सब हाथ की सफाई थी ।

गुरुदेव ने कहा–आज धर्म को बाजीगरी जादूगरी मान रखा है । प्रत्येक व्यक्ति माला घुमाकर, थोड़ा जप करके, भोग लगा करके भगवान को बस में करना चाहता है । हमारा मकान बनवा देना । नौकरी में तरक्की दिलवा देना । लड़की की शादी करा देना इत्यादि मनोकामनाएँ लेकर भगवान को नौकर बना रखा है जो थोड़ी सी रिश्वत लेकर खुश हो जाता है । सारी मनोकामनाएँ पूरी कर देता है । सभी इसी भ्रम में हैं । यह धर्म नहीं है । जब शुद्ध पवित्र जीवन जिएँगे । गुणों को ग्रहण करेंगे, तब ईश्वर मनोकामना पूरी करेंगे । भगवान को नौकर नहीं समझें, मालिक समझें । इसी को धर्म कहते हैं । मनुष्य शरीर और आत्मा दोनों से मिलकर बना है । आत्मा अजर है, अमर है, शरीर नश्वर है । यह शरीर, कुटुंब, नातेदार, धन दौलत सब पदार्थ से बनी चीजें हैं, मनुष्य इन्हीं से प्रेम करता है । दिन रात शरीर के पोषण में लगा रहता है । हमेशा पदार्थ का ही ध्यान रहता है । पदार्थ के संग्रह में सारा जीवन व्यतीत करता है । प्रत्येक मनुष्य को आज ही दिखता है, भविष्य का ध्यान नहीं रखता है । जिन्होंने इस पदार्थ को, शरीर को देखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, इसी के संग्रह में लगे रहे हैं, वे सब राक्षस कहलाए । कुंभकर्ण, रावण, सूर्पनखा, दुर्योधन पदार्थ इकट्ठा करने में लगे रहे, वे राक्षस कहलाए । प्रत्येक व्यक्ति पदार्थ इकट्ठा करने में लगा है । इसीलिए उसे शांति नहीं मिलती । भौतिकवादी का धर्म से कोई संबंध नहीं । जो केवल पूजा आरती करता है, सदाचरण नहीं करता, वह धार्मिक नहीं है । वह ढोंग करता है, धर्म से इसका कोई संबंध नहीं है ।

अगर सब लोग अपना धर्म समझते तो देश कितना ऊँचा उठता । सारी समस्याओं का हल हो सकता था। आत्मा को देखा नहीं । आत्मा को जिन्होंने देखा वे भगवान बन गए । गांधी जी मामूली वकील थे । एक मुकदमा लिया था, बहस नहीं कर सके थे, मुवक्किल ने जो रुपए फीस के दिए थे, वापस करने पड़े थे, परंतु जब उन्होंने सच्चे धर्म को समझा कि देश को आजाद कराना ही धर्म है और वे धर्म के रास्ते पर चले तो महात्मा गांधी हो गए । सारी जनता ने उनका साथ दिया । क्विट इंडिया की एक आवाज पर अंग्रेज भारत छोड़ कर जाने के लिए मजबूर हो गए । मामूली वकील से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बन गए । इसी को धर्म कहते हैं । प्रार्थना सभा करते थे, कीर्तन करते थे, देश को आजाद करने में लगे रहे । गुरुदेव ने कहा—बुद्ध भगवान पहले राजकुमार थे । जब वे सच्चे धर्म पर चले तो वे भगवान बुद्ध बन गए । मनुष्य देवता बन सकता है । भगवान बन सकता है ।

गुरुदेव ने विवेकानंद के जीवन का दृष्टांत सुनाया । पिता का स्वर्गवास हो गया, माँ और बहिन थी, राम कृष्ण परमहंस के पास भीख माँगने गए थे कि मुझे नौकरी दिला दो जिससे परिवार का भरण पोषण कर सकूँ, परंतु जब वह धर्म के रास्ते पर चल सके तो नरेन्द्र नाम का लड़का स्वामी विवेकानंद बन गया और उन्होंने भारतीय संस्कृति का प्रचार विदेशों में किया और जब वे लौटे तब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके लिए १८ घोड़ों की बग्घी तैयार की गई । वहाँ के पुलिस कमिश्नर, जिला अधिकारी, बड़े सेठ एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों ने कहा कि स्वामी जी घोड़ों की बग्घी में नहीं बैठेंगे । वहाँ के उन सभी भाइयों ने घोड़ों को हटा दिया था और अधिकारीगण, पूँजीपति, बुद्धिजीवी बग्घी को खींच रहे थे । स्वामी जी चाँदी की बग्घी में बैठे थे । आज हम ८० लाख धर्माचार्य हैं । यदि अपना कर्त्तव्य समझते तो धर्म का यह हाल नहीं हो सकता था । हमारा दुर्भाग्य है कि हमने कर्मकांड को ही धर्म मान लिया है । भजन संस्कृत की भज् धातु से बना है । भज का अर्थ सेवा करना है । जो समाज की सेवा करता है, वही सच्चा भजन करता है । बुद्ध ने कितनी सेवा की थी तब वे भगवान बने थे । हनुमान जी ने कितनी सेवा की थी । दोष दुर्गुणों से रहित जीवन जिया था । *राम काज कीन्हे बिना मोहिं कहाँ विश्राम ।* हनुमान जी रात दिन भगवान राम का कार्य करते थे । सुबह शाम थोड़ा राम का नाम ले लेते होंगे । तब वे सामान्य वानर से हनुमान बन गए ।

भगवान राम से अधिक मंदिर हनुमान के हैं । आज भजन, पूजन, आरती, भोग लगाना, राम नाम जपना ही धर्म समझ रखा है । रीछ वानर भगवान राम का काम करते थे । गिद्ध गिलहरी तक भी भगवान राम का काम करने में पीछे नहीं रहे । शबरी आदिवासी थी । सुबह उठकर ऋषियों के जाने का रास्ता साफ करती थी । धर्म के रास्ते पर चली, तब भगवान राम को भी उसके घर जाना पड़ा और उसके जूठे बेर खाने पड़े । जिन रीछ वानरों ने भगवान का काम किया, आज उनकी पूजा होती है । राम लीलाएँ होती हैं, उनके जयकारे बोले जाते हैं । जो व्यक्ति दोष दुर्गुणों से रहित जीवन नहीं जीता है, नशा करता है, झूठ बेईमानी की कमाई खाता है, रिश्वत लेता है, वह चाहे कितना ही भजन करे, सब निष्फल होता है । भगवान कृष्ण के साथ रहकर जिन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका काम किया, वे अजर अमर हैं, ग्वालबाल, गोपियाँ जिन्होंने कृष्ण का काम किया, उनकी लीलाएँ होती हैं । जिन्होंने दोष दुर्गुणों को, बुराइयों को नहीं छोड़ा, उनका भजन करना बेकार है । जिन्होंने वह अर्थात् आत्मा को देखा और उसे सँवारा, वे आज अजर अमर हैं ।

काशी विश्वनाथ मंदिर में एक बार शिवरात्रि के दिन आकाश से एक सोने का थाल उतरा । उसमें लिखा था कि शंकर भगवान में जिसका सच्चा प्रेम होगा, उसी को यह थाल मिलेगा । एक शास्त्री जी आए उन्होंने कहा-मैं नित्य रुद्राभिषेक करता हूँ और दर्शन करके ही भोजन करता हूँ । अतः थाल मेरे हाथ में दीजिए । थाल शास्त्री जी के हाथ में आते ही पीतल का हो गया । इसके बाद काशीराज स्वयं आए और कहने लगे-मैंने विश्वनाथ जी पर सोने का कलश चढ़ाया था । राजा के हाथ में आते ही थाल लोहे का हो गया । एक बड़े सेठ जी आए और कहा-विश्वनाथ जी की जलधारी मैंने ही बनवाई थी और फर्श में रुपए मैंने ही जड़वाये हैं, लेकिन उनके हाथ में आते ही थाल लोहे का हो गया ।

एक किसान बड़े परिश्रम से कुछ पैसे बचाकर खाने के लिए सत्तू बाँधकर विश्वनाथ के दर्शन को आ रहा था । रास्ते में एक जगह भूख-प्यास से तरसता एक मनुष्य पड़ा था । इस किसान ने उस गरीब को लोटे से पानी पिलाया, सत्तू खाने को दिया और उसे धर्मशाला में पहुँचा आया । इसके बाद विश्वनाथ मंदिर में पहुँचा । पूजा करके बाहर निकल ही रहा था तो किसी ने उसका उपहास करते हुए कहा-महादेव जी का सच्चा भक्त आया है थाल इसी को दे दो । किसान के हाथ में आते ही सोने का थाल और चमकने लगा । दरिद्र नारायण की सेवा ही सच्ची ईश्वर उपासना है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म बनाम श्रम और संघर्ष

गुरुदेव ने कहा–''जो आत्मा को पोषण देता है, वह धार्मिक है । धर्म के विषय में पूरी जानकारी देना हमारा कर्त्तव्य है । जो व्यक्ति श्रम करता है, वह धार्मिक है । जो आलसी है, भजन मात्र करता है, वह धार्मिक नहीं हो सकता है । विदेशों में भी इस प्रकार की धार्मिक भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई हैं और धर्माचार्यों ने उन्हें दूर किया है । मार्टिन लूथर के पिता जर्मनी के लौह कारखाने के मालिक थे । वे लूथर को वकील बनाना चाहते थे, पर लूथर ने धर्म प्रचारक बनने के लिए चर्च के विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण लिया और वे संत पादरी बन गए । उन्हें मिशन के महत्वपूर्ण कार्य सौंप दिए गए । लूथर ने तत्कालीन धर्म विडंबनाओं को बारीकी से देखा । उस समय बड़े पादरियों का समूह सामान्य लोगों से पैसा वसूल करके ईश्वर कृपा एवं स्वर्ग मुक्ति का टिकट बेचते थे । इसमें उन्हें करोड़ों की आमदनी थी । उस धन से वे ऐशोआराम का जीवन बिताते थे । छोटे पादरी भी उनका अनुकरण करते थे । लूथर ने उनका विरोध कर विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया । इस पर पादरियों ने लूथर को देश निकाले की सजा दिलवाई, किंतु अंत में लूथर के कथन की सच्चाई को समझकर ईसाई समुदाय उनका पक्षधर हो गया और प्रोस्टेन्ट के नाम से सुधारवादी संप्रदाय चलाया । भारत के आर्य समाज की तरह आज भी यह संप्रदाय वहाँ लोकप्रिय है । सुख का जीवन भी जीते हैं, धन भी कमाते हैं और किसी से माँगते नहीं । आज हम धर्माचार्य श्रम नहीं करते हैं । दिन भर भजन, पूजन, तीर्थयात्रा, कथा–भागवत सुनते हैं । आवश्यक पुरुषार्थ नहीं करते, इसलिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाली हाथ हैं । देवता के पास जाकर नाक रगड़ते हैं । भीख चाहे कोई प्रधानमंत्री से माँगे या देवता से, भिखारी ही कहलाता है । जब देश में सच्चा धर्म था, तब कोई व्यक्ति माँगता नहीं था । आज धर्म के नाम पर हम भीख माँगते फिरते है । गुरुदेव ने कहा– बेटा ! हर व्यक्ति धर्म के रास्ते पर चले, श्रम करे, मेहनत करे, तो देश कितना ऊँचा उठ सकता है । प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री घर में खुद झाड़ू लगाते थे ।''

गुरुदेव ने कहा–''मामूली साधु समर्थ गुरु रामदास बन गया । एक मराठा बालक था गाय भैंस चराता था । उसको दिशा दी और छत्रपति शिवाजी बना दिया । शिवाजी ने देश की कितनी सेवा की । अपने कर्त्तव्यों का पालन किया, ऐसे व्यक्ति को धार्मिक कहते हैं । जो धर्म के रास्ते पर चले हैं वे अजर अमर हैं । मुरा दासी का लड़का था, उसको चाणक्य ने दिशा दी और कहा कि तू धर्म के रास्ते पर चल, वह धर्म के रास्ते पर चला और चंद्रगुप्त मौर्य बन गया । रीछ, वानर, ग्वाल बाल, गांधी का साथ देने वाले सत्याग्रही, कृष्ण का साथ देने वाले उनका कार्य करने वाले सब धार्मिक कहलाते हैं । भजन पूजन करने वाले ८० लाख बाबा खाली हाथ हैं । जिसने विचारों को श्रेष्ठ नहीं बनाया, जो भावना से निकृष्ट है, रात दिन भजन पूजन यात्रा करें, सब व्यर्थ है । वे धार्मिक नहीं हैं । हमारे जितने अवतार हुए हैं उन्होंने बीड़ी सिगरेट नहीं पी, गोश्त नहीं खाया, सभी ने शुद्ध पवित्र जीवन जिया । धर्म के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति को दोष दुर्गुण छोड़ना पड़ता है । गंदे कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता है । गंदा आदमी, दोष दुर्गुण से भरा व्यक्ति कितना ही भजन पूजन करे, कोई लाभ नहीं मिलता । स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीन शरीर हैं, तीनों शरीरों को शुद्ध पवित्र करना पड़ता है । धर्म के नाम पर जो भ्रम फैला है, उसको दूर करना धर्माचार्यों का कर्त्तव्य है । संघर्ष करना ही धर्म है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघर्ष करने वाला अपनी बुराइयों से लड़ता और धर्म को प्राप्त करता है ।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा–संघर्ष कर तभी तेरा उद्धार होगा । इन कौरवों से लड़, तब तुझे यश कीर्ति मिलेगी और लोग प्रशंसा करेंगे । अर्जुन ने भगवान कृष्ण से कहा–कौरव मेरे रिश्तेदार हैं, इनसे नहीं लड़ सकता हूँ, तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन से नपुंसक कहा । नपुंसक एक गाली होती है । आज समाज में सौ बुराइयाँ फैली हैं, सौ बुराई ही सौ कौरव हैं । इनसे जब तक कोई संघर्ष नहीं करेगा, तब तक उद्धार हो ही नहीं सकता है । रामायण श्रेष्ठ विचार वालों की है । गीता में संघर्ष भरा पड़ा है । हमारे दो ही ग्रंथ मुख्य हैं रामायण और गीता । अर्जुन जब लड़ने को तैयार हुआ, तब भगवान कृष्ण ने उनका रथ चलाया । भगवान ने कहा–लड़ना तुझको ही पड़ेगा । अर्जुन कौरवों से लड़ा, राज्य भी मिला, यश भी मिला और पांडव आज अमर हैं, उनकी कथाएँ सुनाई जाती हैं ।

बुराइयों से जो लड़ता है, भजन पूजन भी करता है, वही धार्मिक है । जो बेटे पोते के लिए धन जमा करते हैं और अपने परिवार के लिए खर्च करते हैं, समाज हित के लिए कुछ नहीं करते, वे धार्मिक नहीं हैं । धर्म से उनका कोई संबंध नहीं है। वह सच्चा धार्मिक है जो श्रम करता है, एक घंटे भजन करता है, बाकी समय काम करता है, समाज के लिए जीता है ।

पेड़ फल को नहीं खाते हैं । दूसरों को देते हैं । अपने पत्ते, फल, लकड़ी सब दूसरों को दे देते हैं । पशुओं का दूध दूसरों के लिए है । यहाँ तक कि खाल भी समाज की सेवा में लगती है, जूते बनते हैं । चमड़े के सामान बनाने के काम आता है । अपने लिए खर्च नहीं करता है । भेड़ अपनी ऊन को साल में दो बार देती है । भेड़ समाज के लिए ऊन देती है, इसी कारण प्रकृति भी उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊन देती है । प्रकृति का नियम है, जो देता है, वह पाता है, जैसे किसान खेत में बीज डालता है तो खेत उसके बीज को कई गुना करके उसे वापस कर देता है । हिमालय से निकलने वाली नदियाँ वर्ष भर बहती रहती हैं फिर भी हिमालय की जल संपदा बर्फ के रूप में घटती नहीं है । क्योंकि वे नदियाँ निरंतर देती हैं इसीलिए उनका जल भी नहीं घटता । समुद्र देता है फिर भी उसका जल नहीं घटता है । कुँआ अपना पानी दूसरों को देता रहता है, तब उसमें पानी आता भी रहता है और पानी स्वच्छ भी रहता है । पोखर का पानी सड़ता रहता है, पीने योग्य भी नहीं रहता, यह नहीं देने का ही परिणाम है ।

गुरुदेव ने कहा कि जो परमार्थ में देता है, वही धार्मिक है । उसको नुकसान नहीं होता है, उसको लाभ होता रहता है । उसको घाटा नहीं रहता है । बुद्धि खर्च करने से बुद्धि बढ़ती है। बेटा ! हमको देख धर्म के रास्ते पर चले, अपना शरीर समाज की सेवा में लगा दिया तो शरीर हमारा कितना ताकतवर बन गया । मालूम नहीं तुझे एक बदमाश आया था हमारे पास, उसने हमको अकेला पाकर हमला किया । हमने पाँच फायरिंग वाली पिस्तौल थी, उसको छुड़ा लिया, एक फुट का छुरा था उसको छुड़ा लिया और धक्का मारकर भगा दिया । जो व्यक्ति अपने शरीर को दूसरों के लिए लगाता है, वह धार्मिक है, उसको शरीर बल मिलता है। हमने अपनी सारी बुद्धि समाज की सेवा में लगा दी, कितना साहित्य लिखा । हमको कितनी बुद्धि आ गई । सभी आर्ष ग्रंथों का अनुवाद किया । हजारों पुस्तकें लिखीं । देने को धर्म कहते हैं । हमने अपना सारा धन तपोभूमि में लगा दिया । जन्म भूमि आँवलखेड़ा में धन लगा दिया । दो कालेज बनवा दिए । हमारे पास जो धन था समाज की सेवा में लग गया तो प्रतिफल के रूप में कितना धन मिला । गायत्री तपोभूमि लाखों करोड़ों की मशीनें, कंप्यूटर, साहित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदि, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस करोड़ों–अरबों की संपत्ति है, लाखों रुपयों का खर्चा प्रतिदिन का है । उस समय २४ शक्तिपीठें बनाई थीं, १०० करोड़ का हिसाब आया था ।

धर्म के रास्ते पर जो भी चलेगा, उसे उसका लाभ मिलेगा । **जो आज समाज के पैसे को अपने लिए खर्च करते हैं, उनका धर्म से कोई संबंध नहीं है ।** आजकल कथा भागवत कहने वालों की बाढ़ आ गई । जगह–जगह कथाएँ होती हैं, परंतु उसका असर सुनने वालों पर पड़ता ही नहीं है । गुरुदेव ने कहा–बेटा ! जो कथा कहने वाला अपने जीवन में आदर्श सिद्धांत उतारेगा, जिसकी कथनी करनी एक है, उसकी कथा का असर पड़ेगा । जो करता कुछ है, कहता कुछ है, उसका असर नहीं होने वाला ।

एक पंडित जी कथा कह रहे थे । कथा प्रसंग में आया कि सूर्य भगवान के सामने मुख करके लघुशंका करना पाप है । श्रोतागण बहुत ही ध्यान से पंडित जी की कथा सुन रहे थे । उनमें बहुत सी बहिनें भी थीं । पंडित जी रात को कथा देर तक कहते थे, इस कारण सुबह देर से उठते थे । जो पंडित जी कथा कह रहे थे वे सूर्य भगवान की ओर मुख करके लघुशंका कर रहे थे । एक महिला श्रोता ने देखा तो उसने कहा पंडित जी रात को आप ही कथा कह रहे थे और आप ही सूर्य भगवान की ओर मुख करके लघुशंका कर रहे हैं । पंडित जी थोड़ी देर चुप रहे और फिर बोले–बहन जी आपने कथा ध्यान से नहीं सुनी थी । हमने कहा था कि यह नियम औरतों के लिए है, पुरुषों के लिए नहीं । गुरुदेव ने कहा–बेटा ! आज ऐसी ही कथा कहते हैं । इसलिए वाणी का असर नहीं पड़ता है । आज धर्म के नाम पर जनता का इतना धन खर्च होता है जितना सरकार का नहीं होता है । कथा कहने वाले चरित्रवान और तपस्वी हों तो सुनने वालों का हृदय परिवर्तन करा सकते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव ने फिर एक किस्सा सुनाया । एक सेठ जी थे, प्रति दिन कथा सुनने जाते थे । एक दिन सेठ जी अपने बच्चे को भी कथा सुनने साथ में ले गए । उस दिन पंडित जी ने कथा में बताया कि हमें प्रत्येक जीव में भगवान के दर्शन करने चाहिए । चींटी से लेकर हाथी तक जितने भी जीव–जंतु हमें दिखाई देते हैं, उन सभी में भगवान का वास है । दूसरे दिन लड़का दुकान पर बैठा था । वहाँ पर एक गाय आई । लड़के को पंडित जी की कथा वाली बात याद आई कि चींटी से लेकर हाथी तक सभी में भगवान का वास है । लड़के ने गाय में भगवान का वास समझ कर उसे थोड़ा आटा अंदर से लाकर खिलाना आरंभ किया । जब गाय आटा खाने लगी तो उसे लगा कि सूखा आटा गाय कैसे खा पाएगी, तब उसने दुकान में रखा गुड़ उस आटे में मिला दिया फिर उसने सोचा कि यदि इसमें घी और डाल दिया जाए तो यह इस आटे को आसानी से खा सकेगी । उसने गाय के सामने पड़े आटे में दुकान में रखा घी भी डालना शुरू कर दिया । इतने में सेठजी कथा सुनकर दुकान पर पहुँचे । उन्होंने जब सारा दृश्य देखा तो वे चकरा गए और दुकान में रखे डंडे से उस गाय को पीट कर भगाया । लड़के ने कहा–पिताजी यह आप क्या कर रहे हैं ? भगवान को मार रहे हैं । सेठ जी ने लड़के में पाँच–सात डंडे लगा दिए । जब लड़के ने कहा कि पिताजी कल पंडित जी की कथा में हमने सुना था कि सब में भगवान होते हैं, आपने भी तो कथा सुनी थी । सेठ ने कहा– बेटा ! कथा सुनने के लिए ही होती है, सुनते तो हम भी हैं, पर उसको वहीं छोड़ आते हैं, उसे जीवन में नहीं लाया जाता है । यदि हम कथा को सुनकर अमल में लाते तो बर्बाद हो जाते ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मृत्यु को याद रखो

गुरुदेव ने एक दिन हमको बताया कि बेटा ! जो व्यक्ति मृत्यु को याद रखता है और विचार करता है कि मुझे मरना है । मेरा स्वरूप तीन मुट्ठी भस्म है । मैं शरीर नहीं हूँ आत्मा हूँ । शरीर नश्वर है । इंद्रियाँ मन आदि सब नश्वर है । आत्मा अजर अमर है । शरीर, कुटुम्ब, धन, औरत, बच्चा कोई भी साथ नहीं जाता है । आत्मा साथ जाती है । हमने करोड़ों जन्म लिए हैं । शरीर धारण किए हैं, शरीर का नाश हुआ है । आत्मा हमेशा साथ रहती है । वह व्यक्ति कभी पाप, अत्याचार, अन्याय नहीं करता है जो आत्मा को अजर–अमर मानता है और शरीर को नश्वर । गुरुदेव ने हमें किस्सा सुनाया । सिकंदर जब मरने लगा तो उसने कहा– यह बीबी बच्चे, धन दौलत, कुटुंब, जिनके लिए रात दिन पाप करता रहा, अन्याय करता रहा, मेरे साथ जाएँगी । मंत्रियों ने कहा–आपके साथ एक भी नहीं जाएगा । फौज, पल्टन, धन, बीबी, बच्चे सब यहीं पर रह जाएँगे । सिकंदर ने कहा–फिर मैंने पाप क्यों किए ? खून की नदियाँ क्यों बहाईं ? बच्चों को अनाथ क्यों बनाया ? बहुत सी बहिनों को विधवा क्यों बनाया ? और राज को बढ़ाने के लिए पाप क्यों करता रहा । मंत्रियों ने कहा–तब बादशाह जी आपको मौत याद नहीं थी । आपने मौत को याद नहीं रखा । सिकंदर ने कहा–जब मेरा जनाजा निकले तो मेरे दोनों हाथ ताबूत से बाहर निकाल देना और कहते चलना कि सिकंदर बड़ा बेबकूफ था, उसने मौत को याद नहीं रखा और जीवन भर पाप करता रहा, धन इकट्ठा करता रहा, आज खाली हाथ जा रहा है । गुरुदेव ने कहा–जो मौत को याद रखता है, वही धार्मिक है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितना ही भजन पूजन गंगा स्नान करें, धर्म का लाभ तब तक नहीं मिलने वाला, जब तक हम अपने स्वरूप को नहीं समझेंगे । अगर धर्म की जानकारी हो तो आदमी पाप क्यों करे ?

मरने के बाद एक व्यक्ति को धर्मराज के सामने लाया गया । दूतों ने बताया कि यह एक बड़ा महात्मा है । भरी जवानी में अपने माता-पिता और स्त्री-बच्चों को छोड़कर यह जंगल में चला गया और जीवन भर तप करता रहा । धर्मराज ने कहा- कर्त्तव्य को त्यागकर कोई व्यक्ति धर्मात्मा नहीं बन सकता । परिवार के लोगों के साथ विश्वासघात करके इसने अधर्म ही कमाया है । ऐसा भजन किस काम का जो कर्त्तव्यों को भुलाकर किया जाए ।

यम दूतों ने एक दूसरे व्यक्ति को प्रस्तुत किया और कहा- यह व्यक्ति बड़ा कर्त्तव्य परायण है । इसकी स्त्री बीमार पड़ी और मर गई, पर यह उसकी कुछ परवाह न करके अपने कर्त्तव्य में ही लगा रहा । धर्मराज ने कहा-ऐसे हृदय हीन का स्वर्ग में क्या काम ? भावना पूर्वक किया गया कर्त्तव्य ही प्रशंसनीय हो सकता है ।

तीसरे व्यक्ति को धर्मराज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया । यमदूतों ने कहा-यह एक साधारण गृहस्थ है । सदा आस्तिक रहा, पवित्र जीवन जिया, परिवार को संस्कारित किया और दूसरों के उत्थान के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहा । धर्मराज ने कहा-स्वर्ग ऐसे ही व्यक्तियों के लिए बनाया गया है । इसे आदर पूर्वक ले जाओ और आनंद पूर्वक वहाँ रहने की व्यवस्था कर दो । पवित्र जीवन जीने वाला, परमार्थ परायण , कर्त्तव्यनिष्ठ साधक ही स्वर्ग का अधिकारी है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों के दोष–दुर्गुण छुड़ाइए

गुरुदेव ने कहा–जो व्यक्ति दूसरे को सज्जन शरीफ बनाता है, कोई रिश्वत नहीं लेता है, मिलावट नहीं करता है, दूसरों के दोष दुर्गुणों को छुड़ाकर अपने जैसा सज्जन बनाता है, वह धार्मिक है । जो व्यक्ति शुद्ध पवित्र जीवन नहीं जीता है, दूसरों को सही रास्ता नहीं बताता है तो वह कितना ही भजन करे, वह पूर्ण धार्मिक नहीं हो सकता । देवर्षि नारद भजन करते थे और लोगों को दिशा दते थे । दोष दुर्गुण छुड़ाकर सज्जन बनाते थे । धर्म का रास्ता बताते थे । धार्मिक वही है जो दूसरों के दोष दुर्गुण छुड़ाए ।

देवर्षि नारद ने रत्नाकर को दिशा दी और कहा–ये पाप क्यों करता है ? तुझे पापों का फल भोगना पड़ेगा । रत्नाकर बाल्मीकि ऋषि बन गया । प्रह्लाद को दिशा दी, भक्त प्रह्लाद बन गया ।

संत तुकाराम थे भगवान के भक्त । धर्म का प्रचार करते थे । एक दिन अपने खेत से गन्ने का गट्ठर लेकर आ रहे थे । उनकी पत्नी ने सुना कि उनके पति गन्ने का गट्ठर ला रहे हैं तो बहुत प्रसन्न हुईं। तुकाराम संत थे, रास्ते में गाँव के बच्चे मिले, तुकाराम गन्ना रास्ते में बाँटते–बाँटते घर आ गए । जब घर आए तो उनके पास मात्र एक ही गन्ना बचा था । तुकाराम की पत्नी को बड़ा गुस्सा आया और गन्ना उठाकर तुकाराम की पीठ में दे मारा । गन्ने के दो टुकड़े हो गए । तुकाराम बहुत जोर से हँसा और प्रशंसा करने लगा–आपने कमाल कर दिया, हम दो लोग थे, गन्ना एक ही था । अब दोनों का हिस्सा बराबर हो गया । पत्नी का गुस्सा शांत हो गया । जब पति का व्यवहार ऐसा देखा तो पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी हो गई । तुकाराम ने पत्नी को अपने जैसा बना लिया । धार्मिक व्यक्ति वह है जो अपने आचरण से लोगों का स्वभाव बदल देता है, उनका जीवन बदल देता है ।

गुरुदेव ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद का नाम सुना है । स्वामी श्रद्धानंद का नाम मुंशीराम था । पहले उसमें बहुत दोष दुर्गुण भरे पड़े थे । शराब पीता था । एक दिन शराब पीकर देरी से आया । धर्म पत्नी ने भोजन बनाकर तैयार कर लिया था, परंतु वह शराब के नशे में धुत्त था, घर आकर उल्टी करना प्रारंभ कर दिया, उसको होश नहीं रहा । उसकी धर्म पत्नी रातभर उनकी सेवा करती रही और उसके गंदे कपड़े जो उल्टी से खराब हो गए थे, साफ करती रही । सुबह जब श्रद्धानंद को होश आया तब उसने देखा कि उसकी धर्म पत्नी उसके पास बैठी उसकी सेवा में लगी थी । रसोई की तरफ नजर गई तो देखा, सारा भोजन रखा हुआ था । श्रद्धानंद ने अपनी पत्नी से कहा–तुमने रात को भोजन नहीं किया । धर्म पत्नी ने कहा–आप हमारे पतिदेव हैं । आपका स्वास्थ्य खराब था तो मैं भोजन कैसे कर लेती ? रात भर आपकी सेवा करती रही । श्रद्धानंद की आँखों में आँसू आ गए । उसकी सोई भाव संवेदना जाग गई । उसने निश्चय किया कि आज से कभी शराब नहीं पिऊँगा और शुद्ध पवित्र जीवन जीना प्रारंभ कर दिया । श्रद्धानंद ने लिखा कि मेरा गुरु मेरी पत्नी है, उसने मुझे मुंशीराम से श्रद्धानंद बना दिया । उसकी धर्म पत्नी ने पति के विचार बदल दिए । बेटा ! धर्म इसी को कहते हैं । दुर्भाग्य हमारे देश का, आज भजन, पूजन, पूजा पाठ करने की लकीर पीटने, बाह्याडम्बर करने वाले को ही धर्म पर चलने वाला कहते हैं । दूसरे के दूषित विचारों को बदलकर अपने जैसा सज्जन बना लेने का नाम धर्म है ।

गुरुदेव ने हमसे कहा कि बेटा ! सुकरात यूनान का एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दार्शनिक था । एक बार वह अपने घर पर था, उसके साथ उसके सहयोगी मित्र भी बैठे थे । बातचीत चल रही थी । उनकी धर्म पत्नी बड़ी गुस्से वाली थी । उसको किसी बात पर गुस्सा आया और कटु शब्दों का कोई प्रभाव न हुआ तो उसने बर्तनों का गंदा पानी सबके ऊपर डाल दिया । बैठे हुए सभी के कपड़े खराब हो गये । सभी लोग चुपचाप बैठे थे । इतने में सुकरात बोले–भाई सुना जाता है कि जो बादल गरजते हैं वे बरसते नहीं, पर आज तो बादल गरजने के साथ–साथ बरस भी रहे हैं । उनकी पत्नी गाली भी दे रही थी और गंदा पानी भी डाल रही थी, सारे लोग खिल खिलाकर हँस पड़े । इसको देखकर उसकी धर्म पत्नी को बड़ी शर्म आई और उस दिन से लड़ना छोड़ दिया । सुकरात ने अपनी धर्म पत्नी को अपने जैसा बना लिया । गुरुदेव ने कहा– अगर किसी की सास लड़ने वाली हो तो बहू को चाहिए कि उसे अपने जैसी बनाए और बहू लड़ने वाली है तो सास बहू को अपने जैसी बनाए । पति की आदत खराब है तो पत्नी उसे अपने जैसा बनाए और पत्नी की आदत खराब है तो पति उसे अपने जैसा बनाए । व्यक्तियों में दोष दुर्गण हैं तो उनको छुड़ाकर अपने जैसा सज्जन बनाना ही सबसे बड़ा धर्म कृत्य है । ईसा मसीह नगर में गए तो दुष्ट दुराचारियों के मुहल्ले में ठहर गए । नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति उनके दर्शन को आते और उनसे कहते कि आप यहाँ क्यों रुके हैं ? आप हमारे साथ चलिए, किंतु ईसा मसीह ने कहा– डाक्टर की आवश्यकता मरीजों को होती है । ईश्वर का पुत्र पीड़ितों और पतितों की सेवा के लिए आता है, उसे वहीं रुकना चाहिए । बेटा दूसरों के दूषित विचारों को बदलकर अपने जैसा बना लेना ही धर्म कर्त्तव्य है ।

गुरुदेव ने कहा–जो श्रमशील है, मेहनत करता है, पसीना बहाता, ऊँचे विचार रखता है, मौत को याद रखता है, दोष दुर्गुणों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से दूर रहता है, वही धार्मिक है । आज तिलक लगाने वाले, दाढ़ी रखने वाले, भजन पूजा पाठ करने वाले को ही धार्मिक कहते हैं । यह तभी सही है जब वे आचरण भी सज्जनता का, धर्म का करते हों ।

गुरुदेव ने आगे बताया कि जो मनुष्य समाज को ईश्वर का रूप मानकर उसकी सेवा करता है और धर्म के रास्ते पर चलता है, वह भगवान से भी बड़ा माना जाता है ।

हज यात्रा पूरी करके अब्दुल्ला बिन मुबारक कावा में सोए हुए थे । सपने में दो फरिश्तों में बात हो रही थी । एक ने पूछा- इस वर्ष हज में किसकी दुआ कबूल हुई ? दूसरे ने कहा- जिसकी दुआ कबूल हुई वह यहाँ नहीं आया । वह व्यक्ति दमिश्क का मोची अली बिन मूफिक है ।

अब्दुल्ला बिन मुबारक एक दिन दमिश्क में उस मोची के घर पहुँचे । उन्होंने पूछा-क्या तुम हज को गए थे ? मूफिक की आँखों में आँसू भर आए और सिर हिलाते हुए कहा-"मेरा मुकद्दर ऐसा कहाँ जो हज को जा पाता । जिंदगी भर की मेहनत से हज के लिए सात सौ दिरम जमा किए थे, पर एक दिन मैंने देखा पड़ौस के गरीब लोग पेट की ज्वाला बुझाने के लिए वे चीजें खा रहे थे जिन्हें खाया नहीं जा सकता । उनकी बेबसी ने मेरा दिल हिला दिया और हज के लिए जो रकम जमा की थी वह उन मुफलिसों को बाँट दी ।"

दीन दुःखियों की सहायता ही सच्ची तीर्थ यात्रा है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान भक्त के वश में

एक बार नारद जी विष्णु भगवान के पास मिलने जा रहे थे । रास्ते में उन्हें अधिक रात हो गई । वे पास के ही एक गाँव में आश्रय पाने की तलाश में पहुँचे । वहाँ उन्हें एक किसान मिला। उससे नारद जी की बातें हुईं । वह नारद जी को अपने घर ले गया । उसने उनका खूब सेवा–सत्कार किया । नारद जी बड़े प्रसन्न हुए । सुबह उन्होंने किसान से पूछा कि तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं है । किसान ने कहा आपकी कृपा से मुझे कोई कष्ट नहीं है, बस यदि मेरे कोई संतान हो जाती तो मैं संतानहीन न कहलाता । नारद जी ने उससे कहा कि मैं विष्णु भगवान से तुम्हारे लिए निवेदन करूँगा । आश्वासन देकर वे विष्णु लोक चले गए । वहाँ नारद जी ने किसान के बारे में कहा । विष्णु भगवान ने कहा कि नारद ! इस किसान को तो सात ज़न्म तक कोई संतान नहीं होगी । मैं उसके भाग्य को नहीं बदल सकता ।,नारद जी वहाँ से वापस आ गए । रास्ते में ही किसान का घर पड़ता था । वे वहाँ पहुँचे और किसान को सारी बातें बताईं । किसान ने अपने दुर्भाग्य पर संतोष कर लिया । नारद जी के जाने के कुछ ही दिनों बाद उस गाँव में एक साधु महात्मा आए । वे आवाज लगा रहे थे कि कोई मुझे एक रोटी देगा तो मैं उसे भगवान का आशीर्वाद दूँगा । किसान ने उन महात्मा को आदर पूर्वक अपने घर पर बुलाया और उन्हें भोजन कराया । उन्होंने केवल दो रोटी ही ग्रहण कीं । भोजन के उपरांत उन्होंने किसान को संतान होने का आशीर्वाद दिया और चले गए । नियत समय पर किसान की पत्नी को क्रमशः दो संतानें प्राप्त हुईं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इधर नारद जी घूमते–घूमते कुछ वर्ष बाद फिर एक दिन उसी गाँव से होकर निकले तो उन्हें उस किसान की याद आई । वे उससे मिलने पहुँच गए । घर पहुँच कर देखा तो किसान अंदर ही था, बाहर दो बच्चे खेल रहे थे । नारद जी ने किसान को आवाज दी, किसान बाहर आया और नारद जी को अंदर ले गया, स्वागत सत्कार किया । नारद जी ने बच्चों की ओर इशारा करके किसान से पूछा कि भाई ये बच्चे किसके हैं ? किसान ने कहा– हमारे ही बच्चे हैं ।

नारद जी ने जब किसान के मुँह से सारी घटना सुनी तो उन्हें विष्णु भगवान पर बहुत क्रोध आया । वे तुरंत ही विष्णु लोक के लिए प्रस्थान कर गए । वहाँ पहुँच कर उन्होंने विष्णु भगवान को सारी बातें सुनाईं और उन्हें झूठा कहा । नारद जी ने भगवान से कहा कि आपने मुझसे झूठ क्यों बोला, इसका उत्तर दो । विष्णु भगवान ने उनसे कल सुबह आने को कहा । नारद जी मान गए । दूसरे दिन सुबह भगवान ने कहा–चलो नारद हम टहलने चलते हैं, वहीं किसी स्थान पर बैठकर आपको बताएँगे ।

भगवान विष्णु नारद जी को साथ ले कर जंगल की ओर चले, कुछ दूर चलने पर एक कुटी दिखाई पड़ी, नजदीक जाने पर उन्हें एक महात्मा कुटी के बाहर हाथ में तलवार लेकर घुमाता हुआ दिखा । कुछ देर तक वह तलवार को विभिन्न तरीके से घुमाता रहा फिर वह कुटी के अंदर गया और तलवार रखकर खाली हाथ बाहर आया । नारद जी और विष्णु भगवान दूर से ही यह सब नजारा देख रहे थे । कुटी के चारों ओर अच्छे–अच्छे फलों के वृक्ष लगे हुए थे और उन पर फल भी लगे हुए थे, परंतु उस महात्मा ने पेड़ों ने नीचे पड़े सूखे पत्तों को उठाकर खाना शुरू कर दिया । नारद ने भगवान से कहा–यह तो पागल व्यक्ति मालूम पड़ता है । भगवान ने नारद जी से कहा--आओ उसके पास चलें,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उससे कुछ बातें करते हैं । नारद जी भगवान के साथ उस महात्मा के पास वेष बदलकर पहुँचे । विष्णु भगवान ने उस महात्मा से पूछा कि हे भाई ! आप इन सूखे पत्तों को क्यों खा रहे हैं ? आपके पास तो फलों से लदे हुए वृक्ष हैं । तब महात्मा ने उत्तर दिया कि मैं सूखे पत्ते अपनी भूख शांत करने के लिए खा रहा हूँ । उसने कहा कि मैं फल इसलिए नहीं खा रहा हूँ कि इन फलों से दूसरे प्राणियों पशु–पक्षी, एवं अन्य भाइयों की क्षुधा शांत होगी । तब भगवान ने कहा कि आप कम से कम हरे पत्ते ही खा लेते तो महात्मा ने कहा कि मेरी भूख तो सूखे पत्तों से ही मिट जाती है तब हरे पत्ते क्यों खाऊँ ? हरे पत्ते मैंने जानवरों के लिए छोड़ रखे हैं । जो फलों को नहीं खा सकते हैं, वे हरे पत्ते खाकर अपनी भूख शांत करते हैं । फिर भगवान ने कहा–आप अपनी तलवार बड़े विचित्र तरीके से घुमा रहे थे, उसका राज क्या है ? महात्मा के चेहरे पर क्रोध के भाव प्रकट हुए और बोला कि मेरा एक बहुत ही बड़ा दुश्मन है यदि मुझे कभी मिला तो मैं इस तलवार से उसके दो टुकड़े कर दूँगा । विष्णु भगवान ने पूछा–वह कौन है ? तब महात्मा ने उन्हें नारद जी का नाम बताया । नारद जी चूँकि अपना वेष दूसरा बनाए हुए थे, पर अपना नाम सुनते ही विष्णु भगवान के पीछे डर के मारे खड़े हो गए । भगवान ने महात्मा से पूछा कि ऐसा नारद ने आपका क्या बिगाड़ दिया जो आप उसके जान के दुश्मन बन गए हैं ।

महात्मा ने कहा–एक बार नारद मृत्यु लोक से विष्णु भगवान के पास गया तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि मृत्यु लोक में लोग बड़ा कष्ट भोग रहे हैं कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे उनके कष्ट दूर हो जाएँ । विष्णु भगवान ने नारद से कहा कि ऐसी कोई युक्ति नहीं है जो जैसे कर्म करता है उसे उसके अनुसार ही फल भोगना पड़ता है, पर नारद उनसे जिद करने लगा । विष्णु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान ने बार–बार कहा कि ऐसी कोई युक्ति नहीं है कि बिना सत्कर्म किए वे सुखी हों । नारद ने भगवान के मना करने पर भी मृत्यु लोक में प्रचारित किया कि जो भी भगवान सत्यनारायण की कथा सुनेगा या गंगा स्नान करेगा, भागवत आदि सुनेगा तो उसके समस्त दुःख दूर हो जाएँगे और वह सीधा स्वर्ग में जाएगा । तब से इस पृथ्वी पर और अधिक पापाचार बढ़ गया है । लोग पाप करते हैं और कथा सुनकर सोचते हैं कि मेरे पाप नष्ट हो गए हैं । नारद को इतना और कहना चाहिए था कि कथा स्नान आदि से प्रेरणा लेकर जीवन संमार्ग गामी बनाने पर ही पाप कटते हैं एवं स्वर्ग मुक्ति मिलती है, मात्र स्नान कथा से नहीं । बस यदि मुझे कहीं नारद दिखा तो उसे मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ । नारद जो विष्णु भगवान के पीछे खड़े हो गए थे, काँप भी रहे थे, उन्होंने भगवान विष्णु को चलने का इशारा किया । वे दोनों वहाँ से तुरंत ही चल दिए । रास्ते में विष्णु भगवान ने नारद जी को बताया कि हे नारद ! वे बच्चे इसी महात्मा के आशीर्वाद से प्राप्त हुए हैं । यह बड़ा भक्त है । भगवान को भक्त के लिए कभी–कभी नियम भी बदलने पड़ जाते हैं । गुरुदेव ने किस्सा यहीं समाप्त किया और कहा कि जो शुद्ध पवित्र जीवन जीता है, समाज की सेवा करता है, वही सच्चा धार्मिक है । मात्र भजन से काम नहीं चलता है ।

एक पुजारी नियत समय पूजा करने आता और आरती करते-करते भाव विह्वल हो जाता । घर आकर अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति कर्कश व्यवहार करने लगता । एक दिन उसका बच्चा भी साथ चला गया, पुजारी स्तुति कर रहा था कि हे प्रभु तुम सबसे प्यार करने वाले और सब पर करुणा लुटाने वाले हो । बच्चा बीच में ही बोल पड़ा-पिताजी जिस भगवान के पास इतने दिन रहने पर भी आप करुणा और प्यार न सीख सके, उस भगवान के पास रहने से क्या लाभ ? भगवान के गुणों का कीर्तन ही नहीं उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास भी करना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव मात्र का एक ही धर्म

परमपूज्य गुरुदेव से हमने पूछा कि गुरुदेव ! जो व्यक्ति भजन करते हैं, तीर्थयात्रा करते हैं, देवदर्शन करते हैं, दाढ़ी रखते हैं, भगवा वस्त्र पहनते हैं, वे सभी अपने आपको धार्मिक कहते हैं । कोई राम–नाम का जप करते हैं, तो कोई कृष्ण का । कोई किसी देवता को पूजते हैं तो कोई किसी देवी को । कोई अल्लाह के या यीशु के भक्त कहलाते हैं । सभी मत–मतांतर वाले धर्मावलंबी अपने को सच्चा धार्मिक बतलाते हैं । हमें इसका भ्रम है कि इनमें असली धर्म कौन सा है ? गुरुदेव कुछ देर चुप रहे और फिर बोले–बेटा ! तेरा प्रश्न सही है । मानव मात्र का एक ही धर्म है । जो अलग–अलग धर्म बतलाते हैं, वे धर्म नहीं संप्रदाय है । धर्म से उनका कोई संबंध नहीं है । धर्म एक ही है–मानव धर्म । हमने गुरुदेव से कहा–एक धर्म किस प्रकार है ? उसके विषय में हमको बतलाइए, जिससे हमारे मन की भ्रांतियों का निवारण हो सके ।

गुरुदेव ने बतलाया कि मानव मात्र के शरीर का एक ही धर्म है । हमें शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए । कभी कोई पशु–पक्षी बीमार नहीं पड़ता । कभी उनको डाक्टरों के पास उपचार कराते देखा है ? हमने कहा–नहीं देखा गुरुदेव । पशु–पक्षी बीमार पड़ते भी हैं तो वे ही जानवर बीमार पड़ते हैं, जो पालतू होते हैं, मनुष्य के संपर्क में रहकर अप्राकृतिक खाद्य खाते और जीवन जीते हैं । स्वच्छंद, जंगली प्राणियों की स्वस्थता का राज है–प्राकृतिक जीवन । यदि उनकी पाचन प्रणाली ठीक नहीं है तो वे जब तक यह तंत्र सबल–स्वस्थ नहीं हो जाता, जल उपवास करते हैं । मानव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को ज्वर आ जाए या उल्टी–दस्त होने लगें तब भी ठोस भोजन करना छोड़ते नहीं हैं, जबकि हमें यह शिक्षा प्रकृति के इन अनुचरों से लेनी चाहिए कि ऐसी घड़ी में पर्याप्त जल के अतिरिक्त कुछ न लिया जाए तथा खुली स्वच्छ वायु में पर्याप्त विश्राम किया जाए । प्रकृति के सफाई कार्य में सहयोग किया जाए । जिससे शरीर का विजातीय द्रव्य बाहर निकल सके । प्रकृति की पुकार को अनसुना कर आज का मानव, विज्ञान की अंधी दौड़ में लगा हुआ है और समूची मानव जाति के अस्तित्व को संकट में डाल रहा है ।

आज का आदमी आलस्य और असंयम के कारण बीमारी का शिकार हो रहा है । राजा अजातशत्रु एक बार शिकार खेलने गए । जंगल में ही रात हो गई, अतः रास्ते में ही एक गाँव में उन्हें ठहरना पड़ा । गाँव वालों ने राजा की बड़ी सेवा की, सुबह राजा ने जाते समय प्रसन्न होकर उस गाँव में एक अस्पताल बनवाने की घोषणा कर दी और राज दरबार पहुँचकर मंत्रियों को उस गाँव में अस्पताल का भवन निर्माण करने का निर्देश दिया । भवन निर्मित हो चुका, चिकित्सकों की नियुक्ति कर दी गई । औषधियाँ इत्यादि उपचार सामग्री उपलब्ध करा दी, परंतु उस अस्पताल में एक भी मरीज नहीं आया । चिकित्सकों को इस बात की बड़ी हैरानी हुई । अस्पताल खाली पड़ा रहा । कुछ महीनों बाद राजा ने सोचा, चलकर उस अस्पताल की व्यवस्था देखनी चाहिए । राजा पहुँचे, देखा उस अस्पताल में एक भी मरीज नहीं है । महिला वार्ड, पुरुष वार्ड दोनों ही खाली पड़े थे । राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया । राजा ने चिकित्सकों से पूछा–यहाँ पर मरीज भर्ती क्यों नहीं किए गए हैं ? चिकित्सकों ने कहा–राजन् ! यहाँ पर कोई भी मरीज आज तक आया ही नहीं है । राजा ने ग्राम प्रमुख को बुलाकर उनसे पूछा तो राजा यह सुनकर अवाक् रह गए कि इस गाँव में कोई बीमार ही नहीं पड़ता फिर इलाज का प्रश्न ही नहीं उठता !

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब लोग संयमी जीवन, प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते हैं । कड़ी भूख लगने पर ही भोजन ग्रहण करते हैं, चोकर युक्त आटे की रोटी खाते हैं । भोजन खूब चबा–चबाकर ही करते हैं । प्रसन्न चित्त रहते हैं । कभी ईर्ष्या, द्वेष, लोभ की दुर्भावना नहीं रखते । चिंता और मानसिक तनाव से दूर रहते हैं । पेट का एक हिस्सा हवा के लिए खाली रखते हैं । मिर्च–मसाले तथा तली–भुनी चीजें नहीं खाते हैं । कभी भी मांस–मछली आदि नहीं खाते हैं । सात्विक–सुपाच्य आहार लेते हैं । बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, गुटका, शराब इत्यादि हानिकारक, विषैली चीजों का उपयोग नहीं करते हैं । पर्व त्यौहारों पर भी सादा भोजन ही करते हैं । अब गाँव वालों के आम स्वास्थ्य का रहस्य राजा की समझ में आ गया और संपूर्ण राज्य में नशाबंदी की घोषणा कर दी गई ताकि प्रजा में सब स्वस्थ रहें ।

परमपूज्य गुरुदेव ने इस कथानक के माध्यम से हमें बताया कि शरीर को स्वस्थ रखना हमारा धर्म है । सबको संयमी जीवन जीना चाहिए । गुरुदेव की बातें सुनकर हमारी आँखें खुल गईं और उस दिन से हमने स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करना प्रारंभ कर दिया। आज हमारी आयु ९० वर्ष की होने जा रही है, तब भी हम स्वस्थ हैं, सक्रिय हैं ।

परमपूज्य गुरुदेव ने कहा–बेटा ! हमने व्यक्ति के शरीर का धर्म बताया अब आपको हम परिवार के प्रति धर्म बताते हैं । परिवार को जो संस्कारवान बनाता है, उसके घर में सुख–शांति का वातावरण बनता है । जो बच्चों को सुसंस्कारी नहीं बना सकता, वह धार्मिक हो ही नहीं सकता है। भगवान राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को राजा दशरथ ने संस्कारवान बनाया था । सभी संस्कार समय पर कराए थे । हमारी संस्कृति में परिवार को नर रत्नों की खान कहा गया है । भरत, ध्रुव, प्रह्लाद, बुद्ध, गांधी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनोबा, विवेकानंद जैसी महान विभूतियाँ परिवार रूपी खान की ही देन हैं । देश, धर्म और संस्कृति की सेवा के लिए जो चलते हैं, वहाँ महान आत्माओं का सृजन होता है । गर्भवती नारी को क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि मनोविकारों से बचना आवश्यक है । सीताजी के गर्भ में पल रहे लव–कुश को गर्भावस्था में सुसंस्कार मिलें, इसी मूल प्रयोजन के लिए वाल्मीकि आश्रम में सीताजी को भेजा था । परिवार के हर सदस्य की यह जिम्मेदारी है कि गर्भवती की मनःस्थिति अनुकूल बनी रहे, इस प्रकार आत्मीयता, स्नेह–सौजन्य का व्यवहार करें ।

पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत और विवाह संस्कारादि परिवारों में विधिवत् संपन्न कराए जाने चाहिए । घर–घर में इन संस्कारों के माध्यम से लोकशिक्षण दिया जाना परमावश्यक है । आज की पीढ़ी में फैशन परस्ती, सिनेमा, व्यसन, ठाठ–बाट, फिजूलखर्ची का घुन लग रहा है, इनसे बचाने का धर्म हर परिवार का है । परिवार में ही बालकों को बाल्यावस्था से महानता के रास्ते पर नहीं चलाया तो बाद में इनकी दिशा मोड़ पाना कठिन होता है । जो व्यक्ति अपने ही बच्चों को बुरे रास्तों पर चलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, वे आत्मघाती हैं । पूज्यवर ने एक दृष्टांत सुनाया । एक अपराधी को फाँसी की सजा हो गई । फाँसी देने से पूर्व जज ने उससे अंतिम इच्छा पूछी तो उस अपराधी ने कहा–मुझे अपनी माँ से बात करनी है । उसकी माँ को बुलाया गया, माँ रोती हुई अपने बेटे के पास पहुँची । बेटे ने कहा–माँ पास आओ, एक आवश्यक बात कान में बतानी है । माँ के निकट जाते ही उस अपराधी ने माँ की नाक दाँतों से काट ली, माँ रो रही थी, अपराधी ने कहा–भाइयो ! आप सोच रहे होंगे कि यह कितना निर्दयी है, जल्लाद है । फाँसी पर चढ़ रहा है और माँ की नाक काट रहा है, परंतु आज मेरा यह हाल इसी माँ के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ है । जब मैं छोटा था और पढ़ने जाता था तब एक दिन एक पैसा चुराकर लाया था । माँ ने रख लिया था । उसके बाद धीरे–धीरे बड़ी–बड़ी चोरी करने लगा । माँ ने मुझे रोका नहीं । मैं डकैत बन गया । आज फाँसी के तख्ते पर खड़ा हूँ । जिस दिन एक पैसा चुराकर लाया था, उस दिन माँ हमको चार तमाचा लगाती और मास्टर के पास ले जाती और पैसा वापस करा देती तो न मैं डकैत बनता और न ही आज मुझे प्राण दंड मिलता ।

माता–पिता का धर्म है कि बच्चों को ऐसी गलती करने ही न दें, जिससे वे पथ भ्रष्ट हों । एक माँ बच्चे को महापुरुष बना सकती है । आज बच्चे तो अधिक पैदा करते हैं, परंतु उन्हें संस्कारवान बनाने पर ध्यान नहीं देते हैं । नई पीढ़ी में सज्जनता, शालीनता, सदाशयता, अनुशासन, व्यवहार कुशलता आदि गुणों के घटने का कारण बच्चों को सुसंस्कार न देना है । माता–पिता का धर्म है कि बच्चों को नशाखोरी, अभक्ष्य भोजन, झूठ बोलना इत्यादि बुरी आदतों से बचाएँ ।

समाज के प्रति भी धर्म है कि समाज को कुरीतियों से बचाएँ । जो माला घुमाता है, परंतु समाज की सेवा नहीं करता, वह धार्मिक नहीं हो सकता । समाज की सेवा सबसे बड़ी सेवा है । आज समाज में दहेज, धूमधाम की शादियाँ, मृतक भोज, नशाखोरी, फैशनपरस्ती, रिश्वतखोरी, बेईमानी, चोरी, मिलावट बढ़ रही है । इनसे समाज की अवनति हो रही है । आज समाज निर्माण की आवश्यकता है । समाज की सेवा के लिए अपने समय का एक अंश नियमित निकालना चाहिए । सद्ज्ञान वितरण के लिए समय और धन का एक अंश नियोजित करना इत्यादि विविध रचनात्मक और सुधारात्मक प्रयोजनों में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करना चाहिए । आदर्श समाज ही सुख, शांति एवं प्रगति का आधार है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म–मानव जीवन की परम आवश्यकता

'धृ' धातु में मन कृदन्त लगाकर धर्म शब्द बना है । इसका अर्थ होता है धारण किए जाने वाला, आचरण करने योग्य ।

'धार्यते जनैरिति धर्मः' मनुष्यों द्वारा जिसे धारण किया जाता है अर्थात् मनुष्य मात्र जिसे अपने आचरण में लाए वह ही धर्म कहलाता है । धर्म को धारण करने वाला, धर्म का अपने जीवन में आचरण करने वाला, धर्म के आधार पर अपने जीवन को जीने वाला व्यक्ति धार्मिक कहलाता है । इस दृष्टि से धर्म वह होगा जिसका आचरण करने से, जिसको धारण करने से मनुष्य जीवन सुव्यवस्थित रूप से चलता रहे व जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने निर्दिष्ट लक्ष्यानुसार जीवन निर्वाह करता हुआ मनुष्य जीवन को सार्थक बनाए ।

धर्म को लोक रक्षक भी कहा गया है । जब तक धर्म की अधिकता रहती है, तब तक धरती पर स्वर्ग जैसी परिस्थितियाँ रहती हैं । लोक या प्रजा की रक्षा करने वाला तत्व धर्म है । शास्त्र यह भी कहता है कि धर्मो रक्षति रक्षितः । धर्म की जो रक्षा करता है, धर्म उसे पूरा संरक्षण प्रदान करता है । धर्म से न केवल मानवीय जीवन का उत्कर्ष होता है अपितु सामाजिक सुव्यवस्था भी बनी रहती है । जब–जब धर्म का पतन होता है भगवान को स्वयं स्थिति परिवर्तन के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं । यह प्रयत्न ही अवतारी क्रिया–कलाप कहलाता है । स्रष्टा का आश्वासन धर्म की रक्षा एवं उत्थान के लिए सदैव ही रहा है एवं रहेगा । धर्म क्या है इस तथ्य पर जन सामान्य से लेकर ऋषि महर्षियों ने अपने–अपने ढंग से धर्म की परिभाषा को प्रस्तुत किया है, परंतु मूल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना एक ही है । मानव जीवन के समग्र कल्याण एवं विकास के कर्त्तव्य एवं आचरण, बस इसी तथ्य को केंद्रित कर समस्त व्याख्यायें हुई हैं । मनुस्मृति कहती है–वेद ही धर्म के मूल हैं । इसका आशय है कि वेदों में ही धर्म का वास्तविक स्वरूप समाया हुआ है । वेद का संदेश है–**कृण्वंतो विश्वमार्यम्** अर्थात् विश्व के सभी लोग आर्य बनें यानि श्रेष्ठता को सभी लोग अपनाएँ । मात्र यही धर्म है, इसी को पाने की प्रार्थना परम श्रेष्ठ मंत्र जिसे हम गायत्री महामंत्र के नाम से जानते हैं, में निहित है । गायत्री मंत्र का सार है, श्रेष्ठता को धारण करना । स्वामी विवेकानंद ने अपनी पुस्तक **राज योग की टीका** में इसी तथ्य को व्यक्त करते हुए कहा है–धर्म का लक्ष्य मनुष्य में देवत्व या ईश्वरत्व की उपलब्धि ही है ।

धर्म की व्याख्या करते हुए एक विचारक ने कहा है–धर्म ही वह आधार है जो मनुष्य को पशु से अलग करता तथा सही अर्थों में मनुष्य बनाता है । प्रसिद्ध विचारक जी. टी डब्ल्यू. पैट्रिक ने अपनी पुस्तक **इंटरोडक्शन टू फिलासफी** में लिखा है कि अधिकांश व्यक्ति धर्म का नाम लेते ही मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, गुरुद्वारों, प्रार्थनाओं, शास्त्रों आदि का स्मरण करने लगते हैं तथा धार्मिक क्रिया कृत्यों को ही धर्म का स्वरूप मान लेते हैं । जबकि वे धर्म नहीं मात्र कलेवर हैं । गुण कर्म स्वभाव को आदर्श बनाने की विधा धर्म है । धर्म को कर्त्तव्य परायणता के पर्याय के रूप में भी परिभाषित किया जाता रहा है । जहाँ कर्त्तव्यपरायणता है वहीं धर्म है । धर्म शब्द के लिए अंग्रेजी में रिलीजन शब्द आता है । इस संबंध में प्रसिद्ध विद्वान बैबूर ने अपनी पुस्तक **हिन्दुज्म एट–ए ग्लांस** में लिखा है कि रिलीजन शब्द का अर्थ एक विश्वास व पूजा विधि है । किसी समुदाय विशेष के सिद्धांतों में विश्वास करना तथा उस समुदाय द्वारा निर्दिष्ट विशेष पूजा अनुष्ठान आदि का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन करना ही पश्चिम की दृष्टि में धार्मिक कहे जाने वाले व्यक्ति के लिए पर्याप्त है । अतः स्पष्ट है कि **रिलीजन** शब्द धर्म के समग्र स्वरूप को अभिव्यक्त नहीं करता । रिलीजन शब्द से ऐसे संकुचित व अपूर्ण भाव का बोध होता है कि उसमें धर्म तत्व समाहित नहीं होता । धर्म का अनिवार्य तत्व उसकी उदारता महानता सार्वभौम सत्ता में निहित है । जबकि रिलीजन में इस तरह के भाव प्रकट नहीं होते । धर्म मानव समाज और संस्कृति का मूल आधार है । इसी आधार भूत तत्व के आधार पर संसार का कल्याण टिका हुआ है । विश्व का कल्याण व मानव मात्र का शुभ धर्मवेष्ठित आचरणों में ही निहित है । अपने इस सार्वभौम स्वरूप के कारण पूरे विश्व का धर्म तो एक ही है जिसे विश्व धर्म, मानव धर्म कुछ भी संज्ञा दी जा सकती है । सामान्यतया धर्म के इस सार्वभौम स्वरूप की असीमता को न समझ कर मनुष्यों ने धर्म को अनेकों संप्रदायों, जातियों, वर्गों द्वारा पालन की जाने वाली उपासना पद्धति, पूजा पद्धति, कर्मकांड विधि आदि को धर्म समझ लिया है । जब कि धर्म एक अपरिवर्तनशील शाश्वत सत्ता है । धर्म सार्वभौम शक्ति है जिसका लक्ष्य **सर्वेभवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया** है ।

वास्तव में धर्म तो एक ही है । धर्म के लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए जो अलग–अलग पद्धतियाँ प्रचलित हैं वे धर्म नहीं संप्रदाय हैं । धर्म मानो महासागर है और संप्रदाय नदियाँ हैं जो विभिन्न दिशाओं और स्थानों से आकर महासागरमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विलीन हो जाती हैं । धर्म का लक्ष्य है **सत्यम् शिवम् सुंदरम्** अर्थात् ऐसे आचरण जो सत्य हों, शुभ हों, कल्याण कारक हों । प्रसिद्ध विचारक वाल्टेयर ने अपने ग्रंथ **थीष्ट** में लिखा है कि धर्मपरायणता का अर्थ है–एक ईश्वरीय सत्ता में विश्वास, ऐसा विश्वास जो मनुष्य में ही नहीं बल्कि हर प्राणी के प्रति प्रेम और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीयता की भावना उभारता हो ।

मानसकार लिखते हैं–परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परहित की भावना ही सामाजिकता का श्रेष्ठतम आधार है । व्यक्ति को स्वयं के समग्र विकास के लिए संकीर्णता को छोड़कर सामाजिकता को अपनाना ही पड़ेगा । सामाजिकता के ही आदर्श स्वरूप से समग्र समाज जिसमें हर मानव सम्मिलित है उसका श्रेष्ठतम विकास हो सकेगा । अतः परहित के कार्य के रूप में धर्म को मानना और जानना विवेक पूर्ण निर्धारण है ।

नारायणोपनिषद् में कहा गया है धर्म ही संपूर्ण विश्व को प्रतिष्ठित और स्थिर करने वाला है । महाभारत में धर्म की परिभाषा इस तरह की गई है–धारण करने से इसका नाम धर्म है । धर्म ही प्रजा को धारण करता है । महाभारत में ही शांति पर्व २६१.९ में धर्म को ठीक–ठीक समझने वालों के बारे में कहा गया है–हमें दूसरों को अपने जैसा ही समझना चाहिए । जो अपने मन, वचन, कर्म से निरंतर दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं, वही धर्म को ठीक–ठीक समझते हैं ।

विश्व प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक **एन इंट्रोडक्शन टू दि साइंस ऑफ रिलीजन** में धर्म की विवेचना करते हुए लिखा है–धर्म अंतरात्मा की पुकार है जो तर्क और जानकारियों से प्रभावित तो करती है, पर उससे प्रभावित नहीं होती । उसका आधार अतीन्द्रिय है, दिव्य चेतना ही हमें धर्म निष्ठा अपनाने के लिए प्रेरित करती है । पास्कल ने कहा है–हृदय के विवेक से धर्म का उदय होता है ।

पुरुषार्थ चार होते हैं । उनमें धर्म को पहला स्थान दिया गया है । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों में प्रधानता धर्म की है । धर्म नींव है तो मोक्ष शिखर । शिखर निर्माण के पूर्व नींव का निर्माण आवश्यक है । मानव का सारा विकास उसके सद्गुणों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण संभव हुआ है । प्राचीन काल में मानव ने पशु जीवन से ऊपर उठना प्रारंभ किया तो उसमें सद्भाव सद्गुणों का उभार धर्म के रूप में आया जिसने मानव में दिव्यत्व विकसित करना प्रारंभ किया । धर्म ही सुख कारक है । धर्म ही शक्ति का वास्तविक स्रोत है । धर्म क्या है, अधर्म क्या है ? इस विषय पर बहुत विवाद रहा है । धर्म जितना पुराना है, विवाद भी उतना ही पुराना है । ऐसे में धर्म को क्या समझा जाए ? धर्म को कैसे जाना जाए ? इसका समाधान करते हुए महाभारतकार ने लिखा है कि तर्क की कोई सीमा नहीं है । श्रुतियाँ भी अनेक प्रकार की हैं जो परस्पर विरोधी प्रतिपादन करती दिखती हैं । किसी भी ऋषि का वचन पूर्ण रूप से प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है । तो धर्म को कैसे जाने ? आगे समाधान दिया है कि **धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्** अर्थात् धर्मतत्व तो हृदय की गुहा में स्थित है । दैवीय गुण ममता, करुणा, दया समता, आत्मीयता, पवित्रता, प्रखरता, कर्त्तव्यपरायणता आदि ही धर्म के वास्तविक तत्व हैं । जो कम अधिक मात्रा में हर हृदय में रहते हैं । इन्हीं को जीवन में प्रयोग किया जाना वास्तविक धर्माचरण है । महाजनो एन गतः स पंथा । महाजन अर्थात् महापुरुष इसी पथ पर चला करते हैं ।

पाश्चात्य जगत् के प्रसिद्ध विचारक जान केअर्ड भी कुछ ऐसा ही मत रखते हैं । उन्होंने यह स्वीकार किया है कि धर्म हृदय की वस्तु है । भले ही व्यक्ति पूजा पाठ के आचरण न करता हो, किंतु हृदय की सत्प्रेरणाओं पर चलकर वह सच्चा धार्मिक हो सकता है । वे लिखते हैं--यह आवश्यक नहीं कि धर्म के सिद्धांतों को रूढ़िवादी अर्थों में लिया जाए क्योंकि कितने ही व्यक्ति ऐसे हो सकते हैं जो इसमें विश्वास न करते हों, किंतु धर्म की जो विशेषताएँ एक धार्मिक व्यक्ति के अंदर होनी चाहिए, वे उनके अंदर होती हैं । उनकी विचारणा और क्रिया कलापों में उच्चस्तरीय आदर्शों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं सिद्धांतों का समावेश होता है ।

धर्म का अर्थ कर्त्तव्य मानकर समाज के वर्ग विशेष का धर्म माना गया है । जैसे–बच्चों का धर्म है–माता–पिता की आज्ञापालन एवं अपने शारीरिक मानसिक क्षमता के विकास का पूर्ण प्रयास । माता–पिता का धर्म है--बच्चों को सुसंस्कृत, स्वावलंबी और प्रगतिशील बनाना । शिष्य का धर्म है–गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित होकर उन्हें अपने व्यक्तित्व में साकार कर दिखाना तो गुरु का धर्म है शिष्य को अपने जैसा बनाने का प्रयत्न अपनाना । गृहस्थ का धर्म है–अन्य आश्रमों में लगे हुओं को आवास, भोजन और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति उपलब्ध कराना । इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि के धर्म भी गीता, मनु स्मृति आदि ग्रंथों में बताए गए हैं । यहाँ धर्म का आशय कर्त्तव्य से ही है । जिसका जिस समय का जो कर्त्तव्य हो, वह उचित से उचित रूप में पूरा करें । यही उसके लिए धर्म है । इसी को इंगित करते हुए गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं–**स्वधर्मे निधनं श्रेयः, पर धर्मो भयावहः** अर्थात् अपने धर्म पालन में मृत्यु पाना भी श्रेयस्कर है । धर्म खोकर जीना भयावह है , महान कष्टदायी है । आदि शंकराचार्य के भाव भी धर्म के आचरण पक्ष–कर्त्तव्यपक्ष को समर्थन देते हैं । गीता भाष्य में उन्होंने लिखा है जो इस जगत की स्थिति का कारण एवं प्राणियों के अभ्युदय और मोक्ष का साक्षात् हेतु है, श्रेय के अभिलाषी ब्राह्मण आदि वर्ण और आश्रम वाले लोग जिसका आचरण करते हैं, उसका नाम धर्म है । ऋषियों मनीषियों विद्वानों ने धर्म की परिभाषा करने, उसे अधिकाधिक रूप से स्पष्ट करने के अपने प्रयास किए हैं । मनु महाराज ने धर्म को लक्षणों सहित इस तरह बताया है ।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म लक्षणम् ॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थात् धृति (धैर्य, संतोष, आत्मावलंबन) क्षमा (औचित्य के प्रति उदारता) दम (मनः संयम) अस्तेय (न्यायपूर्ण जीवन) शौच (बहिरंग व अंतरंग की पवित्रता) इंद्रिय निग्रहः (इंद्रियों के अधोगामी प्रवाह को रोकना) धी (विवेक बुद्धि) विद्या (आत्मज्ञान, पारलौकिक फल वाले सत्कर्मों में प्रवृत्ति) सत्य (मन वचन कर्म से व्यक्ति का शुद्ध होना व सत्य बोलना) अक्रोध (मानसिक समस्वरता, आत्म नियंत्रण, आवेश में न आना) ये दस लक्षण धर्म के हैं । पूर्व मीमांसा में जैमिनी मुनि ने धर्म का लक्षण प्रेरणा को माना है अर्थात् अपनी अवस्था उच्चतर करने के लिए जो आंतरिक स्फूर्ति होती है, वह प्रेरणा है । जब यह प्रेरणा मन में उत्पन्न हो जाती है तब मनुष्य कर्म के लिए प्रवृत्त होता है और अपनी उन्नति में सफल होता है । यह सब जिस प्रेरणा से होता है, वह धर्म की प्रेरणा है ।

परम पूज्य गुरुदेव से हमने धर्म के स्वरूप के बारे में सविस्तार जानना चाहा तब उन्होंने हमें बताया कि धर्म तत्व बहुत ही गूढ़ है । इसका वास्तविक स्वरूप तो परिष्कृत बुद्धि एवं हृदय से अनुभव में दिखता है फिर भी यदि तुम्हारी बहुत ही जिज्ञासा है तो धर्म का वास्तविक स्वरूप ध्यान से सुनो । धर्म का प्रथम चरण है– सत्य । आज सत्य के बारे में लोगों की विभिन्न मान्यताएँ हैं । कोई सत्य के रूप में कुछ मानता है तो कोई कुछ । वेदांत कहता है कि ''ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या ।'' अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है । ब्रह्म समर्पित भावनाएँ, विचारणाएँ एवं क्रियाएँ ही सत्य हैं क्यों कि वही वास्तविक है , वास्तविकता ही सत्य है तथा जो सांसारिकता से जुड़ी चीजें हैं, वे सब असत्य हैं । सांसरिकता अर्थात् अज्ञान, मोह, भ्रम, संशय, लिप्सा, वासना, तृष्णा भरी जीवन व्यवस्था । यदि हमें धर्म को अपनाना है तो सर्वप्रथम यह तथ्य अनिवार्य रूप से स्वीकार करना होगा कि सत्य ही धर्म का प्रथम आधार है । सत्यानुयायी आस्तिक होगा, ईश्वर को मानेगा, कर्मफल स्वीकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करेगा, पुनर्जन्म को महत्व देगा, मर्यादाओं को पालेगा, वर्जनाओं से बचेगा । जो सत्य को महत्व देगा वह आत्मा–परमात्मा को महत्व देगा । भगवान को सत्यनारायण कहा जाता है । सत्य ही नारायण है । सत्य ही सर्वथा प्राप्त करने पूजने और अपनाने योग्य है । सत्य की महत्ता में उपनिषद कहता है–सत्यमेव जयते । सत्य की महत्ता सरल भाषा में कबीर व्यक्त करते हैं ।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ॥

जो जैसा है उसे वैसा ही जानना, सत्य को जानना है । उसे वैसा ही मानना सत्य मानना है । उसे वैसा ही अपनाना है सत्य अपनाना है । सत्य केवल वाणी से बोलने तक सीमित नहीं है । सत्यं ब्रुयात्, प्रियं ब्रुयात् । कहा गया है सत्य बोलना चाहिए, सच्चाई का व्यवहार करना चाहिए । सच्चाई की भावना विचारणा रखनी चाहिए, साथ ही आवश्यकता पड़ने पर सत्य का प्रयोग विवेक के साथ करना चाहिए । सत्य का स्वरूप छिपाने वाले तीन आवरण भ्रम, स्वार्थ और आग्रह कहे गए हैं । भ्रम हो जाने पर रस्सी साँप दिखती है । स्वार्थ आ जाने से असत्य ही ग्रहणीय हो जाता है । आग्रह बने रहने पर सत्य प्रवेश ही नहीं ले पाता । ये तीनों चीजें सत्य प्राप्ति में बाधक हैं । भ्रम के अंतर्गत जानकारी का अभाव, एकांगी जानकारी गलतफहमियाँ एवं तत्काल के आकर्षण आदि प्रकरण आते हैं । स्वार्थ में औचित्य को छोड़कर अपने पराए का भाव, व्यापक हित की जगह सीमित का लाभ, दूसरे की प्रतिभा जैसी विभूतियों पर अपनी छाप डालना आदि सम्मिलित रहते हैं, जिसे संकीर्णता भी कह सकते हैं । आग्रह के अंतर्गत परंपरावश, अभ्यास वश, भय वश, प्रमादवश, अहंकारवश दूसरे पक्ष को न देखने की प्रवृत्तियाँ आती हैं, इसे दुराग्रह भी कह सकते हैं ।

ये सभी सत्य से दूर रखने वाली वृत्तियाँ हैं । सत्य सही रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से समझने–जानने के लिए विवेक की आवश्यकता पड़ती है । विवेक धर्म का दूसरा तत्व है । जिसके सहारे सत्य को जाना एवं अपनाया जाता है । पूज्य गुरुदेव ने एक कहानी सुनाई । उन्होंने कहा कि मात्र शब्दों की सच्चाई फरेब है । एक फल वाले की दुकान पर तीन उचक्के खड़े थे, उनमें से एक ने मालिक की आँखें बचाकर एक बड़ा फल चुराया और चुपके से साथी के हवाले कर दिया। पकड़े जाने के भय से उसने तीसरे की ओर खिसका दिया । जब दुकानदार ने उनसे सच–सच बताने को कहा तो पहले ने कहा–मेरे पास फल नहीं है । दूसरे ने कहा–न तो मैंने उठाया न मेरे पास फल है, तीसरे ने कहा–मैंने फल नहीं उठाया । तीनों सच बोल रहे थे, पर तीनों ही झूठे थे ।

सैनिक रक्षा प्रणाली के गुप्त सूत्र, ठिकाने आदि दुश्मन को बताए तो यह सब विवेकहीनता ही होगी । ऐसे में सत्य श्रेयपूर्ण न होकर घोर अहितकर बन जाएगा जो कि अभीष्ट नहीं है । बोला कुछ जाए और किया कुछ जाए, इसी को पाखंड कहते हैं । यदि धर्म अपनाया है तो सत्य अपनाना पड़ेगा और सत्य अपनाना है तो पाखंड को छोड़ना ही होगा । गुरुदेव ने कहा–सत्य और विवेक के सम्मिलन से समझदारी का गुण पैदा होता है । समझदारी से किया गया कर्त्तव्य धर्म बन जाता है । एक व्यक्ति अपने तीन बच्चों को किसी विचारशील व्यक्ति के पास ले गया और बोला–इन तीनों के भविष्य और गुण बताइए । विज्ञ व्यक्ति ने तीनों को दो–दो केले दिए । एक ने छिलका उतार कर सड़क पर फेंक दिया, दूसरे ने कूड़े दान में डाल दिया और तीसरे ने छिलका उतारकर छिलका गाय को खिलाया । भविष्य वक्ता ने कहा–पहला मूर्ख, दूसरा बुद्धिमान और तीसरा संत बनेगा । तीनों की परख उनकी समझदारी से ही हुई । व्यक्ति समझदार बनकर ही धर्म को अपना सकता है, सही कार्य कर सकता है अन्यथा धर्म के नाम पर लड़ेगा, लड़ाएगा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मरेगा, मारेगा, मिटेगा और मिटाएगा । सारा का सारा वह अनर्थ कारी कृत्य कर डालेगा, जिनका धर्म से काई संबंध नहीं है । यदि मनुष्य समझदारी अपनाता, मानव धर्म को महत्व देता तो संप्रदायों को लेकर भेद–भाव, जलन, कुढ़न, ईर्ष्या, द्वेष न पैदा करता । आज धर्म के कारण कितना विलगाव पैदा हुआ है । यदि समझदारी के साथ धर्म अपनाया गया होता तो सुख–शांति का दिव्य वातावरण बन गया होता । सत्य और विवेक से परे धर्म, धर्म नहीं धर्म की विकृत लाश है जो किसी भी काम आने की नहीं । जिसे अपनाने पर बदबू और सड़न के अलावा कुछ भी मिलने का नहीं । पूज्य गुरुदेव ने धर्म के आधारभूत तथ्य सत्य, विवेक पर प्रकाश डालते हुए आगे कहा कि धर्म के नाम पर जो कुछ उलटा–सीधा उपयुक्त अनुपयुक्त चल रहा है उसे आँख मूँद कर स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए बल्कि विवेक का प्रयोग करते हुए औचित्य का ही वरण करना चाहिए । मनुष्य को राज हंस की तरह नीर–क्षीर अलग करना चाहिए । जो उत्कृष्ट है, उसी को ग्रहण करना चाहिए । हममें हंस और चातक की वृत्ति होनी चाहिए । हंस मोती चुगता है कीड़े नहीं खाता, चातक भी स्वाति की बूँदें ही ग्रहण करता है अन्यथा प्यासा भी रह जाता है । धर्म के साधक को इतना नैष्ठिक बनना आवश्यक होता है । वे हमेशा कहते थे कि कोई बात इसलिए मत मान लो कि किसी महापुरुष ने कहा है, कि किसी ग्रंथ में लिखा है, किसी महामानव ने अपनाया है, उसे मानने वाले बहुत अधिक हैं बल्कि अपने विवेक की कसौटी से परखो, यदि उचित लगे तो अपनाओ, भले ही उसके समर्थन में कोई न खड़ा हो ।

जाके प्रिय न राम वैदेही ।
तजिए ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।
तज्यौ पिता प्रह्लाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी ॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि लोक मंगल के कार्यों में अड़चन डालने वाले अपने घनिष्ठ से घनिष्ठ लोग भी हों तो उन्हें छोड़ना ही चाहिए एवं विवेक तथा दूरदर्शिता का सहारा लेकर श्रेय पथ पर चलना चाहिए । बाजश्रवा ऋषि के पुत्र उद्यालक ने विश्वजीत यज्ञ किया । ऋत्विजों को दक्षिणा के रूप में ऐसी गाएँ देने लगे जो जराजीर्ण चलने में असमर्थ, गर्भधारण करने, दूध देने में असमर्थ हो चुकी थीं । बालक नचिकेता को पिताजी द्वारा धर्म के नाम पर किया जा रहा यह कार्य अधर्म सा लगा । उसने विवेक से सोचा कि ऐसी गौएँ तो ब्राह्मणों के ऊपर भार बन जाएँगी, इनको तो हमारे पास ही रहना चाहिए । इनकी अच्छी सेवा होनी चाहिए । ब्राह्मणों को अच्छी गायें देनी चाहिए । बालक ने अपने पिता से अपनी बात कह दी । पिता बालक की समझदारी से खुश नहीं हुए बल्कि अपने कार्यों में हस्तक्षेप मानकर रुष्ट होते हुए यमलोक जाने को कहा । नचिकेता को औचित्य के समर्थन में रहना ही उपयुक्त लगा । वह अपनी बात पर अड़ा रहा । यम देवता उससे प्रभावित हुए एवं लोक मंगल कर सकने में समर्थ पात्र जानकर अनेक तरह के अनुदान एवं वरदान देकर विदा किया ।

ऋषि दयानंद धर्म जागरण के कार्य में लगे । उन्होंने धर्म के नाम पर पाखंड रचने वालों को बहुत समझाया फिर भी जब बात बनती नहीं दिखाई दी तो रूढ़िवादिता, पौंगापंथी के विरुद्ध बगावत की एवं वैदिक मान्यताओं के आधार पर धर्म के प्रचार–प्रसार पर बल दिया । पूज्य गुरुदेव इलाहाबाद की एक घटना सुनाते हुए बोले कि एक बार वे कुंभ मेले में गए, वहाँ लाखों की भीड़ थी । एक व्यक्ति को स्नान करने की इच्छा हुई । उसका अपना कोई स्थान नहीं था सो सामान कहाँ रखे । उसने बालू में सामान गाढ़ दिया । ऊपर से एक वेदी बना दी, फूल इत्यादि स्थान की पहिचान के लिए रख दिए, एक झंडी भी लगा दी । वह स्नान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने गया कुछ लोगों ने वेदी बनाते और फूल, झंडी आदि लगाते देखा तो लगा कि यहाँ का कोई विशेष धार्मिक कृत्य है । सारे लोग वैसी ही वेदी बनाने लगे, फूल झंडी लगाने लगे । जब वह व्यक्ति स्नान करके आया तो देखा कि वहाँ कई वैसी ही वेदियाँ बनी हुई थीं और उन पर फूल एवं झंडियाँ लगी हुई थीं । वह बड़े असमंजस में फँस गया, किस वेदी को हटाए, किसके नीचे अपना सामान खोजे । उसने बहुत सा प्रयास किया, पर उसकी वाली वेदी मिली नहीं । कई वेदियों को खोद डाला, निराश होकर जन सामान्य की इस तरह की मूर्खता को कोसता घर चला आया ।

धर्म के रूप में कौन किसलिए कब क्या कर रहा है, इसे सही ढंग से न समझकर अन्धानुकरण करने लगना, धर्म नहीं घोर अज्ञान भरा कृत्य है जो न स्वयं के लिए सुखदायी है न औरों के लिए ।

कृष्ण की रासलीला की एवं अन्य वैसे ही कार्यों की जो पुनरावृत्ति कर धर्म शील बनना चाहते हैं, वे भ्रम में ही हैं । उनसे धर्म नहीं अधर्म ही बढ़ेगा । सत्य विवेक की कसौटी ही धर्म का स्वरूप तय करती है । सत्य को पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर ही अपनाया जा सकता है । जैसा कि संत तुलसीदास ने अपनाया । भागवत कथा इत्यादि ग्रंथ संस्कृत में लिखने की परंपरा चली आ रही थी । समय की आवश्यकता देखते हुए संत ने हिंदी में राम कथा लिखने का निर्णय लिया । इस कार्य से कुपित तत्कालीन पंडितों ने घोर जाति बहिष्कार से लेकर प्रत्यक्ष व परोक्ष अनेक यातनाएँ देने के प्रयास किए । तुलसी दास जी ने कहा–यह सत्य है कि अभी तक राम कथा संस्कृत में लिखी गई, पर यह भी सत्य है कि अब आम लोग संस्कृत नहीं समझते । अब उन तक राम चरित्र की प्रेरणा पहुँचाने, उनके कल्याण का रास्ता खोलने के लिए उसे हिंदी में लोक भाषा में लिखा जाना आवश्यक है । इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य के साथ लोक मंगल का आदर्श जुड़ा है । मैं तो इसे ही अपनाऊँगा । गोस्वामी जी ने परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्व दिया, रूढ़िवादिता की अपेक्षा यथार्थता को चुना । भारतीय संस्कृति में स्मृतियों का लेखन जीवनचर्या के आदर्श स्वरूप को लेकर ही हुआ है । आचार संहिता के रूप में स्मृतियाँ रची गईं हैं । बिना किसी पूर्वाग्रह के देश काल परिस्थितियों के आधार पर ही स्मृतियाँ लिखी जाती रहीं । उनसे बदली हुई परिस्थितियों में लोगों को समय–समय पर दिशा मिलती रही । धर्म में सत्य विवेक का समावेश बिना किसी दुराग्रह के सदैव बने ही रहना चाहिए तभी धर्म, धर्म रहता है अन्यथा वह रूढ़िवादिता एवं ढकोसला भरा कृत्य बन जाता है ।

एक साधु अपने शिष्यों के साथ एक मेले में जा रहे थे । एक स्थान पर कुछ बाबा माला फेर रहे थे, वे बार-बार सामने बिछी चादर पर पैसे गिनते जा रहे थे, उन्हें देखकर साधु हँस पड़े । आगे एक तपस्वी शीर्षासन लगाए खड़े थे । उन्हें देखकर भी साधु हँस पड़े । आगे एक पंडित जी भागवत् की कथा कह रहे थे, उन्हें देखकर भी साधु हँस पड़े । आगे एक कैंप में एक डाक्टर एक रोगी की परिचर्या में लगे थे, यह देखकर साधु की आँखों में आँसू आ गए ।

आश्रम लौटने पर शिष्यों ने तीन स्थानों पर हँसने और और चौथे स्थान पर रोने का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया- "बेटा ! माला, आसन, प्राणायाम और कथा भागवत् को ही धर्म समझकर अधिकांश लोग ढोंग कर रहे हैं । यह देखकर हँसी आ गई । भगवान का काम करने वला एक ही डाक्टर दिखाई दिया । यह देखकर दु:ख हुआ । भगवान न जाने लोग धर्म के वास्तविक अर्थ को कब समझेंगे । सच्चा धर्म संसार की सेवा और उसे सुधारना है, जप-तप नहीं ।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना का सात सूत्री आंदोलन

आज के युग धर्म के अंतर्गत परमपूज्य गुरुदेव ने सात आंदोलनों की घोषणा की थी । उन सात क्रांतियों के बारे में परिजनों के लिए संक्षेप में रूप रेखा प्रस्तुत की जा रही है । हर पाठक बंधु इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें और जो कुछ संभव हो अपनी तरफ से इस दिशा में सहयोग के लिए प्रयत्नशील रहें ।

(१) आस्तिकता संवर्धन आन्दोलन

ईश्वर की सत्ता में विश्वास कर लेना ही आस्तिकता नहीं है । आज की परिस्थितियों में आस्तिकता एवं ईश्वर की नई प्रगतिशील व्याख्या करना अनिवार्य हो गया है । वस्तुतः आस्तिकता, ईश्वरीय अनुशासन को अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार में कूट–कूट कर समाविष्ट कर लेने का नाम है । जो आस्तिक है वह भले ही मंदिरों, पूजागृहों में न जाता हो, पर यदि परमात्म सत्ता का अनुशासन जीवन में उतारता है, सही ढंग से जीवन जीता है तथा सृष्टि को एक ईश्वरीय उद्यान मानकर उसकी सिंचाई करता है, वह सच्चे अर्थों में आस्तिक है । नास्तिक तो वह है जो बाह्याडम्बर कितने ही रचता हो, दिखता तो धार्मिक हो, पर जीवन के किसी भी कोने से आदर्शवाद, सच्चरित्रता, उत्कृष्टता का एक अंश भी नहीं झलकता हो ।

घर–घर आस्तिकता का वातावरण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आन्दोलन के रूप में तेजी से चलाए जा रहे हैं ।

१–घर–घर में देव स्थापना–(पंचदेव चित्र स्थापना)घर–घर में देव स्थापना कराकर गायत्री साधना प्रारंभ कराने का प्रयास ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२–मन्त्र जप या लेखन–विश्व कल्याण के लिए गायत्री मंत्र जप अथवा भगवत नाम जप या अपने समुदाय, धर्म के मंत्र का जप करने की प्रेरणा देना । मंत्र लेखन साधना की सर्व सुलभ विधि बताकर प्रोत्साहित करना ।

३–बलि वैश्व यज्ञ–भोजन ग्रहण करने के पूर्व भोजन की पाँच आहुतियाँ अग्निदेव को समर्पित करने की क्रिया का व्यापक प्रचार प्रसार ।

४–ज्ञान मंदिर स्थापना–परिवार में देव मंदिर के साथ ज्ञान मंदिर (पुस्तकालय) का होना अनिवार्य बताकर स्वाध्याय के प्रति निष्ठा जगाना ।

५–श्रीराम झोला पुस्तकालय–पूज्यवर के विचार घर–घर पहुँचाने के लिए श्रीराम झोला पुस्तकालय द्वारा ज्ञान का अमृत बाँटने के लिए लोक सेवी कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन ।

६–ज्ञान रथ–चार पहिए का पीला सुन्दर मंदिरनुमा आकृति का ज्ञान रथ बनवा कर बिक्री द्वारा जन–जन को साहित्य उपलब्ध कराना ।

७–संस्कार परम्परा–संस्कार परंपरा का पुनर्जीवन कर परिवारों में संस्कारों का प्रचलन चलाते रहने के लिए परिव्राजकों की सक्रियता ।

८–यज्ञ एवं धार्मिक आयोजन–यज्ञ एक सामूहिक धर्मानुष्ठान है । इसके माध्यम से जन जागरण कर आस्तिकता के वास्तविक अर्थ का बोध कराना तथा पर्व आयोजनों के अवसर पर आदर्श की दिशा में जन उत्साह का नियोजन करना ।

९–तुलसी रोपण–हर घर में तुलसी का पौधा लगाने तथा आस्तिकता एवं स्वच्छता का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करना । तुलसी की रोग निवारक क्षमता की उपयोगिता समझाना ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१०–भोजन, जल और स्नान–हर व्यक्ति को भोजन से पहले तीन बार गायत्री मंत्र बोलकर भोजन ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना । जल को गंगा जल की भावना के साथ ग्रहण करना तथा स्नान के समय गंगा जल में स्नान की भावना के साथ स्नान करने और स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीरों के पवित्र होने की भावना का संचार करना ।

(२) स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन

१–असंयम और अनुचित आहार–विहार के कारण रोगों की जड़ मजबूत होती जाती है और आरोग्य क्षीण होता है । जन–जन को खाने के तरीकों तथा स्वास्थ्य संरक्षण के सिद्धांतों को समझाया जाना चाहिए । प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा धूप, हवा, पानी, मिट्टी द्वारा सरल उपचार सिखाए जाएँ । प्रज्ञायोग, सूर्य नमस्कार, योगासन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा, नेति आदि का प्रचलन प्रारंभ कराया जाए । आज आवश्यकता चौका क्रांति की है । जिसमें अंकुरित अन्न, छिलकों को न फेंकना, भाप से पकाना, शाकों, ऋतु फलों, सलादों का उपयोग जैसी अनेक बातें सिखाई और प्रचलन में लाई जानी चाहिए । कसे हुए भारी कपड़ों की भरमार, सौन्दर्य प्रसाधन, आभूषण जैसे सज्जा उपकरण आरोग्य की दृष्टि से कितने अहितकर हैं, यह पाठ हमें नए सिरे से पढ़ाना होगा ।

२–अत्यन्त सरल, निरापद एवं उपयोगी वनौषधियों का चूर्ण विभिन्न रोगों से छुटकारा पाने के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है । इसका व्यापक प्रचार किया जाय । **जड़ी बूटियों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण** पुस्तक का स्वाध्याय कर बहुत से लोगों को लाभ दिलाया जा सकता है । शांतिकुंज हरिद्वार से वनौषधियों के चूर्ण प्राप्त किए जा सकते हैं ।

३–स्वास्थ्य संवर्धन पुस्तक माला–युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण हेतु स्वास्थ्य की हर समस्या पर उपयोगी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहित्य प्रकाशित किया गया है । इन्हें मँगा कर झोला पुस्तकालय द्वारा अथवा ज्ञान मंदिर स्थापित कर जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए ।

४–मानसिक स्वास्थ्य–मन जीवन का केन्द्र बिन्दु है । इसे स्वच्छ बनाये रखने के लिए नियमित रूप से स्वाध्याय एवं सत्संग करना चाहिए । जिस प्रकार शरीर की रोज सफाई करना अनिवार्य माना जाता है उसी प्रकार मानसिक रूप से स्वस्थ बने रहने के लिए सद्विचारों की झाड़ू से मन की सफाई करते रहना पड़ता है । ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे मनोविकारों को नियंत्रित करने के लिए सत्साहित्य का स्वाध्याय रामबाण औषधि है । मनोविकारों से ही हृदय रोग, मधुमेह, मानसिक अवसाद, तनाव, पागलपन, हिस्टीरिया, रक्तचाप तथा लकवा आदि घातक रोग जन्म लेते हैं । अतः पहले रोग मन में होता है फिर तन में । यह सिद्धान्त सुनिश्चित सत्य है । इनसे बचने के लिए पहले मन की चिकित्सा की जानी चाहिए ।

५–आत्मिक स्वास्थ्य–उपासना के माध्यम से हम अपने आत्मिक स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं । आत्मा, परमात्मा का अंश होने के कारण निर्मल एवं पवित्र होती है, लेकिन वातावरण से प्राप्त कषाय कल्मष उस पर चढ़ जाते हैं जो मलीनता की पर्त बना लेते हैं । उपासना द्वारा इसकी नियमित सफाई होती रहनी चाहिए ।

(३) नारी–जागरण आंदोलन

नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है । यों दोष तो सब में रहते हैं । सर्वथा निर्दोष तो परमात्मा ही है । नारियों में तात्विक दृष्टि से आत्मिक विशेषता है, उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति । बेटी, बहिन, धर्म पत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्शों से भरा पूरा जीवन यापन करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, पर आत्मिक संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा । नारी को प्रजनन का उत्तरदायित्व उठाने के कारण शारीरिक दृष्टि से थोड़ा दुर्बल भले ही रहना पड़ा हो, पर आत्मिक विभूतियों की बहुलता को देखते हुए वह ईश्वरीय दिव्य अनुकंपा की अधिक अधिकारिणी बनी है । अगले दिनों द्रुत गति से बढ़ता आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्मिक मान्यताओं से भरा पूरा होगा । शासन–तन्त्र, धर्म–तन्त्र, अर्थ–तन्त्र, समाज तन्त्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुनर्निर्मित होगा । ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निबाहनी पड़ेंगी । उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखा जाए तो नारी–जागरण अपने समय का सबसे बड़ा काम प्रतीत होगा ।

१–युग निर्माण महिला मण्डल का गठन करना चाहिए ।

२–युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री(गुजराती) एवं अखण्ड ज्योति तथा साहित्यिक जीवनियाँ महिलाओं को अधिक रुचिकर होती हैं । यह साहित्य नियमित रूप से उन्हें पढ़ने को मिलता रहे तो उनका भावनात्मक स्तर निश्चित रूप से विकसित होता है और थोड़े दिनों में वे भी महिला संगठनों की गतिविधियों में योगदान देने लगती हैं । अतः नगर की शिक्षित महिलाओं की सूची तैयार कर उनके पास तीसरे पहर अवकाश के समय नव निर्माण का साहित्य पढ़ने के लिए जाकर देने और वापस लेने का क्रम बनाकर महिला मंडल सक्रिय हो ।

३–महिला मंडल द्वारा साप्ताहिक सत्संग का आयोजन ।

४–मूढ़ मान्यताओं, अन्ध विश्वासों, कुरीतियों, सामाजिक विकृतियों ने भारतीय समाज को किस तरह पद दलित किया और उनके प्रहार से नारी जाति को कितनी भारी क्षति उठानी पड़ी । अब उनका समाधान, निराकरण, उन्मूलन कैसे हो सकता है–यह दार्शनिक पक्ष नारी शिक्षा योजना का अविछिन्न अंग माना गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है । कहना न होगा कि आज की सुशिक्षित लड़कियों को बेकार का दिमागी बोझा तो बहुत ढोना पड़ता है, पर काम में आने वाली व्यावहारिक जीवन में उपयोगी एवं आवश्यक जानकारियों से वंचित ही रहना पड़ता है ।

५–पुंसवन, नामकरण, मुंडन, अन्न प्राशन जैसे संस्कार महिलाएँ परस्पर मिल–जुलकर शास्त्रीय विधि से कर सकती हैं और उनके साथ जुड़ी हुई शिक्षाओं के आधार पर उस परिवार में एक नई विचारधारा एवं चिंतन शैली का प्रवाह बहाया जा सकता है ।

६–जन्म–दिन और विवाह–दिन के उत्सव पर संगठित मंडली की महिलाऐं एक पुष्प और एक बताशा का उपहार लेकर पहुँचा करें और शुभ कामनाऐं दें तो उनमें पारस्परिक घनिष्ठता बढ़ती ही चली जाएगी ।

७–नारी पर से प्रतिबंध अविलंब हटाये जाएँ । उसे पर्दा प्रथा से मुक्त कराने के उपायों को कार्यरूप में परिणत किया जाए ।

८–नारी को समाज की सेवा करने के लिए घरेलू बंधनों से थोड़ा अवकाश दिया जाए । उसे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने दिया जाए ।

९–जो लोग नारी उत्कर्ष के महत्व को समझते हैं तथा भारत के आधे जन समाज की अपंग स्थिति को दूर करना चाहते हैं उनके लिए प्रथम कार्य यही करने का है कि अपने घर की नारियों में इस ओर रुचि उत्पन्न करें । उन्हें योग्य बनाऐं, आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें और मार्गदर्शन एवं सहयोग करके उन्हें कार्य क्षेत्र में उतारें ।

१०–नारी शिक्षा का प्रचलन आवश्यक है । भारतीय नारी को तीसरे पहर का अवकाश रहता है । उस समय गली–गली, मोहल्ले–मोहल्ले महिला पाठशालाएँ चलनी चाहिए । थोड़ा प्रयत्न करने पर मोहल्लों में ऐसी पाठशालाएँ स्थापित हो सकती हैं । उन्हीं में से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई सुशिक्षित नारी पढ़ाने सिखाने का उत्तरदायित्व स्वयं उठाले जो महिला मंडल में सम्मिलित है ।

(४) सत्प्रवृत्ति संवर्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन

देव और असुर दोनों तत्वों से मिलकर मनुष्य बना है । उसमें ईमान भी रहता है और शैतान भी । परिस्थितियाँ इन्हें विकसित करती हैं । यदि अच्छा वातावरण मिले तो देव तत्व और ईमान विकसित होता है । सज्जनता और महानता की वृद्धि होती है । यदि बुरा वातावरण मिले तो उसका प्रभाव अंतरंग में छिपी असुरता को उभारता है और मनुष्य का चिंतन और कर्तृत्व निकृष्ट स्तर का पतनोन्मुख बनता चला जाता है ।

१–समाज का नेतृत्व करने वाले प्रबुद्ध लोगों का काम है कि वे ऐसा वातावरण बनाएँ, ऐसा आंदोलन चलाएँ जिसमें आदर्शवाद का अवलंबन करने वाले व्यक्तियों को कम से कम सामाजिक सम्मान का लाभ तो मिल ही सके ।

२–सत्प्रवृत्तियों को उभारने के लिए, सद्भावनाओं को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करने के लिए कुछ नहीं किया गया । जब कि होना यह चाहिए था कि जितना दुष्टता के दमन पर ध्यान दिया जाता है कम से कम उतना ध्यान तो सज्जनता को सराहने और आदर्शवादी सत्साहस को पुरस्कृत करने के प्रयत्न पर दिया जाता । अपराध और दंड, यह निषेधात्मक पक्ष है, उससे भी महत्वपूर्ण पक्ष वह है जिसे विधेयात्मक कहा जाता है । नैतिकता को पुरस्कृत करना भी उतना ही आवश्यक है जितना अनैतिकता को दंडित करना ।

३–अनीति विरोधी वातावरण बनाने के लिए लोकमत को संगठित व प्रखर होना चाहिए । इस प्रयोग को हमें अपने घरों से आरंभ करना चाहिए । जिन बच्चों की, परिजनों की गतिविधियां प्रशंसनीय हों, उन्हें समुचित सहयोग, समर्थन, प्यार, सम्मान एवं पुरस्कार मिलना चाहिए । भूल करने वालों, कुमार्ग पर चलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वालों की उपेक्षा की जाए ।

भर्त्सना, ताड़ना, असहयोग आदि परिस्थिति अनुसार वह क्रम अपनाया जाय जिससे कुमार्गगामी को अपने कार्य से परिवार की नाराजगी और भर्त्सना का परिचय मिले । यह नीति परिवार के भावनात्मक विकास और व्यवस्था संतुलन में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है ।

४–आदर्श प्रस्तुत करने वाले ऐसे अनेक व्यक्ति मिल सकते हैं जिनको किसी कारण लोगों ने प्रोत्साहित नहीं किया । ऐसे लोगों को प्रोत्साहन दिया जाए । ऐसे स्वर्गीय लोगों की जयंतियाँ मनाकर उनके चित्रों पर पुष्प चढ़ाना, उनके स्मारक स्वरूप वृक्ष लगाना, उनके जीवन वृतान्त से सर्व साधारण को अवगत कराना ऐसी पद्धति है जिससे हर व्यक्ति को सन्मार्गगामी, लोक सेवी बनने का प्रोत्साहन मिल सकता है ।

५–वैयक्तिक जीवन में समाविष्ट कुत्साओं, कुंठाओं से जूझने के लिए हमें प्रायश्चित और आत्म प्रताड़ना का शस्त्र काम में लाना चाहिए । आत्मशोधन के लिए हर दिन नया जन्म, हर रात नई मौत का जो मन्त्र दिया गया है वह अति कारगर सिद्ध होता है । दिन भर अपने शारीरिक मानसिक क्रिया कलाप पर दृष्टि रखनी चाहिए । रात को सोते समय दिन भर की भूलों को शारीरिक दण्डों के रूप में प्रायश्चित करना चाहिए । * कान पकड़कर उठना बैठना, * अपने आपको चाँटे लगाना, * अमुक समय तक खड़े रहना, * सोने की अपेक्षा उतनी देर जागते रहना, * भोजन में कुछ कटौती या उपवास । इस प्रकार आत्म प्रताड़नाएँ अपने को देकर और अगले दिन वैसी ही भूलें न करने की चेतावनी देकर यह प्रायश्चित प्रक्रिया हर रात को पूरी कर लेनी चाहिए । हर प्रातः उठते ही सोच लिया जाए कि आज का एक ही दिन का जीवन है । रात को सोने के साथ ही आपकी मृत्यु हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगी । इस एक दिवसीय जीवन को सर्वोत्कृष्ट रीति से जीने की दिनचर्या प्रातः ही बना ली जाए तो निःसंदेह वह दिन अधिक श्रेष्ठता के साथ बीत सकता है ।

६–परिवार निर्माण के लिए भी संघर्ष की जरूरत पड़ती है । पत्नी व बच्चों को बड़े और छोटों को समुचित प्यार किया जाए और उनकी सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाए, पर साथ ही कड़ी नजर इस बात पर रखी जाय कि परिवार का कोई सदस्य कुमार्गगामी, व्यसनी, दुर्गुणी एवं अनाचारी तो नहीं बन रहा है । हर हालत में औचित्य की रक्षा की जानी चाहिए । यह संघर्ष यथा संभव मृदुल, सौम्य और स्नेहासिक्त रखा जाना चाहिए ।

७–रूढ़िवादिता और अनौचित्य के विरुद्ध संघर्ष बड़े बूढ़ों से भी किया जा सकता है । बड़ों का आदर करना, उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना तथा शारीरिक सेवा करना छोटों का कर्त्तव्य है और इस शिष्टाचार को हर हालत में निभाया जाना चाहिए, पर उनकी अनुचित इच्छाओं तथा आज्ञाओं से सहयोग करने से साहस पूर्वक इंकार भी कर देना चाहिए ।

८–ऊँच–नीच, छुआ–छूत, पर्दा, नारी प्रतिबन्ध जैसी प्रथाएँ मनुष्यता को कलंकित करने वाली कुरीतियाँ हैं । प्रश्न हिन्दू परंपराओं का नहीं, विश्व विवेक और मानवीय न्याय का है । किसी संप्रदाय या किसी देश में कोई अनुचित परंपरा चल पड़े इसका अर्थ यह तो नहीं होता कि वह बात उचित और न्याय संगत भी ठहरा दी जाए ।

९–स्त्री और पुरुष के बीच खड़ी की गई दीवार सर्वथा अन्याय युक्त है । पर्दा, विधवा के पुनर्विवाह आदि प्रतिबंध यदि उचित हैं तो नर नारी दोनों पर समान रूप से लागू होने चाहिए । यदि अनुचित हैं तो दोनों पर से हटने चाहिए । इसी प्रकार कन्या और पुत्र के बीच बरता जाने वाला भेद भाव किसी भी दृष्टि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्याय संगत नहीं है । ये मूढ़ मान्यताएँ हिंदू समाज में गहराई तक जड़ जमाए बैठी हैं ।

१०–अनाचारी तत्वों के प्रति समाज में घृणा, असहयोग, विरोध, प्रतिरोध एवं संघर्ष की प्रवृत्ति उत्पन्न करनी होगी ।

(५) कुरीति उन्मूलन आन्दोलन

समाज में सभी व्यक्ति विवेक से काम लेकर अपने कार्यों का निर्धारण नहीं करते । अधिकांश व्यक्ति परंपरावादी होते हैं और प्रचलित रीति रिवाजों को बिना तर्क की कसौटी पर कसे अपनाते रहते हैं । बहुत सी कुरीतियाँ समाज के लिए बहुत हानिकारक ही हैं । इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्राणवान, जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तियों की आवश्यकता होगी । हिन्दू समाज में एक बड़ा सिर दर्द सामाजिक कुरीतियों के कारण उत्पन्न हो गया है । कितनी ही प्रथाएँ ऐसी चल पड़ी हैं जो बहुत धन खर्च करने की माँग प्रस्तुत करती हैं । मध्यम श्रेणी का व्यक्ति ईमानदारी से उतना ही मुश्किल से कमा सकता है जिसमें उसके परिवार का गुजारा किसी प्रकार हो सकता है । इस मँहगाई के जमाने में लंबी चौड़ी बचत कर सकना सर्वसाधारण के लिए संभव नहीं । आए दिन बहुत धन खर्च कराने की माँग करने वाली कुरीतियों का भी यदि मुँह भरना है तो बेईमानी के तरीके अपनाए बिना और कोई रास्ता नहीं मिलता । एक रास्ता यह भी है कि पेट पर पट्टी बाँध कर साग–सत्तू से गुजारा करते हुए बच्चों के मुँह में जाने वाली दूध की बूँदें बचा कर कौड़ी–कौड़ी धन जोड़ा जाए और इन कुरीतियों की पिशाचिनी को तृप्त किया जाए । तीसरा तरीका है कि घर के बर्तन किवाड़ बेचकर मित्र रिश्तेदारों से कर्ज लेकर तत्काल का काम तो चला लिया जाए, पर पीछे भारी अभाव और तिरस्कार का जीवन बिताया जाए । कर्ज का ब्याज सिर पर चढ़कर दौड़ता रहे । इतना सब कुछ होते हुए भी हमारी मानसिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्बलता यह सोचने नहीं देती कि क्या ये सामाजिक कुरीतियां आवश्यक ही हैं ? क्या इन्हें सुधारा और बदला नहीं जा सकता ?

१–वर्ण व्यवस्था का विकृत स्वरूप हटे–ब्रह्मा जी ने अपने चारों पुत्रों को चार कार्यक्रम सौंप कर उन्हें चार वर्णों में विभक्त किया है । ज्ञान, बल, धन और श्रम । ये चारों ही शक्तियाँ मानव समाज के लिए आवश्यक थीं । इनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वंशगत प्रयत्न चलता रहे और उसमें कुशलता तथा परिष्कृति बढ़ती रहे इस दृष्टि से इन चार कामों को चार पुत्रों में बाँटा गया था । चारों सगे भाई–भाई थे । इसलिए उनमें ऊँच नीच का कोई प्रश्न न था । किसी का सम्मान, महत्व और स्तर न न्यून था न अधिक । अधिक त्याग–तप के कारण अपनी महानता प्रदर्शित करने के कारण ब्राह्मण की श्रेष्ठता तो रही, पर अन्य किसी वर्ण को भी हेय या निम्न स्तर का नहीं माना गया था । आज स्थिति कुछ भिन्न ही है । चार वर्ण अगणित जातियों–उपजातियों में बँट गए हैं और इससे समाज में भारी अव्यवस्था एवं फूट फैली है । यहाँ तक कि एक ही वर्ण के लोग अपनी उपजातियों में ऊँच–नीच की कल्पना करने लगे । यह मानवीय एकता का प्रत्यक्ष अपमान है । व्यवस्थाओं या विशेषताओं के आधार पर वर्ण जाति रहे, पर ऊँच–नीच की मान्यता को स्थान न मिले ।

२–बाल विवाह–अनमेल विवाह–बाल विवाहों की भर्त्सना की जाए और उनकी हानियाँ जनता को समझाई जाएँ । स्वास्थ्य, मानसिक सन्तुलन आगामी पीढ़ी एवं जीवन विकास के प्रत्येक क्षेत्र पर इसका बुरा असर पड़ता है । अनमेल विवाहों को भी रोका जाना आवश्यक है ।

३–भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना–समर्थ व्यक्ति के लिए भिक्षा माँगना उसके आत्म गौरव और स्वाभिमान के सर्वथा विरुद्ध है । आत्म गौरव खोकर मनुष्य पतन की ओर ही चलता है । खेद है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि भारत वर्ष में यह वृत्ति बुरी तरह बढ़ी है । जो लोग सर्वथा अपंग, असमर्थ हैं, जिनके परिजन या सहायक नहीं उनकी आजीविका का प्रबंध सरकार को या समाज के दान से संस्थाओं को स्वयं करना चाहिए । जिससे इन अपंग लोगों को बार–बार हाथ पसार कर अपना स्वाभिमान न खोना पड़े और बचे हुए समय में वे कोई उपयोगी कार्य कर सकें । अच्छा हो ऐसी सेवाभावी संस्थाएँ जगह–जगह खुल जाएँ और उदार लोग उन्हीं के माध्यम से वास्तविक दीन दुःखियों की सहायता करें ।

४–मृत्यु–भोज की व्यर्थता–किसी के मरने के बाद उस घर में दो सप्ताह के भीतर विवाह शादियों जैसी दावत का आयोजन होना दिवंगत व्यक्ति के प्रति अपमान है । दावतें तो खुशी में उड़ाई जाती हैं । मृत्यु को शोक का चिन्ह मानते हैं तो फिर दावतों का आयोजन किस उद्देश्य से ? मृतक के मित्रों और संबंधियों के लिए भी यही उचित है कि इस क्षति ग्रस्त परिवार की कोई सहायता न कर सकते हों तो कम से कम दावतों की सलाह देकर उसका आर्थिक अहित तो न करें । मृतक की आत्मा को शांति देने के लिए धार्मिक कृत्य कराए जाएँ । ऐसे शुभ कार्यों में जिनसे मानवता की कोई सेवा होती हो, श्राद्ध के उपलक्ष में कितना ही बड़ा दान किया जा सकता है । वही सच्ची श्रद्धा का प्रतीक होने से सच्चा श्राद्ध कहा जा सकता है ।

५–जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण–अंधाधुंध बच्चे पैदा करने और परिवार बढ़ाने के सामूहिक दुष्परिणाम आज सबके सामने हैं । स्वास्थ्य की समस्या, शिक्षा की समस्या, निवास की समस्या से क्या व्यक्ति, क्या समाज और क्या राष्ट्र सब अगणित समस्याओं से ग्रस्त हैं । अपने व्यक्तिगत, समाज, राष्ट्र और विश्व हित की दृष्टि से जनसंख्या को सीमित एवं नियंत्रित रखा जाना आवश्यक है । भुखमरी, अकाल, मँहगाई, भ्रष्टाचार आदि अभिशाप भुगतने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ रहे हैं । संसार को नियमित रखने के लिए प्रकृति जोर मारती है तो उससे विनाश के ही लक्षण दिखाई देते हैं । इसलिए मनुष्य स्वयं उस समस्या को सुधारने का प्रयत्न करें । यह सबसे अच्छी और फायदे की बात हो सकती है ।

६–बलि प्रथा–धर्म ग्रन्थों में जिन देवी–देवताओं का वर्णन है उनकी संख्या भी पर्याप्त है, पर उतने से भी संतोष न करके लोगों ने जाति–जाति के, वंश–वंश के, गाँव–गाँव के इतने अधिक देवता गढ़ लिए हैं कि आश्चर्य होता है । उन पर मुर्गे, अण्डे, भैंसे, बकरे, सुअर आदि चढ़ाते हैं । यह कैसी विडम्बना है कि दया और प्रेम के लिए बने हुए देवता अपने ही पुत्र पशु पक्षियों का खून पीएँ ।

७–भूत–पलीत और जादू टोना–भूत पलीतों का मानसिक भ्रम पैदा करके सयाने, दीवाने और ओझा लोग भोली जनता का मानसिक और आर्थिक शोषण बुरी तरह करते हैं । मानसिक रोगों, शारीरिक कष्टों और दैनिक जीवन में आती रहने वाली साधारण सी बातों को भूत की करतूत बनाकर व्यर्थ ही भोले लोगों को भ्रमित करते हैं । उस भ्रम का इतना घातक प्रभाव पड़ता है कि कई बार तो जीवन–संकट तक उपस्थित हो जाता है ।

८–अशिक्षा का निवारण–राष्ट्रीय प्रगति के लिए अशिक्षा का निवारण नितान्त आवश्यक है । इस प्रयोजन को पूरा करने में सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र पूरी तरह जुट जाएँ। एक दूसरे का भी पूरा सहयोग करें तो समय की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता को सरलता पूर्वक पूरा किया जा सकता है । प्रौढ़ अशिक्षितों में से अधिकांश आजीविका उपार्जन में व्यस्त होते हैं इसलिए उनके अवकाश के समय ही शिक्षा व्यवस्था की बात सोची जा सकती है । पुरुषों के लिए वह समय रात्रि का हो सकता है । उनके लिए प्रौढ़ रात्रि पाठशालाओं का प्रबंध होना चाहिए । महिलाओं को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन बनाने एवं अन्य गृह कार्यों से थोड़ी सी फुर्सत पाने का समय तीसरे पहर का है । उनके लिए प्रौढ़ महिला पाठशालाऐं मध्यान्ह में दो से पाँच बजे के बीच में तीन घंटे को चल सकती हैं ।

९–पर्दा प्रथा–हमारे अपने देश में कभी भी पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं रही है । प्राचीन काल में स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में काम करती थीं और उन्हें विद्या अध्ययन, योग्यता अभिवर्धन और अपनी प्रतिभा से समाज को लाभ पहुँचाने की खुली छूट थी । उन्हें कहीं किसी प्रतिबन्ध में नहीं रहना पड़ता था । इस घातक परम्परा को समूल नष्ट करने के लिए किसी स्त्री से घूँघट खुलवा देना या पर्दा न करने के लिए तैयार कर देना भर पर्याप्त नहीं है । वस्तुतः इसके लिए तो महिलाओं में आत्म विश्वास जाग्रत करने के व्यावहारिक प्रयास करने चाहिए ताकि वे स्वयं को आश्रिता, संरक्षिता तथा अबला नहीं वरन् समर्थ, स्वावलंबी और परिस्थितियों की चुनौती स्वीकार कर सकने वाली अनुभव करने लगें । पर्दा प्रथा उस समय चली थी जब यवन लोग बहू–बेटियों पर कुदृष्टि डालते और उनका अपहरण करते थे । अब वैसी परिस्थितियाँ नहीं रहीं, तो पर्दा प्रथा भी अनावश्यक हो गई ।

१०–अश्लीलता का प्रतिकार–अश्लील साहित्य, अर्धनग्न युवतियों के विकारोत्तेजक चित्र, गंदे उपन्यास, कामुकता भरी फिल्में, गंदे गीत, अमर्यादित कामचेष्टाएँ, नारी में विद्यमान शील–संकोच–मर्यादा का व्यतिक्रम, दुराचारों की भौंडे ढंग से चर्चा आदि अनेक बुराइयाँ अश्लीलता के अंतर्गत आती हैं । इनसे दांपत्य जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और शरीर एवं मस्तिष्क खोखला होता है । ऐसे चित्र, कलैंडर, पुस्तकें, मूर्तियाँ तथा अन्य उपकरण हमारे घरों में न रहें, जो अपरिपक्व मस्तिष्कों में विकार पैदा करें । अश्लीलता का विरोध करने के लिए जनमत तैयार कर इनकी जुलूस निकाल कर होली जलाई जाए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६–व्यसन मुक्ति आन्दोलन

मादक द्रव्यों से होने वाली हानियाँ सर्वविदित हैं । इधर हमारे देश की युवा पीढ़ी में राष्ट्र के नव निर्माण का उत्तरदायित्व जिसके कंधों पर है, यह कुप्रवृत्ति तेजी से बढ़ती चली जा रही है । युवावस्था में जब शरीर के अंग–प्रत्यंग विकास कर रहे होते हैं, जीवनी शक्ति बढ़ रही होती है, तभी मादक द्रव्यों का कुप्रभाव उन्हें निष्क्रिय और अशक्त करने लगता है । यह सोचनीय स्थिति है । शराब, गाँजा, भाँग, चरस, सिगरेट, तम्बाकू आदि नशे तो युवक–युवतियों में इतने प्रिय हो चुके हैं जिन्हें न अपनाने वाले को रूढ़िवादी तथा पुराण पंथी समझा जाता है । आज व्यसन की इस प्रवृत्ति के विधि पूर्वक विरोध की आवश्यकता है । हमें इस संबंध में लोगों को ज्ञान कराना होगा और उन्हें बताना होगा कि यह कोई शौक या फैशन की चीज नहीं । अपने को सभ्य प्रदर्शित करने का भी यह कोई तरीका नहीं है । सभी समाज सेवी संस्थाओं को इस असुर पर विजय पाने हेतु निम्न कार्यक्रम चलाना चाहिए ।

१–विचार गोष्ठियों द्वारा समय–समय पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर व्यसन ग्रसित लोगों को इसकी हानियाँ समझाई जाएँ ।

२–पुरोहित द्वारा यज्ञ, संस्कार, पर्व एवं कथा इत्यादि अवसरों पर व्यसन छोड़ने हेतु प्रेरित करना ।

३–साधु, संत, महात्माओं के प्रवचनों में इस दुष्प्रवृत्ति को छोड़ने का आह्वान करना । विभिन्न उदाहरणों एवं तर्कों द्वारा व्यसनों की हानियों से अवगत कराना ।

४–व्यसन मुक्त भाई–बहिनों को सहयोग हेतु संगठित करना ।

५–समाज सेवा की भावना रखने वाले चिकित्सकों द्वारा गोष्ठियाँ लेकर तथा शिविर लगाकर जन साधारण को इन दुष्प्रवृत्तियों से होने वाली शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक हानियों से परिचित कराना ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६–परिवार के सदस्य बच्चे, पत्नी एवं घनिष्ट मित्र व्यसन ग्रस्त व्यक्ति पर लगातार दबाव डालते रहें तो सफलता की आशा की जा सकती है ।

७–व्यसन मुक्ति आन्दोलन कार्यकर्त्ताओं द्वारा बैनर, झंडे लेकर जुलूस निकालना । सरकार को मादक द्रव्यों के उत्पादन एवं सेवन पर कानूनी रोक लगाने हेतु ज्ञापन देना ।

८–नशा सेवन से दिल दहलाने वाली दुर्घटनाओं का संकलन किया जाए और उन्हें पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया जाए ।

९–युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित व्यसन मुक्ति आन्दोलन सैट की पुस्तकों को झोला पुस्तकालय, ज्ञान मंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन–जन तक पहुँचा कर व्यसन ग्रस्तों के चिंतन में परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए ।

(७) विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन

समाज का निर्माण परिवार से होता है और परिवार का विवाह से । हर नया विवाह एक नए परिवार की रचना करता है । इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि विवाह का शुभारंभ, श्रीगणेश ऐसे वातावरण में हो जो अंत तक मंगलमय परिणाम ही उत्पन्न करता रहे । कहते हैं कि अच्छी शुरूआत में सफलता की आधी संभावना सन्निहित रहती है । जिसका आरंभ ही दुर्बुद्धि एवं दुर्भावना के साथ होगा, उसका विकास भी असंतोष और संघर्षों के बीच होगा और यह क्रम अन्ततः उसे असफल ही बना देगा । अपने समाज की अविवेक पूर्ण रीतिरिवाजों के लिए क्या कहा जाए ? विवाह उत्सव अपने लिए एक कमर तोड़ भार बना हुआ है । लड़के वाले दहेज की लंबी चौड़ी रकमें और कीमती सामान माँगते हैं । लड़की वालों की माँग कन्या के लिए बहुमूल्य जेवरों, कीमती कपड़ों की रहती है । तमाशबीन, सजधज की बारात–बाजे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आतिशबाजी, बढ़िया दावत और अमीरी शान–शौकत की आवभगत चाहते हैं । पग–पग पर निरर्थक नेग–जोग इतने खड़े रहते हैं कि उनमें ढेरों खर्च होता है । यह अतिरिक्त धन आखिर आए कहाँ से ? ईमानदारी से आज की परिस्थितियों में कोई गुजारे भर को कमा सकता है । जमा करना अति कठिन है । विवाहों में इतना प्रचुर धन फूँकना जब आवश्यक ही हो गया तो दिन रात बेईमानी करते हुए पैसे का जुगाड़ बनाने के अतिरिक्त किसी के सामने और कोई उपाय नहीं रहता । सरकारी कर्मचारी को रिश्वत, मजदूरों के लिए चोरी, व्यापारी के लिए मिलावट करना या कम तौलना, चिकित्सकों के लिए रोगी को डराकर पैसे ऐंठना आदि अनीति पूर्ण मार्ग ही शेष रह जाते हैं । जो चतुरता पूर्वक छिपी रहने वाली चालाकी नहीं कर सकते उन्हें जोखिम भरे और फूहड़ कहे जाने वाले चोरी, डकैती, लूट, कत्ल, ठगी, बेईमानी, विश्वासघात, शोषण, अपहरण के ऐसे तरीके अपनाने पड़ते हैं जो बदनामी और राज दंड भी साथ लिए रहते हैं ।

अपने समाज में अपराध बुरी तरह बढ़ रहे हैं । चोरी–बेईमानी की प्रवृत्ति हर क्षेत्र में पनप रही है, उसका एक बहुत बड़ा कारण विवाह शादियों में होने वाला अंधाधुंध अपव्यय भी है । जो वैसा करना नहीं चाहते उन्हें भी ऐसे पाप मजबूर होकर करने पड़ते हैं, अन्यथा शादियों का खर्चा जुटे कैसे ? अपने समाज की नैतिकता ईमानदारी इस घातक कुरीति के कारण बुरी तरह नष्ट हो चली है ।

यदि यह सही है कि विवाह शादियों का वर्तमान खर्चीला स्वरूप अनुपयुक्त है तो यह विवेकशील देशभक्त का कर्त्तव्य है कि उस अवांछनीयता को हटाने के लिए कुछ साहस प्रदर्शित करे । जिसके कारण अपने समाज का नैतिक और आर्थिक स्तर दिन–दिन चकनाचूर होता जा रहा है । आरंभ हमें अपने घर से करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए । अपने बच्चों की शादियाँ बिना खर्च ही करेंगे । 'न तो दहेज लेंगे और न देंगे' के सिद्धांत पर दोनों पक्षों का सामंजस्य दूर हो सकता है । जब मिटने होंगे तो दहेज और जेबर एक साथ मिटेंगे । एक पक्षीय सुधार संभव नहीं । समय आ गया है कि हम चेतें और सादगी के वातावरण में मितव्ययता वाले सज्जनता और विवेकशीलता के आधार पर विवाह आयोजनों की योजना बनाएँ ।

क्या करें ? कैसे करें ?

१–आंदोलन में छात्र–छात्राओं को शामिल करें । प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर विद्यालय में यह विचारधारा तेज़ी से फैले और अविवाहित नव युवक–युवतियाँ प्रभावित होकर विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन में सम्मिलित हों । अपना निज का विवाह आदर्श रीति से ही करने के लिए कटिबद्ध हों, फिर भले ही उसके लिए उसे घर वालों का कितना ही विरोध क्यों न करना पड़े ? हर घर में ऐसे प्रह्लाद पैदा किए जाने चाहिए जो साहस पूर्वक अपने अभिवावकों को भी सन्मार्ग पर चलाने का सत्याग्रह कर सकने का साहस प्रदर्शित कर सकें । छात्राएँ संकल्प लें कि वे विवाहोन्माद से ग्रसित पागलों के साथ विवाह करने या उनके घर जाने की अपेक्षा अविवाहित रहना श्रेयस्कर मानें तो यह उनकी आदर्शवादिता एवं गर्व गौरव भरी प्रतिज्ञा ही होगी ।

२–प्रतिज्ञा आंदोलन–यह आंदोलन छात्रों तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए वरन् हर नर नारी तक उसकी पुकार पहुँचाई जानी चाहिए । इसके लिए घर–घर अलख जगाया जाना चाहिए । एक क्रांतिकारी आंदोलन दहेज विरोधी अभियान के रूप में संगठित प्रयास के साथ आरंभ किया गया है । सर्व विदित है कि दहेज, जेवर और धूम–धाम वाली शादियाँ अपने समाज की आर्थिक कमर तोड़कर रख दे रही हैं । जो कमाया जाता है शादियों के कुचक्र में बर्बाद होता रहता है । सुयोग्य कन्याओं का बिना विवाह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रह जाना, उत्पीड़न सहना और आग में जलाया जाना जैसे अनाचार इस विवाहोन्माद की ही देन हैं । संगठित प्रज्ञामंडलों को मिल जुल कर दहेज विरोधी आंदोलन खड़ा करना चाहिए । इस हेतु एक प्रतिज्ञा आंदोलन चलाया जाना है । अभिभावक प्रतिज्ञा करें कि वे अपने पुत्रों का विवाह बिना दहेज जेवर के नितान्त सादगी के साथ ही करेंगे ।

३–खर्चीली शादियों का बहिष्कार–विरोध का एक आसान तरीका यह है कि धूम धाम वाली शादियों में सम्मिलित होने का बहिष्कार किया जाए । भले ही वे अपने कुटुम्बियों, संबंधियों के यहाँ ही क्यों न हो रही हों । यह विरोध भी चर्चा का विषय बनेगा और आगे चलकर अनेकों को नए सिरे से सोचने के लिए विवश करेगा ।

४–उप जातियों की कट्टरता कम हो–इस संदर्भ में एक बात और भी सोची जा सकती है कि उप जातियों की कट्टरता को कम किया जाए और एक बड़ी जाति के अंतर्गत शादियाँ करने की छूट पंचायत स्तर पर घोषित की जाए । यह पहला कदम आगे चलकर अपना दायरा और भी विस्तृत करेगा । अभी तो उप जातियों का बंधन ही इतना बड़ा अवरोध बना हुआ है कि उस कारण योग्य लड़की–लड़कों का जोड़ा मिलना ही कठिन हो रहा है । उप जातियों की छोटी परिधि भी लड़कों की दहेज की बोली बढ़ाने का एक बहुत बड़ा कारण है ।

५–स्वयं सेवी संस्थाओं का दायित्व–संस्थाएँ अपने कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग यदि विवाहोन्माद के निराकरण को मान लें और अपनी गतिविधियों में इस प्रक्रिया को भी जोड़ लें और देश में बिखरे हुए अनेक धार्मिक सामाजिक संगठन थोड़ा–थोड़ा भी प्रयत्न करें तो सब मिलकर बहुत काम हो सकता है ।

६–प्रगतिशील जातीय संगठनों का दायित्व–जातीय पंचायतें फैसले करें । प्रस्ताव पास करें कि उनके वर्ग में विवाहों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खर्चीली प्रथा बंद की जाएगी और अगणित मूढ़ताओं भरे रीति–रिवाजों का बहिष्कार कर अति सादगी और मितव्ययता पूर्वक विवाह शादी किए जाया करेंगे । हर वर्ग अपनी संकीर्णता को घटाएँ और विशालता को बढ़ाए तो उसे उप जातियों को मिला कर एक बड़ी जाति मात्र रहने देने की उपयोगिता हर दृष्टि से विवेकपूर्ण एवं हितकर दिखाई देगी । जातीय पंचायतें यदि यह सुधारात्मक कार्य हाथ में लें और पूरा करने में जुट पड़ें तो वे अपने अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध कर सकती हैं अन्यथा संकीर्णता एवं विभेद की खाई चौड़ी करने वाली विडंबनाओं में ही उनकी गणना होती रहेगी ।

७–प्रेस का दायित्व–देश में अनेक पत्र–पत्रिकाएँ निकलती हैं और उसमें से सभी सुधारवाद, विवेक एवं औचित्य का समर्थन करती हैं । अच्छा हो सभी एक न्यूनतम संयुक्त कार्यक्रम बनाकर उसमें विवाहोन्माद के प्रतिरोध एवं आदर्श विवाहों की परिपाटी चलाने को प्राथमिकता देने लगें । सभी पत्र इस संदर्भ में लोक मत जाग्रत करें और प्रचलित रूढ़िवादिता को हटाने के लिए एक व्यवस्थित आंदोलन खड़ा कर दें । मूढ़ता की हानियाँ और दूरदर्शिता की आवश्यकता को यदि कहानी, कविता, समाचार, लेख आदि माध्यमों से प्रस्तुत करना आरंभ कर दें तो इस दिशा में लोकमत जगाया जा सकता है । लेखक, कवि एवं प्रकाशक ऐसे साहित्य का सृजन एवं प्रसारण कर सकते हैं, जो विवाह व्यवसाय के रोमांचकारी दुष्परिणामों से अवगत कराएँ ।

८–धर्मतंत्र का दायित्व–धर्मतंत्र के माध्यमों से मंदिरों, आश्रमों, पंडित पुरोहितों एवं धर्म संप्रदायों के केंद्र यदि इस प्रकार की प्रतिष्ठा को ही धर्म की सच्ची सेवा मान लें और इस संदर्भ में अपने प्रभाव का उपयोग करें तो भी बहुत कुछ सत्परिणाम की आशा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकती है । इस प्रकार के आदर्श उपस्थित करने वालों का सार्वजनिक अभिनंदन तथा पत्र–पत्रिकाओं में सराहना छापने से भी विचारशील लोगों को प्रभावित किया जा सकता है । दुराग्रहियों की निंदा एवं भर्त्सना का कुछ क्रम चलता रहे, उन पर धिक्कार पड़ती रहे और आलोचना होती रहे तो भी इस गलित कुष्ठ जैसी महामारी के निवारण का बहुत कुछ प्रबंध हो सकता है ।

९–खर्चीली शादियों एवं दहेज के विरोध में जनमत तैयार करने हेतु युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित विवाहोन्माद प्रतिरोध आन्दोलन सैट की पॉकेट बुक्स, झोला पुस्तकालय, ज्ञान मंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन–जन को स्वाध्याय हेतु उपलब्ध कराई जाए ताकि जनमत स्वयं आदर्श–विवाहों के समर्थन हेतु तैयार हो सके । समस्या का स्थाई हल तब ही होगा, जब जन मानस इसे हृदय से स्वीकार करे ।

१०–युवक–युवती सम्मेलन–प्रगतिशील जातीय संगठनों को समय–समय पर विवाह योग्य युवकों एवं युवतियों के सम्मेलन कराने चाहिए ताकि संबंध मिलने में आसानी हो । आयोजकों एवं अन्य सम्मानित व्यक्तियों को भी इसमें अपने परिवार के बच्चों सहित भाग लेना चाहिए ।

११–सामूहिक विवाह आयोजन–विवाहों में होने वाली फिजूल खर्ची को रोकने का एक सशक्त माध्यम सामूहिक विवाह है । सम्मानित व्यक्तियों को ऐसे आयोजनों में अपने बच्चों की शादियाँ कराकर आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए ताकि अन्य समाज के व्यक्ति भी उनका अनुकरण करें । उपाय अनेक हैं, रास्ते बहुत हैं । आवश्यकता उन पर चलने के लिए प्रयास करने की और ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने की है जिनका अनुकरण करने के लिए सर्व साधारण का उत्साह जगाया जा सके । इस दिशा में युग निर्माण योजना के प्रबुद्ध परिजनों को आगे बढ़कर नेतृत्व करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए और समय की माँग को पूरा करने के लिए जो भी प्रयत्न संभव हो उसे कार्यान्वित करने के लिए आगे आना चाहिए ।

युग निर्माण योजना के परिजन इस पुनीत प्रक्रिया को अपने घर–परिवार से आरंभ करके उसे समाज व्यापी, देश व्यापी बना सकते हैं । पहल लड़के वालों को करनी चाहिए । यों हर घर में कन्याएँ भी विवाह के लिए होती हैं और लड़के भी, पर जिनके लड़के विवाह योग्य हो गए हैं, पहल उन्हीं के हाथ में है । वे यदि अपने सुयोग्य लड़कों का विवाह बिना दहेज करने को तैयार हों, तो लड़की वाले उसका सहज ही स्वागत करेंगे और जिनकी आर्थिक स्थिति दुर्बल है वे इस सुविधा के लिए अपना भाग्य सराहेंगे, उस उदार व्यक्ति के कृतज्ञ रहेंगे तथा ईश्वर को धन्यवाद देंगे ।

जहाँ आदर्श रीति से विवाह हों उनका अधिकाधिक प्रचार किया जाए और ऐसे आदर्शवादियों का सार्वजनिक अभिनंदन पूरे उत्साह के साथ किया जाए । जो भी अन्य तरीके सूझ पड़ें उन्हें सोचा जाना चाहिए और अपने–अपने ढंग से सर्वत्र विवाहोन्माद विरोधी आंदोलन को पनपाने

के लिए भूमिका तैयार करनी चाहिए । युग की यह माँग और पुकार आज की घड़ी में अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है ! उसे पूरा करने के लिए हम में से हर एक को पूरी तत्परता और निष्ठा के साथ प्रयत्न करना चाहिए । विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन आज के हिंदू समाज की सबसे बड़ी और सबसे प्रमुख आवश्यकता है जिसकी पूर्ति के लिए हमें अगले दिनों बहुत कुछ करना होगा । हमारा यह प्रयत्न निश्चित रूप से सफल होगा । अगले दिनों हवा बदलेगी और आज की खर्चीली वैवाहिक कुरीतियाँ अगली पीढ़ी वालों के लिए एक कौतूहल की बात रह जाएगी ।

मुद्रक–युग निर्माण प्रेस, मथुरा–३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org